Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَّاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۴ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۵

(जुमा : 4-5)

(अनुवाद) : और उन्ही में से अन्य लोगों की ओर भी (उसे अवतरित किया है) जो अभी उनसे नहीं मिले हैं। वह सर्वशक्तिमान (और) सर्व-बुद्धिमान है। यह अल्लाह की उदारता है, वह जिसे चाहता है उसे प्रदान करता है, और अल्लाह बड़ा दयालु है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 9
अंक-11-12

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

3-10 शाबान 1445 हिज्री कमरी, 14-21 अमान 1403 हिज्री शम्सी, 14-21 मार्च 2024 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

बुज़ुर्गों की नज़र में हज़रत ईमाम महदी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का स्थान और गरिमा

ईमाम महदी का अंतरमन हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का अंतरमन होगा

हज़रत ईमाम अब्दुल् रज़्ज़ाक शाफ़ी रहमहुल्लाह फ़रमाते हैं :

"ईमाम महदी जो अंतिम युग में आएंगे वह शरियत के नियमों में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अधीन होगा, और ज्ञान में वास्तव में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सिवाए समस्त अंबिया और ओलिया उनके अधीन होंगे ... क्योंकि ईमाम महदी का अंतरमन हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का अंतरमन होगा।

(शरह फ़सूस अल् हकम मत्बा मुस्तफ़ा अल्बाबी अल् हजली, पृष्ठ 42, 43)

ईमाम महदी व मसीह मौऊद में सय्यदुल मुर्सेलीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अनवार का प्रतिबिंब होगा

हज़रत शाह वली उल्लाह मोहद्दिस देहलवी रहमहुल्लाह फ़रमाते हैं :

"उम्मत-ए-मुहम्मदिया में आने वाले मसीह मौउद का यह अधिकार है कि उस में सैय्यदुल मुर्सेलीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अनवार का प्रतिबिंब हो। आम लोग यह सोचते हैं कि जब वह मौउद दुनिया में आएंगे, तो उनकी स्थिति सिर्फ एक उम्मती की होगी, यह कदापि नहीं, बल्कि वह तो मोहम्मद के नाम की पूरी व्याख्या होगा और उसीका दूसरा संस्करण होगा। अतः उसके और एक ईमाम उम्मती के बीच बहुत बड़ा अंतर है"।

(अल् खेरुल कसीर अज़ हज़रत शाह वली मोहददिस देहलवी, पृष्ठ 72, मदीना प्रेस बिजनोर)

ईमाम महदी व मसीह मौऊद का समस्त अंबिया से संबंध

हज़रत ईमाम बाकिर रहमहुल्लाह फ़रमाते हैं :

"जब ईमाम महदी आएगा तो यह एलान करेंगे कि हे लोगों! यदि तुम में से कोई इब्राहीम अलैहिस्सलाम और इस्माईल अलैहिस्सलाम को देखना चाहता है तो सुन ले कि मैं ही इब्राहीम अलैहिस्सलाम और इस्माईल अलैहिस्सलाम हूं। और यदि तुम में से कोई मूसा अलैहिस्सलाम और ईसा अलैहिस्सलाम को देखना चाहे, तो सुन ले कि मैं ही मूसा अलैहिस्सलाम और ईसा अलैहिस्सलाम हूं, और यदि तुम में से कोई ईसा अलैहिस्सलाम और मशऊन को देखना चाहता है तो सुन ले कि ईसा अलैहिस्सलाम और मशऊन मैं ही हूँ। और यदि तुम में से कोई मुहम्मद मुस्तफा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और अमीरुल मोमिनीन (अली रज़ियल्लाहु अन्हो) को देखना चाहता है, तो सुन ले कि मुहम्मद मुस्तफा (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) और अमीरुल मौमेनीन मैं ही हूँ।

(बिहारुल अन्वार, भाग नंबर 53, बाब मा यकूनू इंदा ज़हूरोहू अलैहिस्सलाम)

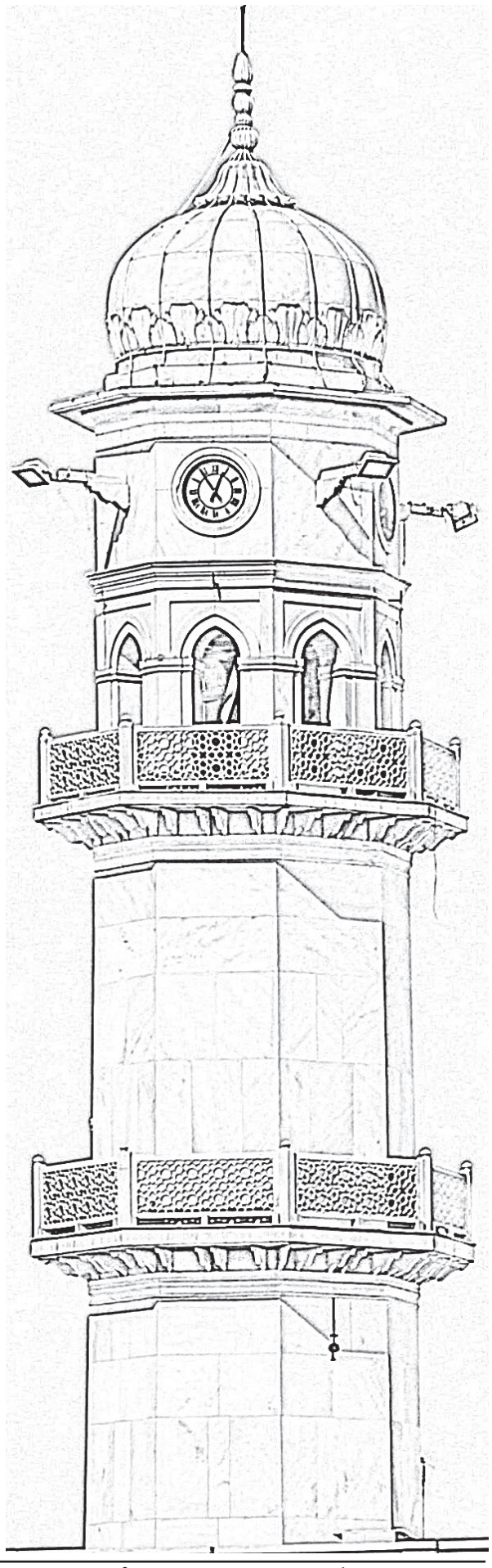

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - **निगरान बदर बोर्ड क़ादियान**

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का महान स्थान और गरिमा

क़ुरआन-ए-मजीद, अहादीस, और पवित्र पुस्तकों की भविष्यवाणियों के अनुसार अल्लाह तआला ने सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को चौधवीं सदी के आरंभ में जो कि इंतेहाई अंधकार और कुफ़्र-ओ-ज़लालत का युग था ईमाम मह्दी और मसीह मौऊद बना कर अवतरित फ़रमाया। आपका महान मिशन क़ुरआन-ए-मजीद इन शब्दों में वर्णन करता है :

لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ (सूरः अल् सफ़) अर्थात दुनिया के समस्त धर्मों पर इस्लाम को ग़ालिब करना और आँहज़रत आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने स्वयं महान मिशन इन अल्फ़ाज़ में वर्णन फ़रमाया :

لَوْ كَانَ الْاِيْمَانُ عِنْدَ الثُّرَيَّا لَنَالَهٗ رَجُلٌ اَوْ رِجَالٌ مِنْ هٰؤُلَاءِ

अर्थात ईमान यदि ज़मीन से उठ कर सुरय्या सितारे पर भी चला गया हो तो ईमाम मह्दी पुनः उसे ज़मीन पर क़ायम कर देगा। उपर की आयत और हदीस हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के महान मन्सब और मुक़ाम पर दलालत करती है। एक इन्सान के ख़्यालात को तबदील करना भी एक मुश्किल काम है या यह कि पूरी दुनिया के ख़्यालात बदल दिए जाएं। लेकिन इस्लाम का ख़ुदा जब किसी काम का इरादा कर लेता है तो वह हो कर रहता है। उसके लिए कोई भी काम मुश्किल नहीं। जिस ने इस्लाम को एक थोड़े समय में पूरी दुनिया में फैला दिया था, वह आज भी ताक़त रखता है कि दुनिया के ख़्यालात को तुरंत बदल दे। वह चाहे तो पूरी कायनात में, कायनात के चप्पे चप्पे में तौहीद की हवा चला दे। वह चाहे तो तौहीद की इस तार को छेड़ दे जो हर दिल में और हर फ़ित्रत में दबी हुई है और अपनी मुहब्बत, ख़ालिक़ व मालिक की मुहब्बत में बनीनौ इन्सान को ऐसा गिरफ़्तार कर दे कि वे दीवाना-वार भाग कर उसके आस्ताना पर गिरने लगीं। इस्लाम के ख़ुदा में, हाँ सिर्फ और सिर्फ इस्लाम के ख़ुदा में यह ताक़त है وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ।

और इसके लिए अर्थात पूरी दुनिया में इस्लाम के ग़लबा की मिशन की तकमील के लिए अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद मह्दी माहूद अलैहिस्सलाम को अवतरित फ़रमाया। आप अलैहिस्सलाम ने उस का बीज बो दिया, यह पौधा अब बढ़ रहा है, फल फूल रहा है और दुनिया के दो सौ से अधिक देशों में इस की शाख़ें फैल गई हैं अल्हम्दो लिल्लाह। आप अलैहिस्सलाम की आमद और आप अलैहिस्सलाम पर ईमान लाना किस क़दर ज़रूरी है इस ताल्लुक़ में चंद आदेश आप अलैहिस्सलाम के निम्न में प्रस्तुत हैं। सय्यदना हज़रत ईमाम मह्दी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

ऐसे समय में मैं ज़ाहिर हुआ हूँ कि जब कि इस्लामी अक़ीदे इख़्तेलाफ़ात से भर गए थे। और कोई अक़ीदा इख़्तेलाफ़ से ख़ाली नहीं था मेरे लिए ज़रूरी नहीं था कि मैं अपनी हक़्क़ीत की कोई और दलील पेश करूँ क्योंकि ज़रूरत ख़ुद दलील है।

(ज़रूतुल् ईमाम, रूहानी ख़ज़ायन भाग 13 पृष्ठ 495)

आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया :

ख़ुदा-ए-तआला ने इस ज़माना को अंधकार में पा कर और दुनिया को ग़फ़लत और कुफ़्र और शिर्क में डूबी देखकर ईमान और सिदक़ और तक़्वा और रास्त बाज़ी को नष्ट होते हुए देख करके मुझे भेजा है ताकि वह दुबारा दुनिया में इलमी और अमली और अख़लाक़ी और ईमानी सच्चाई को क़ायम करे।

(आईना कमालात-ए-इस्लाम, रूहानी ख़ज़ायन भाग 5 पृष्ठ 251)

फ़रमाया मैं समस्त उन लोगों के लिए भेजा गया हूँ जो ज़मीन पर रहते हैं चाहे वे एशिया के रहने वाले हैं और चाहे योरप के और चाहे अमरीका के।

(तिरयाकुल क़ुलूब, रूहानी ख़ज़ायन भाग 15 पृष्ठ 515)

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं अगर तुम ईमानदार हो तो शुक्र करो और शुक्र के सजदात बजा लाओ कि वह ज़माना जिसका इंतेज़ार करते करते तुम्हारे बुज़ुर्ग पूर्वज गुज़र गए और बेशुमार रूहें उसके शौक़ में ही सफ़र कर गईं वह वक़्त तुमने पा लिया। अब उसकी क़दर करना या न करना और इस से फ़ायदा उठाना या न उठाना तुम्हारे हाथ में है। मैं उसको बार-बार वर्णन करूँगा और इसके इज़हार से मैं रुक नहीं सकता कि मैं वही हूँ जो वक़्त पर इस्लाह ख़लक़ के लिए भेजा गया ता दीन को ताज़ा तौर पर दिलों में क़ायम कर दिया जाए।

(फ़तह इस्लाम, रूहानी ख़ज़ायन भाग 3 पृष्ठ 8)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का यह इरशाद हमें दावत-ए-फ़िक्र देता है कि हमने जो मसीह मौऊद का ज़माना पाया, हम इस महान मिशन और महान सिलसिला की तरक़्क़ी और इशाअत के लिए भरपूर कोशिश कर रहे हैं या नहीं? या सिर्फ चंदों में कुछ रुपय देकर अपने आपकी समस्त ज़िम्मेदारियों से अलग समझते हैं। सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के महान मुक़ाम-ओ-मर्तबा के मुताल्लिक़ निम्न में कुछ बाते प्रस्तुत हैं :

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

क्रम	विषय सूची	पृष्ठ
1	बुज़ुर्गों की नज़र में हज़रत ईमाम महदी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का स्थान और गरिमा	1
2	सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का महान स्थान और प्रतिष्ठा	2
3	ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 02 फ़रवरी 2024 ई.	3
4	ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 09 फ़रवरी 2024 ई.	9
5	हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जीवनी क़ुरआन की प्रतिष्ठा की रोशनी में	15
6	जमात अहमदिया का रोशन मुस्तक़बिल हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और खुल्फ़ा-ए-कराम के उपदेशों की रोशनी में	20

सूरः जुमा में وَاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ के शब्दों में जो हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पुनः आने की भविष्यवाणी की गई है वह दरअसल मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हैं। अर्थात आप की बेअसत बरूज़ी और ज़िल्ली तौर पर मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की आमद है। आप अलैहिस्सलाम का आना मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का आना है :

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं "मैं इस आयत के कारण وَاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ...बरूज़ी तौर पर वही नबी ख़ातमन अम्बिया हूँ, और ख़ुदा ने आज से बीस वर्ष पहले बराहीन-ए-अहमदिया में मेरा नाम मुहम्मद और अहमद रखा है और मुझे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का ही वजूद क़रार दिया है।"

(एक ग़लती का इज़ाला, रूहानी ख़ज़ायन भाग : 18)

अतः जिसके वजूद को अल्लाह तआला ने ज़िल्ली और बरूज़ी तौर पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का वजूद क़रार दिया निसन्देह उसका मुक़ाम-ओ-मर्तबा बहुत ही महान् होगा। यहां पर हम निहायत संक्षिप्त रूप में निवेदन कर दें कि सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी लेखनी में बार-बार इस बात का इज़हार फ़र्मा दिया है कि आप अलैहिस्सलाम का जो भी स्थान और गरिमा है आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पूर्ण अनुसरण और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से कमाल-ए-इश्क़-ओ-मुहब्बत के कारण से है। आप अलैहिस्सलाम का अपना कुछ भी नहीं जो कुछ भी है आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का है। आप अलैहिस्सलाम किसी भी रंग आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से बढ़ कर या बराबरी का कोई दावा नहीं, मौलवियों के ऐसे नापाक आरोपों से हमारा दिल ख़ून ख़ून होता है। यदि आप अलैहिस्सलाम को दावा है तो बस यही कि :

जान-ओ-दिलम फ़िदाए जमाल-ए-मुहम्मद अस्त
ख़ाकम निसार कूचा-ए-आले मुहम्मद असत

यहां यह वज़ाहत भी ज़रूरी है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का ज़िल और बरूज़ होना क़ुरआन-ए-करीम ने वर्णन फ़रमाया है और क़ुरआन-ए-करीम की रोशनी में बुज़ुर्गान-ए-उम्मत ने भी इस पर काफ़ी रोशनी डाली है। अतः यह कोई मन-घड़त बात नहीं। क़ुरआन-ए-करीम में अल्लाह तआला ने सूरः जुमा में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की एक दूसरी बेसत का भी वर्णन फ़रमाया है। अतः आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की यह दूसरी बेसत ईमाम मह्दी-ओ-मसीह मौऊद के वजूद में ज़िल्ली और बरूज़ी रंग में होना निश्चित थी। अब हम इस सिलसिला में बुज़ुर्गान-ए-उम्त के कुछ कथन प्रस्तुत करते हैं :

हज़रत ईमाम अब्दुल रज़्ज़ाक शाफ़ी रहमहुल्लाह फ़रमाते हैं :

"ईमाम महदी जो अंतिम युग में आएंगे वह शरियत के नियमों में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अधीन होगा, और ज्ञान में वास्तव में आप

शेष पृष्ठ 24 पर

ख़ुत्बः जुमअः

अब जबकि एक खुदा के सम्मान का प्रश्न पैदा हुआ और शिर्क का नारा मैदान में मारा गया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की रूह बे-ताब हो गई और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने निहायत जोश से सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो की तरफ़ देख कर फ़रमाया तुम लोग उत्तर क्यों नहीं देते? सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! हम क्या कहें? फ़रमाया कहो اَللّٰہُ اَعْلٰی وَاَجَلّ۔ اَللّٰہُ اَعْلٰی तुम झूठ बोलते हो कि हुबल की शान बुलंद हुई। यह झूठ है तुम्हारा। اللہ وَحْدَہٗ لَاشَرِیْک सम्मानित है और उसकी शान बुलंद है وَاَجَلّ۔

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अली मुझ से है और मैं अली से हूँ। तो जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने कहा कि मैं आप दोनों से हूँ

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सिर उठा कर लोगों को देखते तो हज़रत अबू तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हो कहते। بِأَبِیْ أَنْتَ وَأُمِّیْ یَارَسُوْلَ اللّٰہِ لَا یُصِیْبُكَ سَهْمٌ نَحْرِیْ دُوْنَ نَحْرِكَ। मेरे माँ बाप आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर क़ुर्बान, सिर उठा कर न देखें ऐसा न हो कि उन लोगों के तीरों में से कोई तीर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को लगे। मेरा सीना आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सीने के सामने है।

हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा। اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ کُلُّ مُصِیْبَةٍ بَعْدَہٗ جَلَلٌ। कि समस्त प्रशंसा अल्लाह तआला ही की हैं। हर मुसीबत आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद छोटी है।

उहद की जंग के बाद किसी शख़्स ने तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हो से पूछा कि जब तीर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के हाथ पर गिरते थे तो क्या आपको दर्द नहीं होता था और क्या आपके मुँह से उफ़ नहीं निकलती थी? तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हो ने उत्तर दिया। दर्द भी होती थी और उफ़ भी निकलना चाहती थी लेकिन मैं उफ़ करता नहीं था ताकि ऐसा न हो कि उफ़ करते वक़्त मेरा हाथ हिल जाए और तीर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुख पर आ गिरे।

साद रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि मैं ने जो तीर भी चलाया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसके साथ यह फ़रमाते हे अल्लाह इस के निशाने को दरुस्त कर दे और इस की दुआ को क़बूल कर ले। यहाँ तक कि जब मैं अपने तरकश के तीर चला कर फ़ारिग़ हुआ तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने तरकश के तीर फैला दिए।

ग़ज़व-ए-उहद में हज़रत अबू दुजाना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिफ़ाज़त में आप की ढाल बने हुए थे। इसलिए वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने आपकी तरफ़ मुँह करके खड़े हो गए। जो तीर भी आता वह हज़रत अबू दुजाना रज़ियल्लाहु अन्हो की कमर पर लगता। वह झुके हुए खड़े थे और समस्त तीर अपनी कमर पर ले रहे थे। यहां तक कि उनकी कमर में बेशुमार तीर गढ़ गए।

जंग-ए-उहद में सहाबा कराम रिज़वानुल्लाह अलैहिम अजमईन की जांनिसार क़ुर्बानियों का वर्णन

फ़लस्तीन के उमूमी हालात तथा यमन और पाकिस्तान के अहमदियों के लिए दुआओं की तहरीक

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 02 फ़रवरी 2024 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

जंग-ए-उहद के वाक़ियात में सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो की क़ुर्बानियों और उनके इश्क़-ए-रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मिसालें मैं ने दी थीं। उनमें हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो की बहादुरी के वाक़ियात का भी वर्णन मिलता है। इसलिए हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो के बारे में रिवायत में आता है कि ग़ज़व-ए-उहद के अवसर पर जब इब्न-ए-कमिया ने हज़रत मसअब बिन उमेर रज़ियल्लाहु अन्हो को शहीद किया तो उसने यह गुमान किया कि उसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को शहीद कर दिया है। इसलिए वह क़ुरैश की तरफ़ लौटा और कहने लगा कि मैं ने मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़तल कर दिया है। जब हज़रत मसअब रज़ियल्लाहु अन्हो शहीद हुए तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने झंडा हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो के सपुर्द किया। इसलिए हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो और बाक़ी मुस्लमानों ने लड़ाई की।

(अल् सीरतुल नब्विया लेइब्ने हशाशाम पृष्ठ 529 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने एक के बाद एक कुफ़्फ़ार के झण्डा उठाने वालों को तलवार के नीचे किया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अैहि वसल्लम ने कुफ़्फ़ार की एक जमाअत देखकर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो को उन पर हमला करने का इरशाद फ़रमाया। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने अम्र बिन अब्दुल्लाह हजमी को क़तल कर दिया और उन्हें मुंतशिर कर दिया। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कुफ़्फ़ार के दूसरे दस्ते पर हमला करने का हुक्म दिया। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने शीबा बिन मालिक को हलाक किया तो हज़रत जिब्राईल ने कहा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम निसन्देह यह हमदर्दी के लायक़ है अर्थात हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो के बारे में यह कहा तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हाँ अली मुझ से है और मैं अली से हूँ। तो जिब्राईल ने कहा कि मैं आप दोनों में से हूँ।

(तारीख़ अल् तिबरी भाग 2 पृष्ठ 65 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

इस बात को शीया हज़रात बढ़ोतरी करके बहुत ज़्यादा बढ़ा चढ़ा भी लेते हैं।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि ग़ज़व-ए-उहद में जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास से लोग हट गए तो मैं ने शुहदा की लाशों में देखना शुरू किया तो उनमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को न पाया। तब मैं ने कहा ख़ुदा की क़सम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम न भागने वाले

थे और न ही मैं ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को शुहदा में पाया है लेकिन अल्लाह हमसे नाराज़ हुआ और उसने अपने नबी को उठा लिया है। अतः अब मेरे लिए भलाई यही है कि मैं लड़ूँ यहां तक कि क़तल कर दिया जाऊं। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि फिर मैं ने अपनी तलवार की मियान तोड़ डाली और कुफ़्फ़ार पर हमला किया। वे इधर उधर बिखर गए तो क्या देखता हूँ कि रसूलुल्लाह सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम उनके मध्य हैं।

(उसोदुल् ग़ाबा भाग 4 पृष्ठ 94 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

सईद बिन मुसय्यब रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि ग़ज़्व-ए-उहद में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो को सोला घाव लगे थे।

(उसोदुल् ग़ाबा भाग 4 पृष्ठ 93 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस मज़मून को वर्णन फ़रमाते हुए कि कठिनाइयों के नीचे बरकतों के ख़ज़ाने गुप्त होते हैं, यह वर्णन फ़रमाया कि "हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने उहद से वापस आकर हज़रत फ़ातमह रज़ियल्लाहु अन्हा को अपनी तलवार दी और कहा उसको धो दो। आज इस तलवार ने बड़ा काम किया है ।रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो की यह बात सुन रहे थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : अली रज़िय-ल्लाहु अन्हो तुम्हारी ही तलवार ने काम नहीं किया। और भी बहुत से तुम्हारे भाई हैं जिनकी तलवारों ने जोहर दिखाए हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने छः सात सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो के नाम लेते हुए फ़रमाया। उनकी तलवारें तुम्हारी तलवार से कम तो नहीं थीं।"

(मसायब के नीचे बरकतों के ख़ज़ाने मख़्फ़ी होते हैं। (अनवारुल उलूम भाग 19 पृष्ठ 59)

हज़रत अबू तल्हा अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हो के बारे में इस हवाले से वर्णन मिलता है कि हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि जब उहद की जंग हुई तो लोग शिकस्त खा कर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से जुदा हो गए और

हज़रत अबू तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को अपनी ढाल से आड़ में खड़े रहे।

और हज़रत अबू तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हो ऐसे तीर-अंदाज़ थे कि इतनी ज़ोर से कमान खींचा करते थे। उन्होंने उस दिन दो या तीन कमानें तोड़ी। अर्थात इतनी ज़ोर से खींचते थे कि कमान टूट जाती थी और उस वक़्त सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो में से जो कोई आदमी तीरों का तरकश अपने साथ लिए गुज़रता था तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस से फ़रमाते कि अबू तल्हा के लिए तीर फेंक दो। अर्थात यह अच्छे तीर-अंदाज़ हैं। अपने तीर भी उन्हें दे दो। यह उस वक़्त आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने खड़े थे। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हो कहते थे कि :

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सिर उठा कर लोगों को देखते तो हज़रत अबू तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हो कहते। بِأَبِي أَنْتَ وَأُمِّي يَارَسُوْلَ اللهِ، لَا يُصِيبُكَ سَهْمٌ، نَحْرِي دُوْنَ نَحْرِكَ. मेरे माँ बाप आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर क़ुर्बान, सिर उठा कर न देखें कहीं ऐसा न हो उन लोगों के तीरों में से कोई तीर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को लगे। मेरा सीना आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सीने के सामने है।

बुख़ारी में से यह हवाला अख़्ज़ किया गया है।

(उद्धृत सही अल् बुख़ारी किताब अल्मग़ाज़ी बाब همت طائفتان منكم... हदीस : 4064)

(उद्धृत अल् तब्कातुल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 384-385 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि हज़रत अबू तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हो एक ही ढाल से नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिफ़ाज़त करते थे और हज़रत अबू तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हो अच्छे तीर-अंदाज़ थे। जब वह तीर चलाते तो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम झाँकते और उनके तीर पड़ने की जगह को देखते।

(सही अल् बुख़ारी किताबुल् जिहाद बाब المجن ومن يترس بترس صاحبه हदीस 2902)

ग़ज़्व-ए-उहद में हज़रत अबू तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हो के इस शेअर के पढ़ने का भी वर्णन है कि :

وَجْهِي لِوَجْهِكَ الْوِقَاءُ
وَنَفْسِي لِنَفْسِكَ الْفِدَاءُ

मेरा चेहरा आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के चेहरे को बचाने के लिए है और मेरी जान आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की जान पर है।

(मस्नद अहमद बिन हम्बल भाग 4 पृष्ठ 665 मस्नद हदीस 13781 आलेमुल कुतुब बेरूत 1998 ई.)

हज़रत अबू तल्हा अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हो के बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने यह लिखा है कि "अबू तल्हा अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हो ने तीर चलाते चलाते तीन कमानें तोडी और दुश्मन के तीरों के मुक़ाबिल पर सीना सामने रख कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बदन को अपनी ढाल से छुपाया।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहि-बज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो एम.ए पृष्ठ 495)

फिर हज़रत तल्हा बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो का वर्णन मिलता है। वह (हज़रत अबू तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हो) अंसारी थे। यह क़ुरैश में से थे। जंग-ए-उहद के दिन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बचाते हुए यह तीर अपने हाथों पर लेते थे। हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हो उहद के दिन हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वस-ल्लम के साथ शरीक हुए। वह उन लोगों में से थे जो उस रोज़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ साबित-क़दम रहे और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से मौत पर बैअत की। मालिक बन ज़ुहेर ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तीर मारा तो हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हो ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहिव स - ल्लम के चेहरे को अपने हाथ से बचाया। तीर उन की छोटी उंगली पर लगा जिससे वह बेकार हो गई। जिस वक़्त उन्हें पहला तीर लगा तो तकलीफ़ से सी की आवाज़ निकली। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अगर वह बिसमि-ल्लाह कहते तो इस तरह जन्नत में दाख़िल होते कि लोग उन्हें देख रहे होते।

(अल् तब्कातुल कुबरा लेइब्ने साद भाग 3 पृष्ठ 162-163 तल्हा बिन उबैदुल्लाह क़ुरैशी दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1990 ई.)

इसी वाक़िया की तफ़सील सीरत हल्बिया में एक रिवायत में इस तरह भी है क़ैस बिन अबू हाज़िम कहते हैं कि मैं ने उहद के दिन हज़रत तल्हा बिन अब्दुल्लाह रज़िय-ल्लाहु अन्हो के हाथ का हाल देखा जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तीरों से बचाते हुए छल्ली हो गया था। एक कथन है कि इस में नेज़ा लगा था और इस से इतना ख़ून बहा कि कमज़ोरी से बेहोश हो गए। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उन पर पानी के छींटे डाले यहां तक कि उनको होश आया। होश आने पर उन्होंने फ़ौरन पूछा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का क्या हाल है? हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनसे कहा कि वह ख़ैरियत से हैं और उन्होंने ही मुझे आपकी तरफ़ भेजा है।

हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ كُلُّ مُصِيبَةٍ بَعْدَهُ جَلَلٌ कि समस्त प्रशंसा अल्लाह तआला ही की हैं। हर मुसीबत आप सल्लल्लाहो अलैहि वस-ल्लम के बाद छोटी है।

(सीरतुल हल्बिया भाग 2 पृष्ठ 324 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

आयशा और उम्मे इसहाक़ जो हज़रत तल्हा की बेटियां थीं। इन दोनों ने वर्णन किया कि उहद के दिन हमारे वालिद को चौबीस घाव लगे जिनमें से एक चौकोर घाव सिर में था और पांव की रग कट गई थी। उंगली टूट गई थी और बाक़ी घाव जिस्म पर थे। इन पर बेहोशी का ग़लबा था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने के दो दाँत टूट गए थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का चेहरा भी घायल था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर भी बेहोशी का ग़लबा था। हज़रत तल्हा रज़ि-यल्लाहु अन्हो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को उठा कर अपनी पीठ पर इस तरह उल्टे क़दमों पीछे हटे कि जब कभी मुशरेकीन में से कोई मिलता तो वह उस से लड़ते यहां तक कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को घाटी में ले गए और सहारे से बिठा दिया।

(अल् तब्कातुल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 163 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

ग़ज़्व-ए-उहद और जाँबाज़ और वफ़ादार सहाबियों रज़ियल्लाहु अन्हो का वर्णन

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु इस तरह वर्णन करते हैं कि ग़ज़्व-ए-उहद के दिन जब ख़ालिद बिन वलीद ने मुस्लमानों पर अचानक हमला किया और मुस्लमा-नों में इंतिशार फैल गया तो "चंद सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो दौड़ कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के गर्द जमा हो गए जिनकी संख्या ज़्यादा से ज़्यादा तीस थी। कुफ़्फ़ार ने शिद्दत के साथ इस मुक़ाम पर हमला किया जहां रसूले करीम सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम खड़े थे। एक के बाद एक सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हिफ़ाज़त करते हुए मारे जाने लगे। इलावा शमशीर ज़नों के तीर-अंदाज़ ऊंचे टीलों पर खड़े हो कर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वस-ल्लम की तरफ़ बे-तहाशा तीर मारते थे।' यह देखते हुए कि दुश्मन उस वक़्त बे-तहा-शा तीर मारते थे "उस वक़्त तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हो ने जो क़ुरैश में से थे और मक्का के मुहाजेरीन में शामिल थे, ये देखते हुए कि दुश्मन सब के सब तीर रसूलुल्लाह

सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुँह की तरफ़ फेंक रहा है अपना हाथ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुँह के आगे खड़ा कर दिया। तीर के बाद तीर जो निशाना पर गिरता था वह तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हो के हाथ पर गिरता था परंतु जाँबाज़ और वफ़ादार सहाबी अपने हाथ को कोई हरकत नहीं देता था। इस तरह तीर पड़ते गए और तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु का हाथ ज़ख़्मों की शिद्दत की वजह से बिल्कुल बेकार हो गया और सिर्फ एक ही हाथ उनका बाक़ी रह गया।

साल-हा-साल बाद इस्लाम की चौथी ख़िलाफ़त के ज़माना में जब मुस्लमानों में ख़ाना-जंगी वाक़्य हुई तो किसी दुश्मन ने ताना के तौर पर तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हो को कहा। टुंडा। हाथ हाथ तुम्हारा काम नहीं कर रहा। "इस पर एक दूसरे सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा। हाँ टुंडा ही है परंतु कैसा मुबारक टुंडा है। तुम्हें मालूम है तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हो का यह हाथ रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुँह की हिफ़ाज़त में टुंडा हुआ था। उहद की जंग के बाद किसी शख़्स ने तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हो से पूछा कि जब तीर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के हाथ पर गिरते थे तो क्या आपको दर्द नहीं होती थी और क्या आपके मुँह से उफ़ नहीं निकलती थी? तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हो ने उत्तर दिया। दर्द भी होती थी और उफ़ भी निकलना चाहती थी लेकिन मैं उफ़ करता नहीं था ता ऐसा न हो कि उफ़ करते वक़्त मेरा हाथ हिल जाए और तीर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुँह पर आ गिरे।"

(दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन, अनवारुल उलूम भाग 20 पृष्ठ 250)

हज़रत साद बिन अबी वक्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु उन जाँनिसारों में से एक थे जिन्हों ने बड़ी बहादुरी और वफ़ा का प्रदर्शन किया। आयशा बिंत साद ने अपने वालिद से रिवायत किया है। वह फ़रमाते हैं कि जब लोगों ने अर्थात दुश्मनों ने पलट कर हमला किया तो मैं एक तरफ़ हो गया। मैं ने कहा उनको ख़ुद से हटा दूँगा या तो मैं ख़ुद निजात पा जाऊँगा और या मैं शहीद हो जाऊँगा तो अचानक मैं ने एक सुर्ख़ चेहरे वाले शख़्स को देखा। क़रीब था कि मुशरेकीन उन पर ग़ालिब आ जाएं तो उसने अपना हाथ कंकरियों से भर कर उनको मारा तो अचानक मेरे और उस शख़्स के मध्य मक्दाद आ गए तो मैं ने उनसे पूछने का इरादा किया। उसने मुझे कहा साद! यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम थे, तुझे बुला रहे थे। तो मैं खड़ा हुआ और मुझे ऐसा लगा गोया कि मुझे कोई तकलीफ़ नहीं पहुंची। मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मुझे अपने सामने बिठा लिया। मैं तीर चलाने लगा और मैं कहता कि अल्लाह! तेरा तीर है तू उस को अपने दुश्मन को मार दे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कहते हैं अल्लाह तू साद की दुआ क़बूल कर ले। हे अल्लाह साद के निशाने को दरुस्त कर दे। हे साद तुझ पर मेरे माँ और बाप फ़िदा हों। साद कहते हैं अर्थात कि यह वाक़िया वर्णन कर रहे हैं कि इस तरह मैं कर रहा था लेकिन उस वक़्त नज़ारा ऐसा था कि मुझे लगता था कोई फ़रिश्ता हमारे बीच में आ गया है और वह भी साथ लड़ रहा है लेकिन इस वक़्त मुझे किसी ने बताया कि वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम थे। लगता है मुख़्तलिफ़ कशफ़ी हालतें लोगों में थीं या फिर हक़ीक़त थी। लेकिन आख़िर में यह बहरहाल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास थे। इसलिए साद रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि मैं ने जो तीर भी चलाया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसके साथ यह फ़रमाते हे अल्लाह उस के निशाने को दरुस्त कर दे और उस की दुआ को क़बूल कर ले। यहाँ तक कि जब मैं अपने तरकश के तीर चला कर फ़ारिग़ हुआ तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने तरकश के तीर फैला दिए और मुझे एक बग़ैर पैकान और बग़ैर पर के तीर दिया और वह दूसरे तीरों से ज़्यादा तेज़ था

अल्लामा ज़ोहरी रहमहुल्लाह ने लिखा है कि इस दिन साद रज़ियल्लाहु अन्हो ने एक हज़ार तीर चलाए थे।

(सब्लुल हुदा वल् रिशाद भाग 4 पृष्ठ 200-201 दारुल कुतुब इल्मिया)

ग़ज़व-ए-उहद के अवसर पर जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास साबित-क़दम सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो थोड़े रह गए उस वक़्त हज़रत साद बिन अबी वक्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने यूं लिखा है कि साद बिन वक्क़ास को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुद तीर पकड़ाते जाते थे और हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो यह तीर दुश्मन पर बेतहाशा चलाते जाते थे। एक दफ़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो से फ़रमाया तुम पर मेरे माँ बाप क़ुर्बान हों बराबर तीर चलाते जाओ। साद अपनी आख़िरी उम्र तक इन अलफ़ाज़ को निहायत फ़ख़र के साथ वर्णन किया करते थे।

(उद्धृत सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो एम.ए पृष्ठ 495)

एक रिवायत में वर्णन है कि हज़रत साद बिन अबी वक्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जंग-ए-उहद के दिन अपने तरकश से तीर निकाल कर मेरे लिए बिखेर दिए और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तीर चलाओं तुझ पर मेरे माँ बाप फ़िदा हों।

(सही बुख़ारी किताब अल् मग़ाज़ी बाब अज़ اذهمت طائفتان منكم... हदीस 4055)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि मैं ने हज़रत साद बिन अबी वक्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु के इलावा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कभी किसी के लिए अपने माँ बाप फ़िदा करने की दुआ देते नहीं सुना। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो से ग़ज़व-ए-उहद के अवसर पर फ़रमाया था कि मेरे माँ बाप तुम पर फ़िदा हों तीर चलाते जाओ। हे भरपूर ताक़तवर जवान तीर चलाते जाओ।

(जामे तिरमेज़ी किताब अल् मनाकिब बाब ارم فداك ابي وامي हदीस 3753)

लेकिन बुख़ारी में एक और रिवायत भी है कि हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो के इलावा तारीख़ में हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम रज़ियल्लाहु अन्हो का नाम भी मिलता है जिन्हें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि فِدَاكَ اَبِیْ وَاُمِّی अर्थात तुम पर मेरे माँ बाप क़ुर्बान हों)

(सही बुख़ारी किताब फ़ज़ायल न्नबी(सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) बाब मनाक़िब अल् जुबेर बिन अवाम रज़ियल्लाहु अन्हो हदीस : 3720)

इसी तरह हज़रत अबू दुजाना रज़ियल्लाहु अन्हो की क़ुर्बानी का भी वर्णन मिलता है। एक रिवायत में है कि

ग़ज़व-ए-उहद में हज़रत अबू दुजाना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिफ़ाज़त में आपकी ढाल बने हुए थे। इसलिए वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने आपकी तरफ़ मुँह कर के खड़े हो गए। जो तीर भी आता वह हज़रत अबू दुजाना रज़ियल्लाहु अन्हो की कमर पर लगता। वह झुके हुए खड़े थे और समस्त तीर अपनी कमर पर ले रहे थे। यहां तक कि उनकी कमर में बेशुमार तीर पैवस्त गए।

(सीरतुल हल्बिया भाग 2 पृष्ठ 314 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2008 ई.)

हज़रत अबू दुजान रज़ियल्लाहु अन्हो की साबित क़दमी के बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने यूं लिखा है कि "अबू दुजान रज़ियल्लाहु अन्हो ने बड़ी देर तक आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के जिस्म को अपने जिस्म से छुपाए रखा और जो तीर या पत्थर आता था उसे अपने जिस्म पर लेते थे। यहाँ तक कि उनका बदन तीरों से छलनी हो गया परंतु उन्होंने उफ़ तक नहीं की ताकि ऐसा न हो कि उनके बदन में हरकत पैदा होने से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जिस्म का कोई हिस्सा नंगा हो जाए और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को कोई तीर आ लगे।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो एम.ए से पृष्ठ 495)

फिर हज़रत सहल बिन हुनेफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो हैं। यह भी महान सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो में से थे जिन्हों ने उहद के रोज़ साबित क़दमी दिखाई। उस रोज़ उन्होंने मौत पर आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बैअत की थी। आप रज़ियल्लाहु अन्हो उस वक़्त आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आगे ढाल बन कर डटे रहे। जब दुश्मन के शदीद हमले की वजह से मुस्लमान बिखर गए तो उस दिन उन्होंने आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ से तीर चलाए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि सहल को तीर पकड़ाओ क्योंकि तीर चलाना उसके लिए आसान है।

(अल् इस्तेआब भाग 2 पृष्ठ 662-663 दारुल जीलल् बेरूत 1992 ई.)

फिर एक महिला सहाबिया हज़रत उम्मे अम्मारा रज़ियल्लाहु अन्हा का भी वर्णन मिलता है जिन्हों ने जंग-ए-उहद में बहादुरी के जोहर दिखाए और यह बहादुरी के जोहर दिखाने वाली बड़ी बावफ़ा जांनिसार सहाबिया रज़ियल्लाहु अन्हा थीं। उनका पूरा नाम उम्मे अम्मार, अम्मारा माज़ीना था। हज़रत उम्मे अम्मारा रज़ियल्लाहु अन्हा का नाम नुसेबा था नुसेबान उनका असल नाम था। यह हज़रत ज़ैद बिन आसिम रज़ियल्लाहु अन्हो की पत्नी थीं। हज़रत उम्मे अम्मारा रज़ियल्लाहु अन्हा ख़ुद वर्णन करती हैं कि ग़ज़व-ए-उहद के अवसर पर मैं यह देखने के लिए रवाना हुई कि लोग क्या कर रहे हैं। मेरे पास पानी से भरा हुआ एक मशकीज़ा भी था जो मैं ने ज़ख़मियों को पिलाने के लिए साथ ले लिया था यहां तक कि मैं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास पहुंच गई। उस वक़्त आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सहाबा रज़ियल्लाहु

अन्हो के मध्य में थे और इस वक़्त मुस्लमानों का पल्ला भारी था अर्थात जंग का शुरू का हिस्सा था। फिर अचानक सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो अफ़रातफ़री में इधर उधर हो गए। वही जो दर्रा छोड़ने वालों का वाक़िया हुआ और मुशरिकों ने पीछे से हमला किया। कहती हैं कि इधर मुशरिकों ने चारों तरफ़ से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर यलग़ार कर दी। यह सूरत-ए-हाल देखकर में खड़ी हो कर जंग करने लगी। मैं तलवार के माध्यम से दुश्मनों को आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के क़रीब आने से रोक रही थी। साथ ही में कमान से तीर भी चला रही थी यहां तक कि मैं ख़ुद भी घायल हो गई। उनके कंधे पर बहुत गहरा घाव लगा। जब उनसे पूछा गया कि तुम्हें किस ने घायल किया तो उन्होंने कहा इब्ने कय्यमा ने। हज़रत उम्मे अम्मारा रज़ियल्लाहु अन्हा वर्णन करती हैं कि जब अचानक मुस्लमान आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास से तित्र बित्तर हो गए तो वह यह कहता हुआ आगे बढ़ा कि मुझे मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की निशानदेही कर दो क्योंकि अगर आज वह बच गए तो समझो कि में नहीं बचा। अर्थात या तो आज वह रहेंगे और या मैं रहूँगा। वह जब क़रीब आया तो कहती हैं कि मैं ने और मसअब बिन उमेर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उस का रास्ता रोका। उस वक़्त उसने मुझ पर हमला कर दिया। हमला करके यह घाव लगाया। यह जो कंधे का घाव पूछ रहे हो नाँ यह उसने मुझे लगाया था। मैं ने उस पर कई वार किए परंतु वह ख़ुदा का दुश्मन दो ज़िरहें पहने हुए था। कुछ उल्मा ने लिखा है कि ग़ज़व-ए-उहद के अवसर पर नुसयबाबा, उनके पति हज़रत ज़ैद बिन आसिम रज़ियल्लाहु अन्हो और उनके दोनों बेटे ख़ुबेब और अब्दुल्लाह सब के सब जंग के लिए गए थे और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इन सबको फ़रमाया था कि अल्लाह तआला तुम घर वालों पर रहमतें नाज़िल फ़रमाए। एक रिवायत है कि अल्लाह तआला तुम्हारे घराने में बरकत अता फ़रमाए। बहरहाल यह जो दुआ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने की तो हज़रत उम्मे अम्मारा अर्थात नुसयबा ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया कि हमारे लिए अल्लाह तआला से दुआ फ़रमाएं कि हम जन्नत में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ हों। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दुआ करते हुए फ़रमाया अल्लाह! उनको जन्नत में मेरा रफ़ीक़ और साथी बना। इसी वक़्त हज़रत उम्मे अम्मारा रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा कि अब मुझे इस की पर्वा नहीं है कि दुनिया में मुझ पर क्या गुज़रती है। यह दुआ मुझे मिल गई मेरे लिए बहुत है

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके बारे में फ़रमाया कि उहद के दिन मैं दाएं या बाएं जिधर भी देखता था उनको देखता था कि मेरी हिफ़ाज़त के लिए दुश्मन से लड़ रहे हैं। ग़ज़व-ए-उहद में हज़रत उम्मे अम्मारा रज़ियल्लाहु अन्हा को बारह घाव आए जिनमें नेज़ों के घाव भी थे और तलवारों के भी थे।

(सीरतुल हल्बिया भाग 2 पृष्ठ 313-314 दारुल कुतुब इल्मिया 2008 ई.)

हज़रत उम्मे अम्मारा रज़ियल्लाहु अन्हा के बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस तरह लिखा है कि "एक मुस्लमान महिला जिसका नाम उम्मे अम्मारा था तलवार हाथ में लेकर मारती काटती आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास पहुंची। उस वक़्त अब्दुल्लाह बिन कय्यमा आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर वार करने के लिए आगे बढ़ रहा था। मुस्लमान महिला ने झट आगे बढ़कर वह वार अपने ऊपर ले लिया और फिर तलवार तौल कर उस पर अपना वार किया, परंतु वह एक दोहरी ज़िरह पहने हुए मर्द था और यह एक कमज़ोर औरत। इसलिए वार कारी न पड़ा। और इब्न-ए-कय्यमा दर्राता हुआ और मुस्लमानों की सफ़ों को चीरता हुआ आगे आया और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो के रोकते रोकते आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़रीब पहुंच गया और पहुंचते ही इस ज़ोर और बेदर्दी के साथ आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के चेहरा मुबारक पर वार किया कि सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो के दिल दहल गए। जांनिसार तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हो ने लपक कर " वह वार "अपने नंगे हाथ पर लिया परंतु इब्ने कय्यमा की तलवार उनके हाथ को काटती हुई आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पहलू पर पड़ी। घाव तो ख़ुदा के फ़ज़ल से नहीं आया क्योंकि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ऊपर तले दो ज़िरहें पहनी हुई थीं और वार का ज़ोर भी तल्हा की जांनिसारी से कम हो चुका था परंतु इस सदमा से आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम चक्कर खा कर नीचे गिरे और इब्ने कय्यमा ने फिर ख़ुशी का नारा लगाया कि मैं ने मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को मार लिया है। इब्ने कय्यमा तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर वार करके ख़ुशी का नारा लगाता हुआ पीछे हट गया और अपने सोच में यह समझा कि मैं ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मार लिया है परंतु जूंही कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम गिरे हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो और तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़ौरन आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को ऊपर उठा लिया और यह मालूम करके मुस्लमानों के उदास चेहरे ख़ुशी से चमक उठे कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ज़िंदा सलामत हैं। अब आहिस्ता-आहिस्ता लड़ाई का ज़ोर भी कम होना शुरू हो गया क्योंकि एक तो कुफ़्फ़ार इस इतमेनान की वजह से कुछ ढीले पड़ गए थे कि मुहम्मद रसूलुल्लाह शहीद हो चुके हैं और इस लिए उन्होंने लड़ाई की तरफ़ से तवज्जा हटा कर कुछ तो अपने मक़्तूलीन की देख-भाल और कुछ मुस्लमान शहीदों की लाशों की बे-हुरमती करने की तरफ़ फेर ली थी और दूसरी तरफ़ मुस्लमान भी अक्सर मुंतशिर हो चुके थे।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहब एम.ए पृष्ठ 496-497)

जंग में अबूसुफ़ियान के साथ मुकालमे का वर्णन मिलता है और क़ुरैश किस तरह वापस हुए। ग़ज़व-ए-उहद के दिन जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ पहाड़ पर चढ़ गए तो कुफ़्फ़ार भी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पीछे आए। इसलिए सही बुख़ारी में रिवायत है कि अबूसुफ़ियान ने तीन बार पुकार कर कहा : क्या उन लोगों में मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम है? नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो को उसे उत्तर देने से रोक दिया। फिर उसने तीन बार पुकार कर पूछा : क्या लोगों में अबू क़हाफ़ा का बेटा अर्थात अबू बकर है? फिर तीन बार पूछा : क्या उन लोगों में इब्न-ए-खत्ताब अर्थात उमर है? फिर वे अपने साथियों की तरफ़ लौट गया और कहने लगा यह जो थे वह तो मारे गए। यह सुनकर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो अपने आपको क़ाबू में नहीं कर सके और बोले हे अल्लाह के दुश्मन बख़ुदा तुमने झूठ कहा है। जिनका तुमने नाम लिया है वह सब ज़िंदा हैं। जो बात नागवार है इस में से अभी तेरे लिए बहुत कुछ बाक़ी है। यह भी बुख़ारी की रिवायत है।

(सही अल् बुख़ारी। الجهادوالسيرباب مايكره من التنازع والاختلاف فى الحرب)

अबू सुफ़ियान बोला यह मार्का बदर के मार्का का बदला है। लड़ाई तो डोल की तरह है। कभी उसकी फ़तह और कभी उसकी फ़तह। तुम लोगों में से कुछ ऐसे मुर्दे पाओगे जिनके नाक कान काटे गए हैं अर्थात मुसला किया गया है। उसने कहा कि मैं ने इस का हुक्म नहीं दिया लेकिन मैं ने उसे बुरा भी नहीं समझा। फिर उसके बाद वह ये पंक्तियाँ पढ़ने लगा कि اُعْلُ هُبَل۔ اُعْلُ هُبَل۔ हुबल की जय, हुबल की जय। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया क्या अब उसे उत्तर नहीं दोगे? सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हम क्या उत्तर दें? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम कहो اَللّٰهُ اَعْلٰى وَاَجَلُّ अल्लाह ही सबसे बुलंद और बड़ी शान वाला है। फिर अबूसुफ़ियान ने कहा उज़्ज़ा नामी बुत हमारा है और तुम्हारा कोई उज़्ज़ा नहीं। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह सुनकर फ़रमाया कि क्या तुम उसे उत्तर नहीं दोगे? हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हम क्या कहें? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि कहो कि اَللّٰهُ مَوْلَانَا وَلَا مَوْلٰى لَكُمْ कि अल्लाह हमारा सहायक है और तुम्हारा कोई सहायक नहीं।

(सही बुख़ारी الجهادوالسيرباب مايكره من التنازع والاختلاف فى الحرب... हदीस 3039)

इसके बाद अबू सुफ़ियान ने पुकार कर मुस्लमानों से कहा कि अगले वर्ष मैदान-ए--बदर में हम तुमसे फिर मिलेंगे। इस पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो में से एक शख़्स से फ़रमाया। कह दो कि हाँ हमारा तुम्हारा मिलने का वादा रहा।

(सीरतुल हल्बिया भाग 2 पृष्ठ 333 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2008 ई.)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में लिखा है कि "इधर मुस्लमान अपनी मरहम पट्टी में व्यस्त थे तो उधर दूसरी तरफ़ अर्थात नीचे मैदान-ए-जंग में मक्का के क़ुरैश मुस्लमान शहीदों की नाशों की निहायत बेदर्दाना तौर पर बे हुरमती कर रहे थे। मुस्ला की वहशयाना रस्म पूरी वहशत के साथ अदा की गई और मुस्लमान शहीदों की नाशों के साथ मक्का के ख़ूँख़ार दरिंदों ने जो कुछ भी उनके दिल में आया वह किया। क़ुरैश की औरतों ने मुस्लमानों के नाक कान काट कर उनके हार पिरोए और पहने। अबूसुफ़ियान की पत्नी हिंदः हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो का जिगर निकाल कर चबा गई। उद्देश्य बाक़ौल सर विलियम मियोर "मुस्लमानों की नाशों के साथ क़ुरैश ने निहायत वहशयाना सुलूक किया' और मक्का के सरदार देर तक आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नाश मैदान में तलाश करते रहे और इस नज़्ज़ारे के शौक़ में उनकी

आँखें तरस गईं परंतु जो चीज़ कि न पानी थी न पाई।' यह तो हो नहीं सकता था। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तो वहां थे ही नहीं। "इस तलाश से मायूस हो कर अबूसुफ़ियान अपने चंद साथियों को साथ लेकर इस दर्रा की तरफ़ बढ़ा जहां मुस्लमान जमा थे और उस के क़रीब खड़े हो कर पुकार कर बोला। "मुसलमानो क्या तुम में मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम है?' आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कोई उत्तर न दे। इसलिए सब सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ख़ामोश रहे। फिर उसने अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और उमर रज़ियल्लाहु अन्हो का पूछा परंतु इस पर भी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इरशाद के अधीन किसी ने उत्तर नहीं दिया। जिस पर उसने बुलंद आवाज़ से फ़ख़र के लहजा में कहा कि ये सब लोग मारे गए हैं क्योंकि यदि वह ज़िंदा होते तो उत्तर देते। उस वक़्त हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो से न रहा गया और वह बे-इख़्तियार हो कर बोले। हे अल्लाह के दुश्मन! तू झूठ कहता है हम सब ज़िंदा हैं और ख़ुदा हमारे हाथों से तुम्हें ज़लील करेगा। अबू सुफ़ियान ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की आवाज़ पहचान कर कहा "उम्र सच्च सच्च बताओ क्या मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ज़िंदा है? हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा। "हाँ-हाँ ख़ुदा के फ़ज़्ल से वे ज़िंदा हैं और तुम्हारी ये बातें सुन रहे हैं। अबू सुफ़ियान ने किसी क़दर धीमी आवाज़ में कहा। तो फिर इब्ने कय्यमा ने झूठ कहा है क्योंकि मैं तुम्हें इस से ज़्यादा सच्चा समझता हूँ। इसके बाद अबूसुफ़ियान ने निहायत बुलंद आवाज़ से पुकार कर कहा। اُعْلُ هُبَل अर्थात "हे हुबल तेरी बुलंदी हो।" सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इरशाद का ख़्याल करके ख़ामोश रहे' क्योंकि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पहले रोका था नाँ। "परंतु आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जो अपने नाम पर तो ख़ामोश रहने का हुक्म देते थे अब ख़ुदा तआला के मुक़ाबला में बुत का नाम आने पर बेताब हो गए और फ़रमाया "तुम उत्तर क्यों नहीं देते?' सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया "हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम क्या उत्तर दें?" आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कहो اَللّٰهُ اَعْلٰى وَاَجَلّ अर्थात "बुलंदी और बुज़ुर्गी केवल अल्लाह तआला को हासिल है।" अबू-सुफ़ियान ने कहा। لَنَا الْعُزّٰى وَلَا عُزّٰى لَكُم- हमारे साथ उज़्ज़ा है और तुम्हारे साथ उज़्ज़ा नहीं है।' आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो से फ़रमाया कहो اَللّٰهُ مَوْلَانَا وَلَا مَوْلٰى لَكُم। उज़्ज़ा क्या चीज़ है। "हमारे साथ अल्लाह हमारा सहायक है और तुम्हारे साथ कोई सहायक नहीं।' इस के बाद अबू-सुफ़ियान ने कहा। "लड़ाई एक डोल की तरह होती है जो कभी चढ़ता और कभी गिरता है। अतः यह दिन बदर के दिन का बदला समझो और तुम मैदान-ए-जंग में ऐसी लाशें पाओगे जिनके साथ मुसला किया गया है। मैं ने इस का हुक्म नहीं दिया परंतु जब मुझे उसका इलम हुआ तो मुझे अपने आदमियों का यह फ़ेअल कुछ बुरा भी नहीं लगा।" और हमारे और तुम्हारे मध्य अगले वर्ष इन्ही दिनों में बदर के मुक़ाम में फिर जंग का वादा रहा। एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिदायत के अधीन उत्तर दिया कि "बहुत अच्छा। यह वादा रहा।' यह कह कर अबूसुफ़ियान अपने साथियों को लेकर नीचे उतर गया और फिर जल्द ही लश्कर क़ुरैश ने मक्का की राह ली।"

आप रज़ियल्लाहु अन्हो लिखते हैं कि "यह एक अजीब बात है कि बावजूद उसके कि क़ुरैश क़व्वास अवसर पर मुस्लमानों के ख़िलाफ़ ग़लबा हासिल हुआ था और ज़ाहिरी अस्बाब के लिहाज़ से वह अगर चाहते तो अपनी इस फ़तह से फ़ायदा उठा सकते थे और मदीना पर हमला-आवर होने का रास्ता तो बहरहाल उनके लिए खुला था परंतु ख़ुदाई तसर्रुफ़ कुछ ऐसा हुआ कि क़ुरैश के दिल बावजूद इस फ़तह के अंदर ही अंदर मरऊब थे और उन्होंने इसी ग़लबा को ग़नीमत जानते हुए जो उहद के मैदान में इन को हासिल हुआ था मक्का को जल्दी जल्दी लौट जाना ही उचित समझा परंतु बईं-हमा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मज़ीद सावधानी के ख़्याल से फ़ौरन सत्तर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो की एक जमाअत जिसमें हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हो भी शामिल थे तैयार करके लश्कर क़ुरैश के पीछे रवाना कर दी। यह बुख़ारी की रिवायत है। आम इतिहासकार यूं वर्णन करते हैं कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो या कुछ रिवायत की दृष्टि से साद बिन वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हो को क़ुरैश के पीछे भिजवाया और उनसे फ़रमाया कि इस बात क पता लाओ कि लश्कर-ए-क़ुरैश मदीना पर हमला करने की नीयत तो नहीं रखता और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनसे फ़रमाया अगर क़ुरैश ऊंटों पर सवार हों और घोड़ों को ख़ाली चला रहे हों तो समझना कि वह मक्का की तरफ़ वापस जा रहे हैं, मदीना पर हमला आवर होने का इरादा नहीं रखते और अगर वे घोड़ों पर सवार हों तो समझना उनकी नीयत ठीक नहीं और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनको ताकीद फ़रमाई कि अगर क़ुरैश का लश्कर मदीना का रुख करे तो फ़ौरन आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को इत्तिला दी जाए और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बड़े जोश की हालत फ़रमाया कि :

अगर क़ुरैश ने इस वक़्त मदीना पर हमला किया तो ख़ुदा की क़सम हम उनका मुक़ाबला करके उन्हें इस हमला का मज़ा चखा देंगे

इसलिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के भेजे हुए आदमी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इरशाद के अधीन गए और बहुत जल्द यह ख़बर लेकर वापस आगए कि क़ुरैश का लश्कर मक्का की तरफ़ जा रहा है।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो एम.ए पृष्ठ 498 से 500)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के घायल हो कर बेहोश होने और इस के बाद के वाक़िया का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि "थोड़ी देर बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को होश आ गया और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने चारों तरफ़ मैदान में आदमी दौड़ा दिए कि मुस्लमान फिर इकट्ठे हो जाएं। भागा हुआ लश्कर फिर जमा होना शुरू हुआ और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उन्हें लेकर पहाड़ के दामन में चले गए। जब दामन-ए-कोह में बच्चा कुचा लश्कर खड़ा था तो अबूसुफ़ियान ने बड़े ज़ोर से आवाज़ दी और कहा हमने मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को मार दिया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अबूसुफ़ियान की बात का उत्तर नहीं दिया ता ऐसा न हो दुश्मन हक़ीक़त-ए-हाल से वाक़िफ़ हो कर हमला कर दे और घायल मुस्लमान फिर दुबारा दुश्मन के हमला का शिकार हो जाएं। जब इस्लामी लश्कर से इस बात का कोई उत्तर नहीं मिला तो अबू सुफ़ियान को यक़ीन हो गया कि उस का ख़्याल दुरुस्त है और उसने बड़े ज़ोर से आवाज़ देकर कहा हमने अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को भी मार दिया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को भी हुक्म फ़रमाया कि कोई उत्तर न दें। फिर अबू सुफ़ियान ने आवाज़ दी हमने उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को भी मार दिया। तब उमर रज़ियल्लाहु अन्हो जो बहुत जोशीले आदमी थे उन्होंने उसके उत्तर में यह कहना चाहा कि हम लोग ख़ुदा के फ़ज़्ल से ज़िंदा हैं और तुम्हारे मुक़ाबला के लिए तैयार हैं परंतु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मना फ़रमाया कि मुस्लमानों को तकलीफ़ में मत डालो और ख़ामोश रहो। अब कुफ़्फ़ार को यक़ीन हो गया कि इस्लाम के संस्थापक को भी और उनके दाएं बाएं बाज़ू को भी हमने मार दिया है। इस पर अबू सुफ़ियान और उस के साथियों ने ख़ुशी से नारा लगाया يَا اُعْلُ هُبَل ऊलुल् हुब्ल हमारे मुअज़्ज़िज़ बुत हुबल की शान बुलंद हो कि उसने आज इस्लाम का ख़ातमा कर दिया है।" हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि "वही रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जो अपनी मौत के ऐलान पर, अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की मौत के ऐलान पर और उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की मौत के ऐलान पर ख़ामोशी की नसीहत फ़र्मा रहे थे ता ऐसा न हो कि घायल मुस्लमानों पर फिर कुफ़्फ़ार का लश्कर लौट कर हमला कर दे और मुट्ठी भर मुस्लमान उसके हाथों शहीद हो जाएं।

अब जबकि एक वाहिद की इज़्ज़त का प्रश्न पैदा हुआ और शिर्क का नारा मैदान में मारा गया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की रूह बे-ताब हो गई और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने निहायत जोश से सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो की तरफ़ देखकर फ़रमाया तुम लोग उत्तर क्यों नहीं देते? सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! हम क्या कहें? फ़रमाया कहो اَللّٰهُ اَعْلٰى وَاَجَلّ۔ اَللّٰهُ اَعْلٰى وَاَجَلّ तुम झूठ बोलते हो कि हुबल की शान बुलंद हुई।" यह झूठ है तुम्हारा। "اَللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ ही मुअज़्ज़िज़ है और उस की शान बाला है।

और इस तरह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने ज़िंदा होने की ख़बर दुश्मनों तक पहुंचा दी। इस दलेराना और बहादुराना उत्तर का असर

कुफ़्फ़ार के लश्कर पर इतना गहरा पड़ा कि बावजूद उसके कि उनकी उम्मीदें इस उत्तर से ख़ाक में मिल गईं और बावजूद उसके कि उनके सामने मुट्ठी भर घायल मुस्लमान खड़े हुए थे जिन पर हमला करके उनको मार देना माद्दी क़वानीन के लिहाज़ से बिल्कुल असंभव था वह दुबारा हमला करने का साहस नहीं कर सके और जिस क़दर फ़तह उनको नसीब हुई थी उसी की ख़ुशियां मनाते हुए मक्का को वापस चले गए।"

(दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन, अनवारुल उलूम भाग 20 पृष्ठ 252-253)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुख़्तलिफ़ ज़ावियों से इस वाक़िया को मुख़्तलिफ़ जगह वर्णन फ़रमाया है जो इन शा अल्लाह आइन्दा भी वर्णन करूँगा।

इस वक़्त जैसा कि मैं उमूमन दुआ के लिए कहता हूँ।

फ़लस्तीनियों के उमूमी हालात के लिए दुआएं जारी रखें। सुना है कि शायद ग़ज़ा में तो जंग बंदी की कोशिश हो रही है। शायद इज़राइल हुकूमत भी कुछ हद तक मान जाए लेकिन लुबनान की सरहद के साथ जंग भड़कने की संभावना ज़्यादा बढ़ रही है और इस का असर जो है फिर वैस्ट बंक के फ़लस्तीनियों पर भी होगा। मग़रिबी हुकूमतों में इन्साफ़ का कोई नाम-ओ-निशान ही नहीं। अब तो उनके अपने लिखने वाले मज़ीद खुल कर लिखने लग गए हैं कि ज़ुलम की इंतेहा हो रही है। अमरीका के लीडर सिर्फ अपनी मईशत बेहतर करने के लिए इन जंगों को हवा दे रहे हैं और इसी वजह से उनकी आमद बढ़ रही है क्योंकि उनके असलाह के कारख़ाने ज़्यादा पैदावार दे रहे हैं। अब तो उनके अपने तजज़िया निगार भी यही कह रहे हैं कि अमरीका अपनी इकॉनोमी को बेहतर करने के लिए इस जंग को तूल देने की कोशिश कर रहा है और दुनिया में फ़साद फैला रहा है। यह नहीं जानते कि ख़ुदा तआला की पकड़ से ये लोग बच नहीं सकते।

अहमदी बहरहाल अपनी दुआओं और संपर्कों से तबाही से बचने के लिए अपना किरदार अदा करें।

पिछले दिनों यह ख़बर भी थी कि यू उन की मदद करने वाली जो एजैंसी है अमरीका और यू.के इत्यादि ने उन्हें माली मदद देना बंद कर दिया है। इंकार कर दिया है कि उनके ग्यारह या बारह लोग हम्मास के साथ मिले हुए थे उसकी वजह से यह ज़ुलम कि फ़लस्तीनियों की मदद न करो। यह इसलिए है कि उनको मजबूर किया जाए और कुछ भी नहीं। लेकिन हैरत इस बात पर है कि अगर मग़रिबी मुल्कों ने मदद बंद की है तो यह कोई ख़बर नहीं आरही कि तेल की दौलत रखने वाले मुस्लमान देशों ने यह ऐलान क्यों नहीं किया कि हम यह मदद करेंगे क्योंकि यो एन ओ जैसे ने तो ऐलान किया है कि अगर मदद नहीं मिली तो फ़रवरी के बाद हम कोई aid नहीं पहुंचा सकते।

बहरहाल अल्लाह तआला इन मुस्लमान मुल्कों को भी अपना किरदार अदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और दुनिया का फ़साद भी ख़त्म हो।

अब ईरान के साथ भी जंग का ख़तरा बढ़ रहा है। इसी तरह यमन के अहमदियों के लिए भी दुआ करें।

एक हमारे मुख़लिस अहमदी की वहां क़ैद या नज़रबंदी के दौरान इलाज सही न होने की सूरत में वफ़ात भी हुई है। तफ़सीलात तो मुश्किल से ही मिलती हैं। बहरहाल उन लोगों के लिए दुआ करें जो मुश्किलात में गिरफ़्तार हैं। मज़ीद तफ़सीलात मिलने पर इन शा अल्लाह मरहूम का फिर जनाज़ा भी पढ़ाऊंगा।

पाकिस्तान के अहमदियों के लिए भी दुआ करें। अपने सयासी मुफ़ादात के लिए हमेशा अहमदियों को निशाना बनाया जाता है और इसी तरह कुछ शिद्दत-पसंद तन्ज़ीमों से भी जमाअत को ख़तरा है। जमाअत को, अफ़राद-ए-जमात को तो हर जगह दोहरा ख़तरा होता है। एक शहरी होने की हैसियत से और एक अहमदी होने की हैसियत से। रबवाह और बाक़ी शहरों के अहमदियों के लिए दुआ करें। अल्लाह तआला उनको अपनी हिफ़ाज़त में रखे। शरीरों के शर उन पर उलटाए और अल्लाह तआला हर मुल्क में अहमदियों की हिफ़ाज़त फ़रमाए। और यह दुनिया इस हक़ीक़त को पहचान ले कि अल्लाह तआला की तरफ़ रुजू किए बग़ैर उनके लिए कोई रास्ता बाक़ी नहीं है। उनकी बक़ा इसी में है कि अल्लाह को पहचानें और अल्लाह के भेजे हुए को मानें। अल्लाह तआला उनको उस की तौफ़ीक़ दे।

★ ★ ★

सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान में ख़िदमत की इच्छा रखने वाले ध्यान दें

"नज़ारत तालीम" के अंतर्गत शिक्षण संस्थानों में पुरुष शिक्षकों की आवश्यकता है

तालीमुल्-इस्लाम सीनियर सेकेंडरी स्कूल में फ़िज़िकल एजुकेशन और कंप्यूटर टीचर के कुछ पद भरे जाने हैं। इच्छुक उम्मीदवार जिन के पास सेवा की भावना है और अपेक्षित शैक्षणिक योग्यता है, वे नज़ारत दीवान द्वारा प्रकाशित जानकारी फॉर्म भर कर अपना आवेदन जमा करवा सकते हैं। रिक्तियां विवरण एवं शर्तें इस प्रकार हैं।

Computer Teacher :

(1)Qualification : BCA/B.Sc(I.T/C.S/internet Science), B.Tech (I.T/C.S)

(2) अभ्यर्थी उर्दू/अंग्रेज़ी/हिन्दी/पंजाबी कम्पोज़िंग जानता हो। (3) प्रासंगिक विषय में स्नातक (B.C.A/ B.Sc,B.Tech) 55% के साथ, और किसी भी मान्यता प्राप्त संस्थान में 3 वर्षों का अनुभव, स्नातकोत्तर को प्राथमिकता दी जाएगी।

Physical Education Teacher

(1) B.A with Physical Education as an Elective subject / 3 year Graduation Course in Physical Education and B.P.Ed

(2) 4 years Integrated Course of Bachelor of Physical Education from a recognised University

(3) संबंधित विषय में 55% अंक और किसी भी मान्यता प्राप्त संस्थान में 3 वर्षों का अनुभव। पोस्ट ग्रेजुएट को प्राथमिकता दी जाएगी। (4) उम्मीदवार की आयु 20 वर्ष से कम नहीं और 40 वर्ष से अधिक नहीं होनी चाहिए। असाधारण मामलों में आयु सीमा में छूट पर विचार किया जा सकता है। (5) केवल उन्हीं उम्मीदवारों की सलेक्शन पर ध्यान दिया जाएगा जो मरकज़ी कमेटी बराए भर्ती--कारकुनान की ओर से लिए जाने वाले मौखिक और लिखित साक्षात्कार में सफल होंगे और नूर अस्पताल की मेडिकल रिपोर्ट के अनुसार स्वस्थ होंगे। (6) चयन के मामले में, इच्छुक को क़ादियान में अपने आवास की व्यवस्था स्वंय करनी होगी। (7) साक्षात्कार के लिए क़ादियान को बुलाने के मामले में, परिवहन व्यय उम्मीदवार स्वयं उठाएगा। (8) साक्षात्कार की तारीख बाद में अधिसूचित की जाएगी। (9) मुद्रित सूचना फार्म दफ़्तर दीवान या निम्नलिखित पते / ईमेल द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। (10) आवेदन शैक्षणिक योग्यता और अनुभव की प्रामाणिकताएं (Self Attested) की हुई प्रतिलिपि यह घोषणा होने के दो महीनो के अंदर-अंदर नज़ारत दीवान पहुंच जानी चाहिए। (11) जीवन निर्वाह भत्ता एवं अन्य जानकारी के लिए कार्यालय समय में निम्नलिखित ई-मेल एवं फोन नंबरों पर संपर्क किया जा सकता है।

ड्राईवर पद की नियुक्ति के लिए सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान की ओर से घोषणा

(1) अभ्यर्थी की आयु 40 वर्ष से ज़ायद और 18 वर्ष से कम न हो। (2) अभ्यर्थी कम से कम आठवी पास हो। (3) उम्मीदवार के पास कम से कम दस वर्षों का वैध ड्राइविंग लाइसेंस और दस वर्षों का ड्राइविंग अनुभव होना चाहिए। ट्रेंड ड्राइवरों को प्राथमिकता दी जाएगी। (4) अभ्यर्थी चालक को द्वितीय श्रेणी के बराबर भत्ता एवं अन्य सुविधाएं दी जाएंगी। (5) अभ्यर्थी को नूर हस्पताल से मेडिकल जांच क़ुरआन होगी । वही अभ्यर्थी ख़िदमत के योग्य होंगे जो नूर हस्पताल के तिब्बी बोर्ड की रिपोर्ट के मुताबिक़ सेहतमंद और तंदरुस्त होंगे। (7) स्लैक्शन की सूरत में अभ्यर्थी को क़ादियान में अपनी रिहायश का इंतेज़ाम स्वयं करना होगा। (8) क़ादियान आने जाने का सफ़र ख़र्च अभ्यर्थी के अपने ज़िम्मा होंगा।

(नोट : लिखित परीक्षा, ड्राइविंग टेस्ट और इंटरव्यू की तिथि से अभ्यर्थी को बाद में अवगत किया जाएगा।)

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें।

नज़ारत दीवान सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान पिन कोड 143516

मोबाइल : 09682627592, 09682587713,

दफ़्तर01872-501130 E-Mail: diwan@qadian.in

★ ★ ★

ख़ुत्बः जुमअः

जब उस पवित्र व्यक्ति के कानों में आवाज़ पड़ी اُعْلُ هُبَلْ۔ اُعْلُ هُبَلْ, हुबल की शान बुलंद हो, हुबल की शान बुलंद तो उसकी एकेश्वरवाद की भावना ने जोश मारा क्योंकि अब मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का प्रश्न नहीं था अब अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और उमर रज़ियल्लाहु अन्हो का प्रश्न नहीं था। अब अल्लाह तआला की इज़्ज़त का प्रश्न था। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बड़े जोश से फ़रमाया तुम क्यों उत्तर नहीं देते। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! हम क्या उत्तर दें? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कहो अल्लाहु अज़्ज़ा वज्जल्ला। अल्लाहु अज़्ज़ा वज्जल्ला। हुबल क्या चीज़ है ख़ुदा तआला की शान बुलंद है ख़ुदा तआला की शान बुलंद है

हज़रत सईद बिन रबी रज़ियल्लाहु अन्हो ने शहादत से क़बल फ़रमाया मेरे भाई मुस्लमानों को मेरा सलाम पहुंचा देना और मेरी क़ौम और मेरे रिश्तेदारों से कहना कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमारे पास ख़ुदा तआला की एक बेहतरीन अमानत हैं और हम अपनी जानों से इस अमानत की हिफ़ाज़त करते रहे हैं। अब हम जाते हैं और इस अमानत की हिफ़ाज़त तुम्हारे सपुर्द करते हैं। ऐसा न हो कि तुम उसकी हिफ़ाज़त में कमज़ोरी दिखाओ

अल्लाह तआला हमारे अंदर भी इश्क़-ए-रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इस रूह को पैदा फ़रमाए। और जब यह सोच पैदा होगी तो हम अल्लाह तआला से ताल्लुक़ में भी बढ़ेंगे और अपनी कमज़ोरियों को दूर करने की भी हक़ीक़त में कोशिश करेंगे ताकि हम सही इस्लामी रंग अपनी इबादतों में, अपने अख़लाक़ में, अपनी आदात में पैदा करें। अल्लाह तआला हमें इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए

जंग-ए-उहद में सहाबा कराम रिज़वानुल्लाह अलैहिम अजमईन की क़ुर्बानियों और इश्क़-ए-रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमव का ईमान में बढ़ोतरी करने वाला वर्णन

यमन के पहले शहीद अहमदी डाक्टर मंसूर शिबूति साहिब, सलाहुद्दीन मुहम्मद सालेह अब्दुल्क़ादिर साहिब आफ़ कबाबीर और रिहाना फ़र्हत साहिबा आफ़ रब्वाह की विशेषताओं का वर्णन और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 09 फ़रवरी 2024 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

जंग-ए-उहद के हवाले से अबूसुफ़ियान के नारों का वर्णन हो रहा था जिस में वह अपने बुतों की बड़ाई वर्णन कर रहा था और इस पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ख़ुदा तआला के लिए का इज़हार था। जैसा कि मैंने कहा था किस तरह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ग़ैरत का इज़हार फ़रमाया और उन हालात में भी अल्लाह का नाम बुलंद करने का नारा लगवाया। इस विषय में मज़ीद हवाले मैं प्रस्तुत करूँगा। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि "अहादीस में आता है कि ग़ज़व-ए-उहद में जब अबू सुफ़ियान ने बड़े ज़ोर से कहा कि لَنَا عُزّٰى وَلَا عُزّٰى अर्थात हमारी सहायता में हमारा उज़्ज़ा बुत है परंतु तुम्हारी सहायता में कोई बुत नहीं तो उस वक़्त रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वालही वसल्लम ने मुस्लमानों से फ़रमाया कि तुम कहो لَنَا مَوْلٰى وَلَا مَوْلٰى لَكُمْ हमारा साथी और हमारा सहायक हमारा जीवित और सदैव रहने वाला ख़ुदा है परंतु तुम्हारा कोई साथी और सहायक नहीं।' फ़रमाते हैं कि "यह अंता मौलाना की सच्चाई का कैसा अमली सबूत था कि तलवारों के साया में भी उन्होंने यही कहा कि अल्लाह हमें बचा सकता है।"

(तफ़सीर-ए-कबीर भाग 2 पृष्ठ 660 ऐडीशन 2004 ई.)

फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम एक जगह फ़रमाते हैं कि "जब मुस्लमानों के कानों में यह आवाज़ पड़ी कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शहीद हो गए हैं तो वे जल्दी-जल्दी वापस लौटे और उन्होंने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ऊपर से लाशों को हटाया। मालूम हुआ कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अभी ज़िंदा हैं और सांस ले रहे हैं। उस वक़्त सबसे पहले आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के कवच का कील निकाला गया। यह कील निकलता नहीं था आख़िर एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपने दाँतों से निकाला जिसकी वजह से उनके दो दाँत टूट गए। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मुँह पर पानी छिड़का गया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम होश में आ गए। अक्सर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो तो तितर्रबितर हो चुके थे सिर्फ़ चंद सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो का गिरोह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास था। आपने उनसे फ़रमाया हमें अब पहाड़ के दामन में चले जाना चाहिए। इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उनको ले कर एक पहाड़ी के दामन में चले गए और फिर बाक़ी लश्कर भी आहिस्ता-आहिस्ता इकट्ठा होना शुरू हुआ। कुफ़्फ़ार का लश्कर जब वापस जा रहा था तो अबूसुफ़ियान ने बुलंद आवाज़ से रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नाम लिया और कहा हमने उसे मार दिया है। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने उत्तर देना चाहा परंतु आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनको रोक कर फ़रमाया : यह अवसर नहीं। हमारे आदमी तित्र बित्तर हो चुके हैं कुछ मारे गए हैं और कुछ घायल हैं। हम थोड़े से आदमी यहां हैं और फिर थके-माँदे हैं। कुफ़्फ़ार का लश्कर तीन हज़ार का है और वे बिल्कुल सलामत हैं। ऐसी हालत में उत्तर देना उचित नहीं। वे अगर कहते हैं कि उन्होंने मुझे मार दिया है तो कहने दो। इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हिदायत के मुताबिक़ सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ख़ामोश रहे। जब अबूसुफ़ियान को कोई उत्तर नहीं मिला तो उसने कहा हम ने अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को भी मार दिया है। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो को फिर उत्तर देने से रोक दिया और फ़रमाया ख़ामोश रहो। वह कहता है तो कहने दो इसलिए सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो इस पर भी ख़ामोश रहे। अबूसुफ़ियान को जब फिर कोई उत्तर नहीं मिला तो उसने कहा हमने उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को भी मार दिया है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो बड़े तेज़ तबीयत के थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हो बोलने लगे लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमने आप को मना कर दिया। बाद में आपने बताया' हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने बाद में यह कहा "कि मैं कहने लगा था कि तुम कहते हो हमने उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को मार दिया है हालाँकि उमर रज़ियल्लाहु अन्हो अब भी तुम्हारा सिर तोड़ने के लिए मौजूद है। बहरहाल रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनको भी उत्तर देने से मना कर दिया। जब अबूसुफ़ियान ने देखा कि कोई उत्तर नहीं आया तो उसने नारा मारा। اُعْلُ هُبَلْ۔ اُعْلُ هُبَلْ अर्थात हुबल देवता जिसे अबू सुफ़ियान बड़ा समझता था उसकी शान बुलंद हो। हुबल की शान बुलंद हो।

(अर्थात आख़िर हमारे हुबल ने मुहम्मद (सल्लल्लाहो वसल्लम) और इस के साथियों को मार ही दिया। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो को चूँकि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बोलने और उत्तर देने से मना फ़रमाया था इसलिए वह अब भी ख़ामोश रहे परंतु ख़ुदा का वह रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जिसने अपनी मौत की ख़बर सुनकर कहा था ख़ामोश रहो उत्तर मत दो। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की मौत की ख़बर सुन कर कहा था ख़ामोश रहो उत्तर मत दो। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की मौत की ख़बर सुनकर कहा था ख़ामोश रहो उत्तर मत दो और जो बार-बार कहता था कि इस वक़्त हमारा लश्कर बिखरा हुआ है और ख़तरा है कि दुश्मन फिर हमला न कर दे इस लिए ख़ामोशी के साथ उसकी बातें सुनते चले जाओ।

उस मुक़द्दस इंसान सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कानों में जब आवाज़ पड़ी اُعْلُ هُبَلْ۔ اُعْلُ هُبَلْ۔ हुबल की शान बुलंद हो, हुबल की शान बुलंद हो तो उसके एकेश्वरवाद की भावना ने जोश मारा क्योंकि अब मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का प्रश्न नहीं था अब अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और उमर रज़ियल्लाहु अन्हो का प्रश्न नहीं था। अब अल्लाह तआला की इज़्ज़त का प्रश्न था। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बड़े जोश से फ़रमाया तुम क्यों उत्तर नहीं देते। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ क्या हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! हम क्या उत्तर दें? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कहो अल्लाहु अज़्ज़वज्जल्लाह। अल्लाहु अज़्ज़वज्जल्लाह। हुबल क्या चीज़ है ख़ुदा तआला की शान बुलंद है ख़ुदा तआला की शान बुलंद है। यह कितना शानदार मुज़ाहरा आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के एकेश्वरवाद की भावना का है।

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तीन दफ़ा सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो को उत्तर देने से रोका जिससे मालूम होता है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को ख़तरा की एहमियत का पूरा एहसास था। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम जानते थे कि इस्लामी लश्कर तित्र बित्तर हो गया है और बहुत कम लोग आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ हैं। अक्सर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो घायल हो गए हैं और बाक़ी थके हुए हैं। अगर दुश्मन को यह मालूम हो गया कि इस्लामी लश्कर का एक हिस्सा जमा है तो वह कहीं फिर हमला करने की जुर्रत न करे। परंतु इन हालात के बावजूद जब ख़ुदा तआला की इज़्ज़त का प्रश्न आया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ख़ामोश रहना बर्दाश्त नहीं किया और समझा कि दुश्मन को ख़ाह पता लगे या न लगे। ख़ाह वह हमला करे और हमें हलाक कर दे अब हम ख़ामोश नहीं रहेंगे। इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो से फ़रमाया तुम ख़ामोश क्यों हो? उत्तर क्यों नहीं देते कि अल्लाहु अज़्ज़वज्जल्लाह। अल्लाहु अज़्ज़वज्जल्लाह ।" (तफ़सीर-ए-कबीर जल्द 10 पृष्ठ 342 – 341 ऐडीशन 2004 ई.) यह सारा वर्णन आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सूरत कौसर की तफ़सीर में वर्णन फ़रमाया है। इसकी तफ़सील अगर पढ़नी है तो तफ़सीर-ए-कबीर में से पढ़ें। और भी बहुत सारी बातें इलम में इज़ाफ़े के लिए वहां से मिल जाएँगी।

फिर एक जगह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि "मक्का के जिन बड़े सहाबा ने मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मारना चाहा क्या आज दुनिया में इन लोगों का कोई नाम-लेवा है? उहद के स्थान पर अबूसुफ़ियान ने आवाज़ दी थी और कहा था क्या तुम में मुहम्मद (सल्लल्लाहो वसल्लम) है? और जब उस का उत्तर नहीं मिला तो उसने कहा हम ने मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को मार डाला है। फिर उसने आवाज़ दी। क्या तुम में अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो है? और जब उस का भी उत्तर न मिला तो उसने कहा हमने अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को भी मार डाला है। फिर उसने पूछा क्या तुम में उमर रज़ियल्लाहु अन्हो है? जब उस का भी उत्तर न मिला तो उसने कहा हमने उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को भी मार डाला है (बुख़ारी)। किताब अल्-मग़ाज़ी। बाब ग़ज़व-ए-उहुद लेकिन आज जाओ और दुनिया के किनारों पर इस आवाज़ देने वाले के हमनवा कुफ़्फ़ार के सरदार अबु-जहल को बुलाओ और आवाज़ दो कि क्या तुम में अबु-जहल है? तो तुम देखोगे कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के नाम पर तो करोड़ों आवाज़ें बुलंद होना शुरू हो जाएंगी और सारी दुनिया बोल उठेगी कि हाँ मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हम में मौजूद हैं क्योंकि आपकी नुमाइंदगी का शरफ़ हमें हासिल है। लेकिन अबुजहल को बुलाने पर तुम्हें किसी कोने से भी आवाज़ उठती सुनाई नहीं देगी। अबु-जहल की औलाद आज भी दुनिया में मौजूद है परंतु किसी को साहस नहीं कि वह यह कह सके कि मैं अबु-जहल की औलाद में से हूँ। शायद उत्बा् और शीबा की औलाद भी आज दुनिया में मौजूद हो परंतु क्या कोई कहता है कि मैं उत्बा् और शीबा की औलाद हूँ ।"(तफ़सीर-ए-कबीर भाग 2 पृष्ठ 291-290 ऐडीशन 2004ई.)

अतः रसूले पाक सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नाम ही है जो अल्लाह तआला ने बुलंद किया और बुलंद रखा।

फिर इस बारे में हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम वर्णन फ़रमाते हैं कि "नबियों पर जो मसायब आते हैं उनमें भी अल्लाह तआला के हज़ारों इसरार होते हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर बहुत से मसायब आते थे। जंग-ए-उहद में एक रिवायत है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को सत्तर तलवारों के घाव लगे थे और मुस्लमानों की ज़ाहिरी हालत ख़राब देखकर कुफ़्फ़ार को बड़ी ख़ुशी हुई। इसलिए एक काफ़िर ने यह यक़ीन करके कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अस्हाब किबार सब शहीद हो गए होंगे ब-आवाज़-ए-बुलंद पुकार कर कहा कि क्या मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) तुम में है? आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कहा कि ख़ामोश रहो। इस का उत्तर न दो। ख़ामोशी से उसे ख़ुशी हुई कि फ़ौत हो गए होंगे इस वास्ते उत्तर नहीं आया। फिर इसी तरह उसने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के विषय में आवाज़ दिया। तब भी इधर से ख़ामोशी इख़तेयार की। फिर उसने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के विषय में आवाज़ दिया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो से न रहा गया। उन्होंने कहा कम्बख़्त क्या बकता है। सब ज़िंदा हैं। ऐसी तल्ख़ियों का देखना भी ज़रूरी होता है परंतु उनका नतीजा यह होता है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अब उसके बाद कुफ़्फ़ार हम पर चढ़ाई न करेंगे ये ग़ालिबन ग़ज़व-ए-ख़ंदक़ के बाद आपने फ़रमाया था। उहद के बाद फिर ग़ज़व-ए-ख़ंदक़ हुई। यह मल्फ़ूज़ात का क्योंकि हवाला है, हो सकता है लिखने वाले से रह गया हो तो यह ग़ज़वा ख़ंदक़ के बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया था कि अब उस के बाद कुफ़्फ़ार हम पर चढ़ाई नहीं करेंगे "बल्कि हम कुफ़्फ़ार पर चढ़ाई करेंगे। मक्का से निकलने के वक़्त आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर कैसी तल्ख़ी का वक़्त था (मल्फ़ूज़ात भाग 9 पृष्ठ 267-266 ऐडीशन 2022 ई.) लेकिन अब अल्लाह तआला ने हालात बदल दिए हैं।

हज़रत हन्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो की शहादत की घटना

वर्णन होता है। इसी जंग में एक और सहाबी की जाँनिसारी, बहादुरी और नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत में अपनी जान तक क़ुर्बान कर देने का वाक़िया मिलता है। यह वह सहाबी थे कि उनकी पत्नी बताती हैं कि मेरे शौहर को जब पता चला कि नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जंग के लिए रवाना हो गए हैं तो मेरे पति पर ग़ुस्ल-ए-जनाबत फ़र्ज़ था लेकिन नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जाने की ख़बर सुनकर इतनी जल्दी और बे-ताबी से घर से निकले हैं कि ग़ुसल करना भी ज़रूरी नहीं समझा और तलवार लेकर मैदान-ए-जंग की तरफ़ चल पड़े। जंग के दौरान वह एक दफ़ा कुफ़्फ़ार के सिपहसालार अबूसुफ़ियान के सामने पहुंच गए। अबूसुफ़ियान घोड़े पर था। हज़रत हन्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो ने उस के घोड़े पर वार करके उसे घायल कर दिया जिसके नतीजा में घोड़े ने अबू सुफ़ियान को नीचे गिरा दिया। अबू-सुफ़ियान नीचे गिरते ही चिल्लाने लगा। उधर हज़रत हन्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़ौरन तलवार बुलंद करके अबू-सुफ़ियान को ज़बह करने का इरादा किया परंतु उसी वक़्त शद्दाद बिन ओस की उन पर नज़र पड़ी। एक कथन के मुताबिक़ सही नाम शद्दाद बिन ओस है। उद्देश्य शद्दाद ने हज़रत हन्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो को अबूसुफ़ियान पर तलवार बुलंद करते देखा तो उसने जल्दी से हज़रत हन्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो पर तलवार का वार करके उन्हें शहीद कर दिया। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत हन्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो के क़तल पर फ़रमाया कि तुम्हारे साथी अर्थात हंज़ला को फ़रिश्ते ग़ुसल दे रहे हैं। एक रिवायत में है कि

मैं फ़रिश्तों को देख रहा हूँ कि वे आसमान और ज़मीन के दरमयान चांदी के बर्तनों में साफ़-शफ़्फ़ाफ़ पानी लिए हंज़ला को ग़ुसल दे रहे हैं।

हज़रत हन्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो की पत्नी का नाम जमीला था और यह सरदार-ए-मुनाफ़ेक़ीन अब्दुल्लाह बिन उबय्य बिन सलूल की बेटी और हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन अबी बिन सलूल की बहन थीं। हज़रत जमीला रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा वह अर्थात हज़रत हन्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो जनाबत की हालत में ही मैदान-ए-जंग में आ गए थे अर्थात उनको ग़ुसल करने की ज़रूरत थी। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत जमीला रज़ियल्लाहु अन्हा की आवाज़ सुनकर फ़रमाया "इसी लिए फ़रिश्ते उनको ग़ुसल दे रहे थे।" हज़रत हन्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो की हज़रत जमीला रज़ियल्लाहु अन्हा के साथ शादी की यह पहली रात थी जिसकी सुबह को जंग-ए-उहद हुई।

एक रिवायत में है कि हज़रत जमीला रज़ियल्लाहु अन्हा ने वर्णन किया कि जब हंज़ला ने दुश्मन के मुक़ाबले के लिए कूच का ऐलान सुना तो फ़ौरन बग़ैर ग़ुसल किए

निकल खड़े हुए। उसी रात में हज़रत जमीला रज़ियल्लाहु अन्हा ने ख़ाब देखा कि अचानक आसमान में एक दरवाज़ा खुला और उनके शौहर हज़रत हन्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो उस दरवाज़े में दाख़िल हुए। इस के बाद फ़ौरन ही वह दरवाज़ा बंद हो गया। एक रिवायत में है कि हज़रत जमीला रज़ियल्लाहु अन्हा ने अपनी क़ौम की चार औरतों को इस बात का गवाह बनाया था कि हंज़ला मेरे साथ हमबिस्तरी कर चुके हैं। उनको ऐसा इसलिए करना पड़ा कि उनके हमल के सिलसिला में लोगों को शुबहात न पैदा हों। शकूक-ओ-शुबहात भी लोग पैदा करते हैं। बातें भी बनाते हैं। आजकल भी ऐसे लोग हैं जो इल्ज़ाम तराशियाँ करते हैं। बहरहाल हज़रत जमीला रज़ियल्लाहु अन्हा ने ख़ुद इस संदेह को दूर करने के लिए गवाह बना लिए। हज़रत जमीला रज़ियल्लाहु अन्हा ख़ूद कहती हैं कि ऐसा इसलिए किया कि मैंने ख़ाब में देखा था कि आसमान में एक दरवाज़ा खुला जिसमें वह दाख़िल हो गए और दरवाज़ा बंद हो गया। इसलिए मैं समझ गई कि हंज़ला का वक़्त आ चुका है और मैं उनके ज़रीया उस रात हामिला हो गई थी। इस हमल से अब्दुल्लाह बिन हंज़ला पैदा हुए। क़ुरैश ने हज़रत हन्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो को क़तल करने के बाद उनकी लाश का मुस्ला नहीं किया था अर्थात कान नाक आँख नहीं काटे थे क्योंकि उनका बाप अबू आमिर राहिब क़ुरैश के साथ था।

(उद्धारित अल् सीरतुल हल्बिया भाग 2 पृष्ठ 328- 327 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

हज़रत साद बिन रबी रज़ियल्लाहु अन्हो की शहादत का वाक़िया भी है। हज़रत साद बिन रबी रज़ियल्लाहु अन्हो ग़ज़वा बदर और उहद में शामिल हुए और ग़ज़वा उहद में शहीद हुए। ग़ज़वा उहद के दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। मेरे पास साद बिन रबी की ख़बर कौन लाएगा? एक शख़्स ने अर्ज़ किया कि मैं। इसलिए वह मक़्तूलीन में जा कर तलाश करने लगा। हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो ने उस शख़्स को देखकर कहा तुम्हारा क्या हाल है? उसने कहा कि मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भेजा है ताकि मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास तुम्हारी ख़बर लेकर जाऊं।

हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में मेरा सलाम अर्ज़ करना और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ये ख़बर देना कि मुझे नेज़े के बारह घाव आए हैं और मेरे से लड़ने वाले दोज़ख़ में पहुंच गए हैं अर्थात जिसने भी मेरे साथ लड़ाई की उसको मैंने मार दिया। और मेरी क़ौम को यह कहना कि उनके लिए अल्लाह तआला के हुज़ूर कोई बहाना नहीं होगा अगर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शहीद हो जाएं और तुम लोगों में से कोई एक भी ज़िंदह रहा।

वर्णन किया जाता है कि जो शख़्स उनके पास गया था वह हज़रत उबेबन काब रज़ियल्लाहु अन्हो थे। हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत उबेबन काब रज़ियल्लाहु अन्हो से कहा। अपनी क़ौम से कहना कि तुमसे साद बिन रबी कहता है कि अल्लाह से डरो। एक और रिवायत भी है कि और जो वादा तुम लोगों ने उक़बा की रात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से किया था उसको याद करो। अल्लाह की क़सम अल्लाह के हुज़ूर तुम्हारे लिए कोई बहाना नहीं होगा अगर कुफ़्फ़ार तुम्हारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ पहुंच गए और तुम में से कोई एक आँख हरकत कर रही हो अर्थात कोई शख़्स भी ज़िंदा बाक़ी रहे।

अर्थात तुम्हें अपनी जानें अल्लाह तआला के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और उस के दीन के लिए क़ुर्बान कर देनी हैं। यह भावना थी सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो का कि मरते वक़्त भी फ़िक्र थी कि केवल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिफ़ाज़त हमने करनी है। हज़रत उबे बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि मैं अभी वहीं था अर्थात हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो के पास ही था कि हज़रत साद बिन रबी रज़ियल्लाहु अन्हो की वफ़ात हो गई। उस वक़्त वे ज़ख़्मों से चूर थे। मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में वापस हाज़िर हुआ और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को सब बता दिया कि यह गुफ़्तगु हुई थी। यह उन की हालत थी और इस तरह वह शहीद हो गए इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। अल्लाह तआला उस पर रहम फ़रमाए। वह ज़िंदगी में भी और मौत के बाद भी अल्लाह और इस के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ख़ैर-ख़्वाह रहा।

हज़रत साद बिन रबी रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत ख़ारिजा बिन ज़ेद रज़ियल्लाहु अन्हो को एक ही क़ब्र में दफ़न किया गया।

(अल् तब्क़ातुल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 396 दारुल कुतुब बेरूत)

(अल् इस्तेआब भाग 2 पृष्ठ 591-590 दारुल जील बेरूत)

(ओसोदुल गाबा भाग 2 पृष्ठ 433 दारुल कुतुब बेरूत)

हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो की शहादत को वर्णन करते हुए इस वाक़िया को हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस तरह लिखा है कि "आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी मैदान में उतर आए हुए थे और शुहदा की नाशों की देख-भाल शुरू थी। जो नज़ारा उस वक़्त अर्थात जब जंग ख़त्म हो गई "मुस्लमानों के सामने था वह ख़ून के आँसू रुलाने वाला था।" आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम घायल भी थे लेकिन आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फिर भी मैदान में आ गए। शुहदा की नाशों की देख-भाल शुरू हुई। फिर फ़रमाते हैं कि "सत्तर मुस्लमान मिट्टी और खून में लुथड़े हुए मैदान में पड़े थे और अरब की वहशयाना रस्म मुल्ला का भयंकर नज़ारा पेश कर रहे थे।" उनके अंग काटे गए थे उनकी शक्लों को बिगाड़ा गया था। "इन मक़्तूलीन में सिर्फ छः मुहाजिर थे और बाक़ी सब अंसार से संबंध रखते थे। क़ुरैश के मक़्तूलों की संख्या तेईस थी। जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने चचा और रज़ाई भाई हमज़ा बिन अब्दुल मुतलिब रज़ियल्लाहु अन्हो की नाश के पास पहुंचे तो बे-ख़ुद हो कर रह गए क्योंकि ज़ालिम हिंद पत्नी अबूसुफ़ियान ने उनकी नाश को बुरी तरह बिगाड़ा हुआ था। थोड़ी देर तक तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ख़ामोशी से खड़े रहे और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के चेहरा से गम-ओ-गुस्सा के आसार नुमायां थे। एक लम्हा के लिए आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तबीयत इस तरफ़ भी मायल हुई कि मक्का के इन वहशी दरिंदों के साथ जब तक इंही का सा सुलूक नहीं किया जाएगा वह ग़ालिबन होश में नहीं आएँगे।' उनको सबक़ नहीं मिलेगा। "मगर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम इस ख़्याल से रुक गए और सब्र किया बल्कि उसके बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मुस्ला की रस्म को शक्लों को बिगाड़ने वाली जो रस्म थी, अंग काटने वाली रस्म उसको "इस्लाम में हमेशा के लिए मना क़रार दे दिया और फ़रमाया कि दुश्मन ख़ाह कुछ करे तुम इस किस्म के वहशयाना तरीक़ से बहर-ए-हाल बाज़ रहो और नेकी और एहसान का तरीक़ इख़्तेयार करो।" फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम लिखते हैं कि "..क़ुरैश ने दूसरे सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो की नाशों के साथ भी कम-ओ-बेश यही वहशयाना सुलूक किया था। इसलिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फूफीज़ाद भाई अब्दुल्लाह बिन जहश रज़ियल्लाहु अन्हो की नाश को भी बुरी तरह बिगाड़ा गया था। जूँ-जूँ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक नाश से हट कर दूसरी नाश की तरफ़ जाते थे आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के चेहरा पर ग़म कष्ट के निशान अधिक थे।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु पृष्ठ 500)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने इन शुहदा और उनकी क़ुर्बानियों का वर्णन करते हुए साद बिन रबी अनसारी रज़ियल्लाहु अन्हो रईस अंसार के बारे में उनकी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इशक़-ओ-मुहब्बत का वर्णन करते हुए यूं वर्णन फ़रमाया है कि "जंग-ए-उहद का एक वाक़िया है। जंग के बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उबय बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हो को फ़रमाया कि जाओ और ज़ख़मियों को देखो। वह देखते हुए हज़रत साद बिन रबी रज़ियल्लाहु अन्हो के पास पहुंचे जो सख़्त घायल थे और आख़िरी सांस ले रहे थे। उन्होंने उनसे कहा कि अपने करेबियों और रिश्तेदारों को अगर कोई संदेश देना हो तो मुझे देदो। हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो ने मुस्कुराते हुए कहा कि मैं मुंतज़िर ही था कि कोई मुस्लमान इधर आए तो संदेश दूं। तुम मेरे हाथ में हाथ देकर वादा करो कि मेरा पैग़ाम ज़रूर पहुंचाओ गे।" अब इस हालत में भी इतनी होश थी कि कहा मेरे हाथ में हाथ दो। पक्का वादा होने का यह एक तरीक़ है, एक इज़हार है कि मेरा पैग़ाम ज़रूर पहुंचा दोगे। "और इस के बाद उन्होंने जो पैग़ाम दिया था वह यह था कि :

मेरे भाई मुस्लमानों को मेरा सलाम पहुंचा देना और मेरी क़ौम और मेरे रिश्तेदारों से कहना कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमारे पास ख़ुदा तआला की एक बेहतरीन अमानत हैं। और हम अपनी जानों से इस अमानत की हिफ़ाज़त करते रहे हैं। अब हम जाते हैं और इस अमानत की हिफ़ाज़त तुम्हारे सपुर्द करते हैं। ऐसा न हो कि तुम उस की हिफ़ाज़त में कमज़ोरी दिखाओ।"

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि "देखो ऐसे वक़्त जब इन्सान समझता हो कि मैं मर रहा हूँ। क्या-क्या ख़्यालात उस के दिल में आते हैं। वह सोचता है मेरी पत्नी का क्या हाल होगा। मेरे बच्चों को कौन पूछेगा परंतु इस सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हो ने कोई ऐसा पैग़ाम नहीं दिया। सिर्फ यही कहा कि हम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिफ़ाज़त करते हुए इस दुनिया से जाते हैं तुम भी इसी रास्ता से हमारे पीछे आ जाओ। इन लोगों के अंदर यही ईमान की ताक़त थी जिससे उन्होंने दुनिया को ऊपर नीचे कर दिया और क़ैसरो किसरा की सल्तनतों के तख़्ते उलट दिए। केसर-ए-रुम हैरान था कि ये कौन लोग हैं। किसरा ने अपने सिपहसालार को लिखा कि अगर तुम इन अरबों को भी शिकस्त नहीं दे सकते तो फिर वापस आ जाओ और

घर में चूड़ियां पहन कर बैठो।"अर्थात औरतों की तरह फिर घर में बैठो। लड़ाई करने क्यों जाते हो? इस ने अर्थात बादशाह ने अपने जरनैल को यह कहा कि यह गाहें खाने वाले लोग हैं इन को भी तुम नहीं रोक सकते।' हक़ीर घटिया ग़िज़ा खाने वाले लोग हैं। "उसने उत्तर दिया कि यह तो आदमी मालूम ही नहीं होते।' कमांडर ने कहा कि यह तो आदमी नहीं मालूम होते "ये तो कोई बड़ी ताकत हैं। ये तलवारों और नेज़ों के ऊपर से कूदते हुए आते हैं।"

(तफ़सीर-ए-कबीर भाग 7 पृष्ठ 338 -ऐडीशन-2004ई.)

इस वाक़िया को एक और रंग में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस तरह वर्णन किया है कि "उहद की जंग जब ख़त्म हुई तो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक सहाबी को ज़ख़मियों की देख-भाल के लिए रवाना किया। उन्होंने एक अंसारी सहाबी को देखा कि वह सख़्त नाज़ुक हालत में हैं। वह उसके क़रीब गए और उससे कहा कि भाई कोई तुम्हारा पैग़ाम हो तो मुझे बता दो। मैं तुम्हारे अज़ीज़ों और रिश्तेदारों तक पहुंचा दूँगा। उसने कहा कि मैं इसी तलाश में था कि मुझे कोई मदीने वाला मिले और मैं उस के माध्यम से अपने रिश्तेदारों को एक पैग़ाम भिजवाऊँ। अच्छा हुआ कि तुम मुझे मिल गए। लाओ अपना हाथ मेरे हाथ में दो और वादा करो कि मेरा पैग़ाम मेरे ख़ानदान तक पहुंचा दोगे। उन्होंने हाथ में हाथ रखकर इक़रार किया कि मैं तुम्हारा पैग़ाम ज़रूर पहुंचा दूँगा। इस पर इन घायल सहाबी ने कहा :

मेरे अज़ीज़ों और रिश्तेदारों और भाई दोस्तों को जा कर कह देना कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमारी क़ौम का बेहतरीन ख़ज़ाना हैं और यह एक क़ौमी अमानत हैं जो हमारे पास है। मुझे यक़ीन है कि तुम्हारे दिल में भी इस क़ीमती मता की सही क़दर-ओ-क़ीमत का एहसास होगा जबकि मैं भी अपना फ़र्ज़ समझता हूँ कि यह पैग़ाम तुम्हें पहुंचा दूं कि जब तक हम ज़िंदा रहे हमने इस अमानत में ख़ियानत नहीं होने दी और इसकी हिफ़ाज़त में अपना पूरा ज़ोर सिर्फ कर दिया। अब हम मरने लगे हैं और अपने पीछे इस अमानत को छोड़े जा रहे हैं। मैं अपने समस्त बेटों, भाईयों और उनकी औलाद से यह उम्मीद करता हूँ कि वह अपनी जान से भी ज़्यादा इस मुक़द्दस अमानत की हिफ़ाज़त करेंगे और इस में किसी किस्म की कोताही वाक़्य नहीं होने देंगे।

(तफ़सीर-ए-कबीर बहग 10 पृष्ठ 185 ऐडीशन-2004 ई.)

एक और जगह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसको इस तरह वर्णन फ़रमाया है कि "एक अंसारी रईस घायल पड़े थे और उनकी हालत ऐसी थी कि चंद मिनट में ही फ़ौत होने वाले थे। एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हो देखते देखते उनके पास पहुंचे और बैठ गए। हाल दरयाफ़त किया और कहा कोई पैग़ाम अपने पत्नी बच्चों और रिश्तेदारों को देना हो तो दे दो। उन्होंने कहा कि हाँ मैं इसी इंतेज़ार में था कि कोई मुस्लमान मिले तो उसके हाथ पैग़ाम भेजूँ। "आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि "हर शख़्स जानता है कि मौत का वक़्त घर में भी कैसा सख़्त होता है।' इन्सान मर रहा हो चाहे घर में भी हो बड़ा सख़्त वक़्त होता है। "मरने वाले की यही ख़ाहिश होती है कि चंद मिनट भी और मिल जाएं तो पत्नी बच्चों और बहन भाईयों से कोई और बात कर लूं। उनके लिए कोई वसीयत कर जाऊं लेकिन वह सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हो पत्नी बच्चों के पास नहीं थे। घर में नहीं पड़े थे। किसी हस्पताल में नरम बिस्तर पर नहीं लेटे थे बल्कि पथरीली ज़मीन पर पड़े थे परंतु ऐसी हालत में भी उन्होंने यह पैग़ाम नहीं दिया कि मेरी पत्नी को सलाम देना और उसे कहना कि बच्चों की अच्छी तरह परवरिश करे या यह कि मेरी जायदाद इस रंग में तक़सीम हो या अमुक अमुक जगह मेरा माल है वह ले लिया जाए" (रईस थे नाँ) "बल्कि कहा तो यह कहा कि मेरे बच्चों और भाईयों को मेरी तरफ़ से यह संदेश देना कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तुम्हारे पास ख़ुदा तआला की क़ीमती अमानत हैं। मैंने जब तक जान में जान थी उसे क़ुर्बान करके भी इस अमानत की हिफ़ाज़त की और अब अपने अज़ीज़ भाईयों और बच्चों को मेरी आख़िरी वक़्त की यह वसीयत है कि वह भी अपनी जानों के साथ इस अमानत की हिफ़ाज़त करें और यह कह कर दम तोड़ दिया।"

(ख़ुतबात-ए-महमूद भाग 23 पृष्ठ 46 – 45 ख़ुत्बा जुमा वर्णन फ़र्मूदा 30 जनवरी-1942 ई.)

ऐसे ऐसे इश्क़-ए-रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इज़हार हैं कि इन्सान हैरान होता है।

अल्लाह तआला हमारे अंदर भी इशक़ रसूल की इस रूह को पैदा फ़रमाए और जब यह सोच पैदा होगी तो हम अल्लाह तआला से ताल्लुक़ में भी बढ़ेंगे और अपनी कमज़ोरियों को दूर करने की भी हक़ीक़त में कोशिश करेंगे ताकि हम सही इस्लामी रंग अपनी इबादतों में, अपने अख़लाक़ में, अपनी आदात में पैदा करें। अल्लाह तआला हमें उस की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए

अब कुछ मरहूमीन का वर्णन है। उनके जनाज़े में पढ़ाऊंगा। पहला श्रीमान डाक्टर मंसूर शिबूती आफ़ यमन का है। मंसूर शिबूती साहिब यमन में असीराने राहे मौला थे। अहमदियत की वजह से उनको वहां पकड़ा गया और कैद के दौरान ही 26 जनवरी को तरेसठ वर्ष की उम्र में उनकी वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। इस लिहाज़ से क्योंकि यह असीरी में थे और अहमदियत की वजह से उनको असीर किया गया और वहां सही ईलाज भी मयस्सर नहीं आया, कुछ ग़लत सुलूक भी उनसे हुआ होगा। बहरहाल जो भी तफ़सीलात हैं वह कम हैं या ज़्यादा, उनकी वहां असीरी में वफ़ात हुई है इसलिए यह शहीद ही कहलाएँगे और इस लिहाज़ से यह यमन के पहले अहमदी शहीद हैं।

मरहूम ने पीछे रहने वालों में बूढ़ी माता और पत्नी के अतिरिक्त दो बेटे एमन और बिलाल छोड़े हैं। मरहूम के भाई नासिर शिबूती हैं जो यहां लंदन में रहते हैं। यह कहते हैं कि उनकी मय्यत यक्म फरवरी को उनके बेटे के हवाले की गई लेकिन सब अहमदी चूँकि क़ैद में हैं। वहां उन्होंने तक़रीबन समस्त अहमदियों को, मर्दों को पकड़ा हुआ है इसलिए ग़ैर अहमदी अहबाब ने उनका जनाज़ा पढ़ा और तदफ़ीन हुई। फिर नासिर शिबूती साहिब यह कहते हैं कि उनके दादा अब्दुल्लाह मुहम्मद उसमान शिबूती यमन के पहले यमनी अहमदी थे और डाक्टर मंसूर शिबूती के वालिद महमूद अब्दुल्लाह शिबूती यमन के पहले शाहिद मुरब्बी थे। मरहूम की वालिदा शाहरुख नसरीन साहिबा हैं जो सय्यद बशीर अहमद शाह साहिब रब्वाह और फ़र्ख़ ख़ानम साहिबा रब्वाह की बेटी हैं। फ़र्ख़ ख़ानम साहिबा यह जुनूद ख़ानदान की हैं। उनको अपनी वालिदा हलीमा बानो साहिबा और भाई सय्यद हाजी जुनूदुल्लाह साहिब के साथ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस इरशाद पर अमल की तौफ़ीक़ मिली कि जब इमाम महदी आए तो उस की बैअत करो जबकि बर्फ़ के ऊपर से रेंग कर जाना पड़े। इसलिए ये लोग काशग़र से बर्फ़ के पहाड़ों पर चल कर कादियान आए और बैअत की। मंसूर शिबूती साहिब की जो वालिदा थीं वह इस ख़ानदान की फ़र्द थीं। उनकी नानी उनमें शामिल थीं जो बर्फ़ पर चल कर आए।

वाक़िया शहादत के बारे में उनके बेटे बिलाल शिबूती ने लिखा है कि सैक्योरिटी फ़ोर्सिज़ हमारे घर में ज़बरदस्ती घुसीं। पिता साहिब को धक्का दिया। उनके सीने पर बंदूक़ रख दी। फिर मुझे और वालिद साहिब को ले जाने लगे तो वालिद साहिब ने कहा कि मुझे बेशक क़तल कर दो परंतु मेरे बेटे को न ले जाओ। जब ग़ैर अहमदियों में जनाज़ा पढ़ा गया तो उनका एक अहमदी बेटा जिसकी सिर्फ सोला साल की उम्र है, वह शामिल हुआ था। और कोई अहमदी मर्द नहीं था। बहरहाल कहते हैं कि उन्होंने वालिद साहिब से पैसे छीन लिए और उन्होंने कहा कि तुम्हें बाहर से कोई पैसे भेजता है। वालिद साहिब ने कहा मुझे कोई बाहर से पैसे नहीं भेजता। मेरी अपनी मेहनत की कमाई है।

यह ग़लतफ़हमी तो हर जगह उल्मा ने, तथाकथित उल्मा ने ग़ैर अहमदियों में पैदा की हुई है कि नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) हम मग़रिबी ताक़तों से पैसे ले के खाते हैं और उनके इस्लाम के ख़िलाफ़ हमारा एजंडा है हालाँकि हर अहमदी तो ख़ुद माली क़ुर्बानी करके इस्लाम के पैग़ाम को दुनिया में पहुंचा रहा है और इन्सानियत की ख़िदमत कर रहा है। बहरहाल इसकी बाक़ी तफ़सील तो लंबी है।

इसके बाद मैं उनकी पत्नी का वर्णन जो उन्होंने पैग़ाम मुझे भेजा, वर्णन कर देता हूँ। यह कहती हैं कि उन्होंने अर्थात क़ैद करने वालों ने मुझे वह जगह दिखाई जहां मेरे मियां को क़ैद में रखा था। उन्होंने बताया कि मेरे मियां अपने कमरे में अक्सर नमाज़ और नवाफ़िल में रोते थे। उन्होंने मज़ीद बताया कि डाक्टर साहिब को इस वजह से क़ैद किया गया था कि कुछ अहमदियों ने इत्तिला दी थी कि डाक्टर साहिब को बर्तानिया से पैसे आते हैं जिन्हें वह यमन में Milita फ़ोर्सिज़ तैयार करने के लिए ख़र्च करते हैं। यूंही झूठे इल्ज़ाम। परंतु तहक़ीक़ से यह बात ग़लत निकली। हम उन्हें रिहा करने ही वाले थे कि परेशानी की वजह से उनकी सेहत ख़राब हो गई। बहरहाल यह उनका वर्णन है जो उन्होंने उनकी पत्नी को कहा। हो सकता है कि हाईकमान का व्यवहार और हो और निचले जो हैं वह और भी ज़्यादा अपनी मनमानियां करने वाले होते हैं और उनकी सख़्ती की वजह से उनकी सेहत पर असर पड़ा हो।

बहरहाल उनके भाई नासिर शिबूती उनकी सीरत वर्णन करते हुए कहते हैं कि हमारे भाई डाक्टर मंसूर शिबूती बहुत मेहरबान और ख़ैर-ख़्वाह भाई थे। पढ़ाई में बहुत होशयार, पूरे देश के पहले दस विद्यार्थियों में से थे जिन्हें गर्वनमैंट की तरफ़ से इनाम भी दिया गया था। नमाज़ पांचों समय और तहज्जुद के पाबंद, फ़ज्र के बाद बाक़ायदगी से तिलावत क़ुरआन करते, चंदों में बड़े बाक़ायदा थे। रिश्तेदारों से पहले दूसरों का

ईलाज करते और मदद करते। मरीज़ों के साथ हमेशा हंसकर बात करते। ग़रीब मरीज़ों से कोई पैसा न लेते। दवाई भी देते और अगर किसी को हस्पताल दाख़िल करने की ज़रूरत होती तो इस में मदद करते। गरीबों के ऑप्रेशन की सूरत में अपनी तनख़्वाह से ऑप्रेशन की फ़ीस छोड़ देते थे। फिर कहते हैं कि हमारे हमसायों में से जब भी कोई बीमार होता तो वह भाई के पास ईलाज के लिए आता। और जब वह दूसरे शहर सिंह में चले गए तो हम-साए बहुत अफ़्सुर्दा हुए। माता पिता के साथ बहुत हुस्न-ए-सुलूक से पेश आते थे। उन्हें हज भी करवाया।

डाक्टर साहिब की वालिदा शाहरुख नसरीन साहिबा कहती हैं कि जब मैं हामिला थी तो मैंने ख़ाब में देखा कि रब्वाह की एक नेक ख़ातून जिसका नाम ज़ैनब था मेरी वालिदा की गोद में उठा कर कहती हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आ रहे हैं। मैं हुज़ूर अलैहिस्सलाम की तलाश में इधर उधर देखती हूँ लेकिन कोई नज़र नहीं आता। इसके बाद आँख खुल गई। डाक्टर साहिब को बचपन से ही तब्लीग़ का शौक़ था। स्कूल में दीनियात के उस्ताद को अहमदियत की तब्लीग़ किया करते थे। उस्ताद भी बग़ैर किसी मुख़ालेफ़त के उनकी बात सुनते थे।

उनके एक बेटे एमन शिबूती जर्मनी में हैं वह कहते हैं वालिद मरहूम ने कभी भी मुझे न डाँटा न मारा। सिर्फ एक दफ़ा की एक मार याद है। मैं तेराह साल का था और उस वक़्त मैंने बाजमाअत नमाज़ पढ़ने से इंकार कर दिया था। फिर उस पर ज़रा सी मुझे मार पड़ी थी। बाक़ी कभी नहीं। कहते हैं कि वालिद साहिब हमेशा मुझे मुश्किलात में दुआ करने की तलक़ीन किया करते थे। ख़ुद भी अमल करते थे। मैंने उन्हें सज्दों में रोते देखा है। स्कूल में जब था, जब बच्चे थे तो कहते हैं कि हमें फ़ज्र की नमाज़ पर जगाते। बाजमाअत नमाज़ अदा करते। इसके बाद तिलावत करते। पी. एच. डी उन्होंने सर्जरी में की। इस के लिए अरदन गए थे वहां पाँच साल रहे। कहते हैं मैं भी उनके पास वहां गया तो मस्जिद जहां जुमा होता था या जो सैंटर था वह एक घंटा दूर था। हर जुमा ड्राईविग कर के वहां जाया करते थे। अध्यन का बहुत शौक़ था। जमाती कुतुब बकसरत पढ़ते थे। कहते हैं जब अरदन से वापस आए तो बेग काफ़ी वज़नी था तो मैं समझा कि काफ़ी भेट लाए हैं। बच्चों को होता है नाँ शौक़ कि वालदैन अब लाएंगे लेकिन बैग में तहायफ़ तो नहीं थे। तफ़सीर-ए-कबीर का अरबी अनुवाद और कुछ और जमाती कुतुब थीं।

रिश्तेदारों से ख़ाह वे ग़ैर अहमदी हों मिलने जाते। कहते हैं मुझे और मेरी वालिदा को भी साथ ले जाते। जब मैं उनसे पूछता कि ग़ैर अहमदी रिश्तेदारों से मिलना क्यों ज़रूरी है? तो कहते आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सिला रहमी का हुक्म दिया है। अगर रहमी रिश्तेदारों से ताल्लुक़ नहीं रखेंगे तो इस से फिर अल्लाह तआला नाराज़ होगा।

मर्वा शिबूती साहिबा कहती हैं बहुत मुहतरम, साहब-ए-अख़लाक़, नेक, हमेशा मुस्कुराने वाले, प्यार करने वाले, सहयोग करने वाले, शरीफ़, सख़ी, रहीम-ओ-करीम और बहुत ज़हीन थे। हमेशा पढ़ाई में नुमायां रहे और सारे यमन में मशहूर डाक्टर थे। ख़िदमत-ए-ख़लक़ और अहमदियत की ख़िदमत में बहुत नुमायां थे। अहमदियों और ग़ैर अहमदियों सब में महबूब थे और सबको, ग़ैर अहमदियों को भी उनकी वफ़ात पर बड़ा सदमा है।

ग़ैर अज़ जमाअत लोगों के तास्सुरात भी हैं। यमन की डाक्टरज़ यूनीयन ने यह बयान दिया कि हम ग़म और अफ़सोस के साथ यह इत्तिला दी जाती है कि जनरल सर्जरी कन्सलटैंट डाक्टर मंसूर शिबूती वफ़ात पा गए। अमुक दिन को वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। फिर आगे यही मैडीकल कौंसल वाले कहते हैं कि उनकी पुर-असरार वफ़ात से तिब्बी हलक़ों में सख़्त परेशानी और बेचैनी फैली हुई है। अब तक मिलने वाली मालूमात के मुताबिक़ गिरफ़्तारी से क़बल डाक्टर मंसूर की सेहत बहुत अच्छी थी। न उनकी गिरफ़्तारी का सबब बताया गया और न ही दो हफ़्तों तक यह मालूम हो सका कि उन्हें कहाँ ले जाया गया है। वफ़ात से सिर्फ एक दो दिन पहले उन्हें निहायत ख़राब हालत के साथ मंज़र-ए-आम पर लाया गया।

उनके बाअज़ ग़ैर अहमदी दोस्तों ने भी सोशल मीडीया पर लिखा है। एक ग़ैर अज़ जमात डाक्टर ख़ालिद अदीब कहते हैं मैं पहली दफ़ा सिंह हस्पताल के एमरजैंसी वार्ड में काम करने गया तो वहां बहुत से डाक्टरज़ को एक नौजवान डाक्टर के इर्द-गिर्द खड़े देखा। मेरे पूछने पर एक साथी ने बताया कि यह डाक्टर मंसूर शिबूती हैं जो जनरल सर्जरी कन्सलटैंट है और सब डाक्टरों से ज़्यादा अनथक और मुस्तइद सहयोग करने वाले हैं। सब डाक्टर और विद्यार्थी उनके साथ डयूटी देना पसंद करते हैं क्योंकि उनकी बड़ी कोशिश होती है कि सबको ज़्यादा से ज़्यादा मालूमात दें और समझाएँ। न उन्हें माल का लालच है, न ओहदे का, न शौहरत का। मरहूम निहायत ठंडे मिज़ाज वाले, निहायत मुस्तइद, अपनी सेहत का ख़्याल रखने वाले, हमेशा मुस्कुराने वाले और निहायत आला अख़लाक़ के मालिक थे। घमंड और दुनिया की मुहब्बत से कोसों दूर थे।

एक दोस्त ने लिखा कि आपकी वफ़ात यमन के लिए बहुत बड़ा नुक़्सान है। यमन ने एक ऐसा नेक शख़्स खोया है जो निहायत साफ़-दिल था और जिसने अपनी ज़िंदगी मरीज़ों की ख़िदमत में गुज़ार दी।

फिर एक दोस्त ने लिखा कि डाक्टर मंसूर के हाथ में बहुत शिफ़ा थी। बहुत आला अख़लाक़ के मालिक थे। जुनूबी यमन में समस्त अख़बारात ने उनकी वफ़ात की ख़बर मुख़्तलिफ़ शीर्षकों के तहत प्रकाशित की है उदाहरणतः एक ख़बर यह है कि मशहूर तरीन डाक्टर का क़तल। सबसे मशहूर डाक्टर की वफ़ात। सबसे मारूफ़ डाक्टर का अपहरण इत्यादि।

बहरहाल किसी ने यह भी मुझे लिखा कि उनके ज़रीया से यमन में अब अहमदियत का नाम काफ़ी फैला है और अल्लाह तआला करे तब्लीग़ का ज़रीया भी शायद बन जाए। अल्लाह तआला मरहूम से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। दर्जात बुलंद फ़रमाए। उनके लवाहेक़ीन को सब्र और हौसला अता फ़रमाए और हालात बेहतर हों। बाक़ी उस वक़्त जो भी वहां थोड़ी सी छोटी सी जमात है इसके वहां जो असीरान हैं अल्लाह तआला इन असीरान की रिहाई के भी जल्द सामान पैदा फ़रमाए।

दूसरा ज़िक्र श्रीमान सलाहुद्दीन मुहम्मद सालेह अब्दुल्क़ादिर ऊदा साहिब का है जो शरीफ़ ऊदा साहिब अमीर जमात कबाबीर के पिता थे। 31 जनवरी को दिल की तकलीफ़ हुई और हस्पताल में ऑप्रेशन के दौरान ही क़रीबन पचासी साल की उम्र में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। मरहूम मूसी थे। पीछे रहने वालों में पत्नी और तीन बेटे मुहम्मद शरीफ़ ऊदा साहिब, मुनीर ऊदा साहिब और अमीर ऊदा साहिब और एक बेटी मनाल ऊदा हैं। पोते पोतिया हैं। उनके दो पोते अज़ीज़म मसरूर मुनीर ऊदा और बशीरुद्दीन महमूद ऊदा एक जामिआ यू.के में और एक जामिआ कैनेडा में पढ़ रहे हैं।

शरीफ़ ऊदा साहिब लिखते हैं कि मरहूम के दादा अल्हाज सालेह अब्दुल्क़ादिर ऊदा साहिब फ़लस्तीन के प्रथम अहमदियों में से थे जिन्हों ने 1928 ई. में बैअत की। उनके बाद मरहूम के पड़दादा अब्दुल्क़ादिर ऊदा ने भी बैअत कर ली और कुछ अरसा के बाद मरहूम के वालिद मुहम्मद ऊदा ने भी बैअत कर ली। यूं अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मरहूम के वालिद, दादा और पड़दादा भी सभी अहमदी थे। उनकी पैदाइश 1939 ई. में हुई और यह पैदाइशी अहमदी थे। जब मरहूम की उम्र चौदह साल थी उस वक़्त एक दिन सख़्त सर्दी में किसी काम से बाहर निकले और सर्दी के कपड़े सही नहीं पहने हुए थे तो जिस्म फ़रीज़ हो गया। बेहोश हो के गिर गए। काफ़ी देर की तलाश के बाद उनका पता लगा तो ले के आए और हस्पताल में ले के गए। बड़ी मायूसकुन हालत थी तो डाक्टर ने कहा कि अव्वल तो उनका ज़िंदा बचना भी मोजिज़ा होगा और अगर यह बच भी गया तो अब कभी भी उनके औलाद नहीं हो सकेगी। इसलिए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो की ख़िदमत में चौधरी मुहम्मद शरीफ़ साहिब मुरब्बी थे उन्होंने लिखा। इस के बाद अल्लाह तआला के फ़ज़ल से शिफ़ा भी हो गई। शादी भी हो गई और अल्लाह तआला ने औलाद भी दी। तीन बेटे और एक बेटी। मरहूम अपने वालिद की तरह सारी ज़िंदगी मुबल्लग़ीन की ख़िदमत में पेश-पेश थे। इसी तरह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों की दिल-ओ-जान से ख़िदमत करते थे और इसकी गवाही ताज़ियत के लिए आने वाले हर शख़्स ने दी है।

शरीफ़ ऊदा साहिब तो कहते हैं कि मेहमानों को उनकी ज़याफ़त की आदत पड़ गई थी। मेहमान यही चाहते थे कि हम उनके पास जाएं और ज़याफ़त करवाएं। एक पादरी ने मिलने के लिए आना था। उसने कहा कि उनके वालिद साहिब अब यहां हैं? उन्होंने कहा कि अभी वह बाहर गए हुए हैं तो कहते हैं अच्छा में अभी नहीं आऊँगा जब वह आएँगे तब आऊँगा ताकि उनकी ज़याफ़त से लुतफ़ अंदोज़ हो सकूँ। मरहूम मसाकीन और ज़रूरतमंदों का भी ख़्याल रखने वाले थे। उन पर ख़र्च करने वाले थे। ऐसे नौ-मुबाईन जिनके ख़ानदानों ने उनसे क़त-ए-तअल्लुक़ कर लिया था वे कबाबीर आकर आबाद हो गए और उन सबको मरहूम ने एक शफ़ीक़ बाप की तरह रखा। उनकी वफ़ात पर एक औरत ने कहा कि मेरा ख़ावंद अपना अक्सर वक़्त मरहूम के साथ गुज़ारता था और अब वे कहता है कि समझ नहीं आती किस के पास जाऊं। फिर यह शरीफ़ साहिब कहते हैं कि वालिद साहिब अपने अमली नमूने से हमारी तर्बीयत किया करते थे। बजाय समझाने के अपने अमल से दिखाया करते थे कि इस तरह काम करो। वालिद साहिब को मुताला का बहुत शौक़ था। जमाती लिटरेचर में से कोई न कोई किताब उनके अध्यन में रहती थी। इसलिए उनकी मालूमात भी बहुत थीं।

फिर शरीफ़ साहिब कहते हैं कि यह नहीं कि बुढ़ापे में उनको हमारी मदद की ज़रूरत पड़ी हो। उनको हमारी किसी मदद की ज़रूरत नहीं पड़ी बल्कि वह हमारी मदद किया करते थे और इस बात पर वह ख़ुश थे कि उनके बच्चे जमात की ख़िदमत कर

रहे हैं।

उनकी नवासी डाक्टर यासमीन कहती हैं। मैं कुछ सालों से अपने नाना नानी के साथ उनके घर में रहती थी। मैंने देखा कि मेरे नाना मरहूम नमाज़ों और तहज्जुद के पाबंद और अक्सर वक़्त मस्जिद और मर्कज़ जमाअत में गुज़ारते थे। मेहमानों के लिए खाना पकाना उनकी ख़िदमत करना और मर्कज़ जमाअत में मुरम्मत इत्यादि के दीगर काम सरअंजाम देना उनका मामूल था। जमाअती कुतुब का मुताला उनका महबूब मशग़ला था यहाँ तक कि वफ़ात वाले दिन भी उनके बिस्तर पर एक किताब खुली हुई मौजूद थी। कहती हैं कि घर में कुछ मुरम्मत का काम करवाना था तो मेरे मरहूम नाना ने नानी जान से कहा कि हमें उसकी ज़रूरत नहीं है क्योंकि हमने तो अब जल्द फ़ौत हो जाना है इसलिए बेहतर है कि घर की मुरम्मत पर उठने वाली रक़म ज़रूरतमंदों में तक़सीम कर दें। डाक्टरों ने दिल के ऑप्रेशन के वक़्त देखा कि न सिर्फ उनका दिल बहुत कमज़ोर है बल्कि उनकी शरयानें भी तक़रीबन बंद हैं और हैरान थे कि यह उस वक़्त तक कैसे चलते फिरते रहे। बहरहाल यह उनकी दुआ थी कि चलते फिरते ही उनकी मौत आ जाए और ऐसा ही हुआ। आख़िरी दिन तक चलते फिरते रहे किसी के मुहताज नहीं हुए।

शरीफ़ ऊदा साहिब कहते हैं कि वालिद साहिब दूसरों पर दिल खोल कर ख़र्च करने वाले थे। एक रोज़ एक बड़ी उम्र के रिश्तेदार ने मदद का कहा तो वालिद साहिब ने उस वक़्त जो कुछ जेब में था सब कुछ निकाल कर उनको दे दिया। मौलाना फ़ज़्ल-ए-इलाही बशीर साहिब मरहूम जब कबाबीर में मुरब्बी थे, मुबल्लिग थे तो एक-बार उन्होंने मरहूम से कबाबीर की मस्जिद के लिए चंदा मांगा। मरहूम के पास उस वक़्त कहीं से बहुत बड़ी रक़म आई थी। उन्होंने वह सारी रक़म मस्जिद के लिए दे दी। एक ख़ादिम ने लिखा कि उनका हर्निया का ऑप्रेशन हुआ तो उन्हों ने हाल पूछा तो उन्होंने कहा दर्दें बहुत हैं। मैंने कहा आप यहां काम कर रहे हैं, हाल ही में आपने काम किया है? कहते हैं हाँ थोड़ा सा काम किया है। कुछ चीज़ें उठा के इधर उधर रखी हैं और एक दरवाज़ा टूटा हुआ था वह मुरम्मत किया है। तो उन्होंने कहा कि आपका ऑप्रेशन हुआ है इतने भारी काम न किया करें। उन्होंने कहा इस के बग़ैर में रह नहीं सकता कि जमाअत की ख़िदमत भी मेरा काम है।

सैफ़ुद्दीन अबू असब फ़लस्तीन के हैं, लिखते हैं। हमने श्रीमान सलाहुद्दीन ऊदा साहिब में सिवाए ख़ैर और भलाई के कुछ नहीं देखा। अपने कबाबीर में क़ियाम के दौरान उन्हें जमात का बहुत ही मुख़लिस फ़र्द पाया। बहुत मुहब्बत करने वाले और हर किसी की मदद करने वाले थे। अमीर जमात के वालिद होने के बावजूद मेहमान-नवाज़ी की ख़िदमात अंजाम देते थे। कहते हैं मुझे बहुत बाद में पता लगा कि जिस तरह वह ख़िदमत करते थे मुझे कभी ख़्याल नहीं आया कि वह अमीर जमात के वालिद होंगे। इंतेहाई विनम्रता थी। फिर किसी ने मुझे बताया कि यह तो उनके वालिद हैं।

डाक्टर एमन अल्मलाकी कहते हैं नमाज़-ए-फ़ज्र पढ़ते और सीधे लंगर ख़ाने चले जाते और सारा दिन बग़ैर थकावट के रात गए तक काम करते थे। हफ़्ता के सात दिन उनकी यही रूटीन थी। ख़िलाफ़त के आशिक़ और निज़ाम जमात का बहुत एहतिराम करते थे यहां तक कि बेटा अमीर था तो अमीर को भी देखकर खड़े हो जाया करते थे। जमाती ख़िदमत और तब्लीग़ और जमाअती फ़रायज़ की बजा आवरी में ज़िंदगी के आख़िर तक बड़े जोश और जज़्बे से व्यस्त रहे। ऐसे जोश की मिसालें बहुत कम लोगों में नज़र आती हैं। चार ख़लिफ़ा का ज़माना उन्होंने देखा और ख़िलाफ़त के बारे में बड़ी दिलचस्प गुफ़्तगु किया करते थे।

मुहम्मद अलावना साहिब कहते हैं बीस साल पहले बैअत की और इसके बाद जब कबाबीर गया तो बड़े प्यार और इख़लास से मुझे मिले और जमाअत की ख़िदमत करते हुए मैंने उनको देखा। बड़ी उम्र के बावजूद ऐसे इख़लास से काम करते थे जो नौजवानों में भी नज़र नहीं आता। बहुत मेहरबान और हमदरद थे।

नम्र अज्वा साहिबा कहती हैं मेरा ताल्लुक़ ख़लील शहर से है। मैं अपने दो बच्चों के साथ जब यहां आई तो मेरे पास कोई घर नहीं था। मरहूम ने मुझे कहा कि अपनी बच्चियों को हमारे पास छोड़ दो और तुम दारुल ज़याफ़त में रह लिया करो। इसलिए डेढ़ माह तक वह मेरी बच्चियों का ख़्याल रखते रहे और उन्हें खाने पीने की और दीगर सहूलतें मुहय्या करते रहे। कहती हैं वह मेरे लिए एक शफ़ीक़ बाप की तरह थे उनकी वफ़ात से मुझे ऐसा लगता है जैसे मेरे बदन से रूह निकल गई।

शम्सुद्दीन साहिब कबाबीर के मुरब्बी हैं। कहते हैं मस्जिद और मिशन हाऊस की कोई भी पुरानी चीज़ फेंकना पसंद नहीं करते थे बल्कि उन चीज़ों को मुरम्मत करके पुनः नए से प्रयोग के काबिल बनाते थे। और यही बचत का तरीक़ा है जो बाक़ी जगहों पर भी इस्तिमाल होना चाहिए। कई दफ़ा देखा गया है कि मस्जिद में जो लोग मदद मांगने आते थे उनके साथ भी मरहूम मुअज़्ज़िज़ मेहमानों वाला सुलूक करते थे और उनको बिठा कर खाना खिलाते थे।

राना ऊदा जहांगीर साहिबा उनकी पोती हैं, कहती हैं मैंने हमेशा अपने दादा को तहज्जुद के लिए सुबह जल्दी उठते और पंज वक़्त नमाज़ का बाक़ायदगी से इल्तिज़ाम करते हुए देखा है। कहती हैं कि मेरे दादा गरीबों का बहुत ख़्याल रखते थे। लोग कहते थे कि अपने पैसे अपनी ज़ात पर भी ख़र्च किया करें लेकिन उनका उत्तर हमेशा यह होता था कि मैं यह पैसे ज़रूरतमंदों को देना पसंद करता हूँ। ख़ुदा पर उनको कामिल यक़ीन था। ख़िलाफ़त के साथ बे-इंतिहा मुहब्बत थी अल्लाह तआला मरहूम से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। दर्जात बुलंद फ़रमाए और उनकी औलाद को, नसल को सब्र और हौसला अता फ़रमाए। उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और अगला वर्णन रिहाना फ़र्हत साहिबा पत्नी करामतुल्लाह ख़ादिम साहिब मुरब्बी सिलसिला रब्वाह का है। उनकी भी पिछले दिनों 29 जनवरी को वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उनके ख़ानदान में अहमदियत का नफ़ुज़ उनके पड़दादा हज़रत मुंशी जलालुद्दीन साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो आफ़ बुलानी ज़िला गुजरात के ज़रीया हुआ था जिनका नाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ज़मीमा अंजाम-ए-आथम में तीन सौ तेराह सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो की फ़हरिस्त में पहले नंबर पर दर्ज किया है।

पीछे रहने वालों मैं मियां के इलावा एक बेटा और तीन बेटियां शामिल हैं। आपके बेटे एहसानुल्लाह साहिब मुरब्बी सिलसिला आजकल स्पेन में ख़िदमत की तौफ़ीक़ पा रहे हैं। मैदान-ए-अमल में होने की वजह से वालिदा के जनाज़े और तदफ़ीन में शामिल नहीं हो सके। कुछ और भी वजूहात थीं। आपके शौहर करामतुल्लाह ख़ादिम भी वाकिफ-ए-ज़िंदगी मुरब्बी सिलसिला हैं। उनके दामाद आसिफ़ महमूद बट साहिब भी मुरब्बी सिलसिला हैं। तनज़ानिया में ख़िदमत की तौफ़ीक़ पा रहे हैं।

उनके बेटे एहसानुल्लाह साहिब मुरब्बी लिखते हैं कि हमारे लिए हर वक़त दुआओं का साएबान बनाए रखती थीं। पुरसोज़ तहज्जुद पड़तीं। काम करते, चलते फिरते हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और ख़लिफ़ा की दुआइया अशआर गुनगुनाती रहतीं। इस तरह उनके इर्द-गिर्द रहने वाले बच्चों को भी वे शेअर याद हो जाते थे। चंदा जात और जमाती ख़िदमत में बाक़ायदा थीं। जब तक सेहत रही जमाअती प्रोग्रामों में बाक़ायदगी से हिस्सा लेती रहीं। इंतेहाई शुक्रगुज़ार, किफ़ायत शिआर, साबिर और शाकिर थीं। अहमदियत पर फ़ख़र करने वाली महिला थीं। उनकी बेटी नोमाना नुसरत कहती हैं शुक्रगुज़ारी का वस्फ़ बहुत ज़्यादा था। अगर कोई तारीफ़ के रंग में वर्णन करता कि एक ही बेटा था जो वक़्फ़ कर दिया तो आजिज़ी और शुक्रगुज़ारी से कहतीं कि मैं अल्लाह का कैसे शुक्र करूँ कि अल्लाह तआला को एक दिया था और उसकी रहमत ने मुझे कई वापस किए अर्थात अपने पोतों नवासों का वर्णन किया। कहतीं कि सब अहमदी ही वाक़िफ़-ए-ज़िंदगी हैं।

रब्वाह में पैदा हुईं और रब्वाह की तरक़्क़ी पर बहुत ख़ुशी होतीं। बाहिम्मत और सलीक़ा शआर लजना के तौर पर जानी जाती थीं। किफ़ायत-शिआरी के साथ बासलीक़ा ज़िंदगी गुज़ारी और इस तरह शुक्रगुज़ारी करतीं कि गोया सबसे ज़्यादा सहूलतें और सुकून उन्हें ही हासिल है। कभी यह शिकवा नहीं किया कि मुरब्बी के अलाउंस में कमी है। कहती थीं जो कुछ मुझे मिल रहा है उतनी नेअमतें तो कहीं भी नहीं मिलतीं। बेटे को जमाती केसिज़ की वजह से 2017 ई. में हिज्रत करना पड़ी। जैसा कि मैंने कहा नाँ और वजूहात भी थीं और फिर पाकिस्तान जाना मुम्किन न हो सका और वालिदा अपनी कमज़ोर सेहत की वजह से उनसे मुलाक़ात के लिए नहीं जा सकी थीं लेकिन हमेशा सब्र और लगन के साथ वक़्फ़ की ज़िम्मेदारियाँ निभाने की बेटे को तलक़ीन करती रहीं।

उनकी बहू कहती हैं कि बड़े दर्द और शोक से नमाज़ तहज्जुद अदा करतीं। सच्ची ख़्वाबें उनको आया करती थीं। बहुत वाज़ेह और सच्ची ख़्वाबें आया करती थीं जो सफ़ाई से पूरी होती थीं। हम हैरत का शिकार हो जाते थे। फिर बेटे का यही लिखा है कि cases की वजह से हिज्रत करनी पड़ी और ख़ुद बीमारी के बायस जा नहीं सकती थीं लेकिन कभी उदासी का इज़हार नहीं किया। हमेशा साबित क़दमी से वक़्फ़ निभाने की तलक़ीन की। यह कहा करती थीं कि आजकल तो बहुत आसानी है, हर वक़त संपर्क रहता है और कभी अपनी मामता को वक़्फ़ के कामों में रुकावट नहीं बनने दिया। किसी ने उनको कहा कि अब लंबा अरसा हो गया है तो वहां जा के मिलने के लिए ख़लीफ़ा वक़्त को लिखें तो आपका इंतेज़ाम हो जाएगी। उन्होंने कहा कि मैंने बेटा वक़्फ़ किया हुआ है और मैं इस किस्म के मुतालिबात नहीं कर सकती।

अल्लाह तआला मरहूमा से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए दर्जात बुलंद फ़रमाए। परिजनों को सब्र और हौसला अता फ़रमाए। ★ ★ ★

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जीवनी क़ुरआन की प्रतिष्ठा की रोशनी में

(श्रीमान हाफ़िज़ मख़दूम शरीफ़ साहिब, कार्यकारी ऐडीशनल नाज़िर-ए-आला दक्षिण भारत)

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ - بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
وَقَالَ الرَّسُوْلُ يٰرَبِّ اِنَّ قَوْمِي اتَّخَذُوْا هٰذَا الْقُرْاٰنَ مَهْجُوْرًا

(सूरः अल् फ़ुरकान : 31)

"और रसूल कहेगा हे मेरे रब निसन्देह मेरी क़ौम ने इस क़ुरआन को मतरूक छोड़ा है।"

मुस्लमानों पे तब अदबार आया
कि जब तालीम-ए-क़ुरआन को भुलाया

(दुर्रे-समीन)

ख़ाकसार की तक़रीर का शीर्षक है "हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जीवनी क़ुरआन की रोशनी में"

प्रिय श्रोताओं सय्यदना हज़रत-ए-अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अंतिम युग में जिस मसीह मौऊद और महदी माहूद के आने की ख़ुश-ख़बरी दी थी उसके प्रकटन का महत्वपूर्ण उद्देश्य क़ुरआन-ए-करीम के फ़ज़ायल-ओ-कमालात और उसकी प्रतिष्ठा व सच्चाई का प्रकटन था। इसलिए जब सूरः अल् जुमा की आयत وَاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ हुई तो सहाबा ने निवेदन किया : हे रसूलुल्लाह यह कौन लोग होंगे जिनको आप दुबारा आयात पढ़ कर सुनाएँगे, उन्हें पाक करेंगे और किताब और हिक्मत सिखाएँगे। तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब ईमान सुरय्या सितारे पर चला जाएगा तो एक मर्द फ़ारस उसे वापस लाएगा। कुछ रिवायात में इलम या क़ुरआन के मतरूक होने का वर्णन है जिसकी प्रतिष्ठा और फ़ज़ीलत को दुबारा मसीह मौऊद ने दिलों में बिठाना था।

प्रिय श्रोताओं! गुमशुदा ईमान और मतरूक क़ुरआन की प्रतिष्ठा को दुबारा क़ायम करने के लिए अल्लाह तआला ने कादियान की इस गुमनाम बस्ती में हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अवतरित फ़रमाया। आप अलैहिस्सलाम ने ऐलान फ़रमाया कि :

"अल्लाह तआला ने अपने वाअदा के मुवाफ़िक़ कि اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ (अल्-हिजर : 10) क़ुरआन शरीफ़ की प्रतिष्ठा को क़ायम करने के लिए चौधवीं सदी के सिर पर मुझे भेजा।"

(मल्फ़ूज़ात, भाग प्रथम, पृष्ठ : 433)

एक बड़ी मुद्दत से दीं को कुफ़्र था खाता रहा
अब यक़ीं समझो कि आए कुफ़्र को खाने के दिन

प्रिय श्रोताओं ज़माने की बुरी हालत का नक़्शा खींचते हुए आप अलैहिस्सलाम ने

यह ज़माना दरहक़ीक़त एक ऐसा ज़माना है जो बित्तबा तक़ाज़ा कर रहा है जो क़ुरआन शरीफ़ अपने इन समस्त बुतून को ज़ाहिर करे जो उसके अंदर मख़फ़ी चले आते हैं .. अतः यक़ीनन समझो कि वह दरवाज़ा खोला गया है और ख़ुदा तआला ने इरादा कर लिया है कि ता क़ुरआन-ए-करीम के गुप्त अजायबात इस दुनिया के मुतकब्बिर फ़लसफ़ियों पर ज़ाहिर करे। अब आधा मुल्ला दुश्मन-ए--इस्लाम इस इरादा को रोक नहीं सकते। अगर अपनी शरारतों से बाज़ नहीं आएँगे तो हलाक किए जाऐंगे और आकाशिय तमांचा हज़रत-ए-क़ह्हार का ऐसा लगेगा कि मिट्टी में मिल जाऐंगे। इन नादानों को हालत-ए-मौजूदा पर बिल्कुल नज़र नहीं। चाहते हैं कि क़ुरआन-ए-करीम मग़लूब और कमज़ोर और ज़ईफ़ और हक़ीर सा नज़र आए लेकिन अब वे एक जंगी बहादुर की तरह निकलेगा। हाँ वह एक शेर की तरह मैदान में आएगा और दुनिया के समस्त फ़लसफ़ा को खा जाएगा और अपना ग़लबा दिखाएगा और لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ की भविष्यवाणी को पूरी कर देगा और भविष्यवाणी وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِي ارْتَضٰى لَهُمْ को रुहानी तौर से कमाल तक पहुंचाएगा.. अब वह इब्ने मरियम जिसका रुहानी बाप ज़मीन पर सिवाए हक़ीक़ी मु'अल्लम के कोई नहीं जो इस वजह से आदम से भी समानता रखता है। बहुत सा ख़ज़ाना क़ुरआन-ए-करीम का लोगों में तक़सीम करेगा। यहां तक कि लोग क़बूल करते करते थक जाऐंगे और لَا يَقْبَلُهٗ اَحَدٌ का मिस्दाक़ बन जाऐंगे और प्रत्येक तबीयत अपने विचार के मुताबिक़ पुर हो जाएगी

(इज़ाला औहाम, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 3 पृष्ठ 464 से 467)

नूर-ए-फ़ुरक़ाँ है जो सब नूरों से अजला निकला
पाक वह जिससे यह अनवार का दरिया निकला

प्रिय श्रोताओं सय्यदना हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इस इक़तेबास से वाज़िह है कि अंतिम युग में मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के माध्यम से क़ुरआन-ए-करीम की प्रतिष्ठा दो तरह से ज़ाहिर होगी एक لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ बैरूनी तौर पर समस्त अदयान पर क़ुरआन-ए-करीम के हक़ायक़ व दिकायक, उलूम और मारफ़ के खज़ाने ज़ाहिर करके समस्त अदयान पर क़ुरआन-ए-करीम की सदाक़त फ़ज़ीलत और अज़मत क़ायम की जाएगी और इस्लाम को ग़लबा अता किया जाएगा और दूसरी तरफ़ अंदरूनी तौर पर وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ के तहत उम्मत-ए-मुहम्मदिया में अल्लाह तआला और इस्लाम के बुनियादी अक़ायद के मुताल्लिक़ पैदा होने वाले संदेहों को क़ुरआन की तालीमात की दृष्टि से दूर कर के और अक़ायद-ए-फ़ासदा का अंत करके क़ुरआन-ए-करीम की प्रतिष्ठा क़ायम की जाएगी और दीन-ए-इस्लाम को मज़बूती अता की जाएगी।

प्रिय श्रोताओं! क़ुरआन-ए-करीम की प्रतिष्ठा और सदाक़त को समस्त अदयान पर ज़ाहिर करने के लिए अल्लाह तआला ने हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अपनी जनाब से क़ुरआन-ए-करीम का ख़ास इलम और फ़हम अता फ़रमाया और आपकी तर्बीयत फ़रमाई। सय्यदना हज़रत-ए--अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

मैं उस ज़ात की क़सम खा कर कहता हूँ कि जिसके हाथ में मेरी जान है कि इस (ख़ुदा) ने मेरी तरफ़ नज़र-ए-रहमत की और मुझे क़बूल किया और मुझ पर एहसान किया और मेरी तर्बीयत की और उसने अपने हुज़ूर से मुझे फ़हम अता किया जो सलीम था और ऐसी अक़ल मुस्तक़ीम जो बग़ैर कजी के है अता की और कितने ही नूर हैं जो इस ने मेरे दिल में डाले और मुझे क़ुरआन की मार्फ़त अता की गई जो मेरे इलावा किसी और को नहीं दी गई और इस में से मैंने वह पाया और हासिल किया जो मेरा मुख़ालिफ़ कोशिश के बावजूद न पा सका और में इस क़ुरआन के फ़हम में इस आली मर्तबा तक पहुंचा जहां तक अक्सर लोगों की अक़्लें पहुंचने से क़ासिर हैं।

(हुमा मतुल बुशरा, रुहानी ख़ज़ायन,भाग 7 सफ़ा 284)

तथा आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

यह तो सिर्फ अल्लाह तआला का फ़ज़ल है और इस की बेहद इनायत है कि वह चाहता है कि मेरे जैसे आजिज़ इन्सान के हाथ से उसके दीन की इज़्ज़त ज़ाहिर हो। मैंने एक वक़्त उन एतराज़ात और हमलात को शुमार किया था जो इस्लाम पर हमारे मुख़ालेफ़ीन ने किए हैं तो उनकी संख्या मेरे ख़्याल और अंदाज़ा में तीन हज़ार हुई थी और मैं समझता हूँ कि अब तो और भी संख्या बढ़ गई होगी। कोई यह न समझ ले कि इस्लाम का आधार ऐसी कमज़ोर बातों पर है कि इस पर तीन हज़ार एतराज़ वारिद हो सकता हैं। नहीं ऐसा हरगिज़ नहीं। यह एतराज़ात तो कोताह अंदेशों और नादानों की नज़र में एतराज़ हैं। परंतु मैं तुमसे सच्च सच्च कहता हूँ कि मैंने जहां उन एतराज़ात को शुमार किया वहां यह भी ग़ौर किया है कि इन एतराज़ात के अधीन में दरअसल बहुत ही कीमती सदाक़तें मौजूद हैं जो अदम-ए-बसीरत की वजह से मोतरिजाना को दिखाई नहीं दीं और दरहक़ीक़त यह ख़ुदा तआला की हिक्मत है कि जहां नाबीना मोतरिज़ आकर अटका है। वहीं हक़ायक़-ओ-मआरिफ़ का मख़फ़ी ख़ज़ाना रखा है और ख़ुदा तआला ने मुझे अवतरित फ़रमाया है कि मैं इन ख़ज़ायन मदफ़ूना को दुनिया पर ज़ाहिर करूँ और नापाक एतराज़ात का कीचड़ जो इन चमकते मोतियों पर थोपा

गया है। (अर्थात क़ुरआन-ए-करीम पर) उससे उनको पाक साफ़ करूँ। ख़ुदा तआला की ग़ैरत इस वक़्त बड़ी जोश में है कि क़ुरआन शरीफ़ की इज़्ज़त को हर एक ख़बीस दुश्मन के दाग़ एतराज़ से पवित्र और स्वच्छ करे।

(मल्फ़ूज़ात, भाग प्रथम, पृष्ठ : 38)

वे ख़ज़ायहन जो हज़ारों वर्षों से मदफ़ून थे
अब मैं देता हूँ अगर कोई मिले उम्मीदवार

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

ख़ुदा तआला मेरे हाथ से और मेरे ही माध्यम से दीन-ए-इस्लाम की सच्चाई और समस्त मुख़ालेफ़-ए-दीनों का बातिल होना साबित कर देगा मेरे हाथ से आसमानी निशान ज़ाहिर हो रहे है और मेरे क़लम से क़ुरआन के हक़ायक़ और मआरिफ़ चमक रहे हैं।

(तिरयाकुल् कलूब, रुहानी खज़ायन भाग 15 पृष्ठ 265 से 268)

प्रिय श्रोताओं! अल्लाह तआला ने हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहि-स्सलाम को सुलतानुल क़लम और आपकी क़लम को ज़ुल्फ़क़ार अली के ख़िताब से सरफ़राज़ आप अलैहिस्सलाम ने 90 के क़रीब लेखनियाँ लिखीं जो रुहानी ख़ज़ायन के नाम से सैट के रूप में उपलब्ध हैं। आपके तीन सौ विज्ञापन तीन जिल्दों में प्रकाशित किए हैं। मल्फ़ूज़ात की दस जिल्दें हैं, इलम-ओ-मार्फ़त से परिपूर्ण आपके सात सौ मकतूबात पाँच जिल्दों में शाय शूदा हैं। उर्दू मंजूम कलाम, फ़ारसी मंजूम कलाम, अरबी मंजूम कलाम और आपकी वर्णन करदा तफ़सीर उल-क़ुरआन अलग से शाय शूदा है।आप अलैहिस्सलाम ने अपनी इन तसानीफ़ में ,नज़्म विंसर में क़ुरआन-ए-मजीद की बुलद शान और उसके इंतेहाई बुलंद मुक़ाम को दुनिया पर ज़ाहिर फ़रमाया। इसके हुस्न बेमिसाल को आशकार करके एक दुनिया को इसका गरवीदा बना दिया और क़ुरआन-ए--करीम के बे शुमार हक़ायक़-ओ-दक़ायक़ और उलूम-ओ-मआरिफ़ पर से पर्दा उठा कर उसके नूर-ए-हिदायत और एहसान को दुनिया के लिए आम कर दिया और सबसे बढ़कर यह कि आपने दलायल-ओ-बराहीन की दृष्टि से साबित फ़रमाया कि समस्त ज़मीन पर क़ुरआन ही वह आलमगीर शरीयत है जो सही अर्थों में ता क़ियामत एक ज़िंदा शरियत कहलाने की मुस्तहिक़ है जिसकी तालीम हमेशा हिमेश के लिए है जो हर ज़माना और उस की ज़रूरतों पर पूरी उतरने के लिए है।

प्रिय श्रोताओं ख़ाकसार वक़्त की रियाइत से आप अलैहिस्सलाम की मारक-तुल आरा कुतुब में से सिर्फ चंद एक का वर्णन करता है

आग़ाज़-ए-जवानी में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को कशफ़ के माध्यम से ख़बर दी गई कि कुतुबी नाम की एक किताब लिखना आप के लिए मुक़द्दर है और कुतुबी लफ़्ज़ में यह हिक्मत है कि वह अपने मज़बूत दलायल और मुस्तहकम और ग़ैर मुतज़लज़ल बराहीन की वजह से सितारा की तरह उफ़ुक़ पर तलूअ होगी और दुनिया-भर को सच्चे दीन की तरफ़ राहनुमाई करने का माध्यम बनेगी। हुज़ूर अलैहिस्सलाम का यह स्वपन बराहीन-ए-अहमदिया की इशाअत की शक्ल में पूरा हुआ। इस किताब ने एक नए इल्म-ए-कलाम की बुनियाद डाली और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सात दर्जन कुतुब का पेश-ख़ेमा साबित हुई। आप अलैहिस्सलाम ने जादुई लेखनी बराहीन-ए-अहमदिया में समस्त मज़ाहिब-ए-आलम के लीडरों, फ़ल्सफ़ियों को चैलेंज दिया कि क़ुरआन--ए-मजीद की हक़ीक़त और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सदाक़त के सबूत में जो तीन सौ अकाट्य प्रमाण क़ुरआन-ए-मजीद से निकाल कर पेश किए गए हैं अगर कोई ग़ैरमुस्लिम अपने मज़हब के अक़ायद की सदाक़त में अपनी इल्हामी किताब में से साबित करके दिखलावे या अगर संख्या में उनके बराबर पेश न कर सके तो उनमें से आधा या तीसरा हिस्सा या चौथा हिस्सा या पांचवां हिस्सा ही अपनी इल्हामी किताब से निकाल कर दिखावे या अगर दलायल पेश करने से आजिज़ हो तो हमारे दलायल ही को नंबरवार तोड़ कर दिखा दे तो बिना देरी के अपनी दस हज़ार रुपया की जायदाद उसके हवाले कर दी जाएगी। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं। "हक़ीक़त में यह किताब तालिबान-ए-हक़ को एक बशारत और मुनकिराने दीन-ए-इस्लाम पर एक हुज्जत-ए-इलाही है कि जिसका उत्तर क़ियामत तक उनसे मयस्सर नहीं आ सकता और इसी वजह से इसके साथ एक इश्तिहार भी इनामी दस हज़ार रुपया का शामिल किया गया कि ताकि हर एक मुनकिर और दुश्मन पर जो इस्लाम की हक़्क़ीत से इंकारी है समझाने के अंतिम प्रयास को पूर्ण किया हो और अपने बातिल ख़्याल और झूठे एतिक़ाद पर मग़रूर और फ़रेफ़्ता न रहे।"

(बराहीन-ए-अहमदिया, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 1 पृष्ठ 83)

आज़माईश के लिए कोई न आया हर चंद
हर मुख़ालिफ़ को मुक़ाबिल पे बुलाया हमने

प्रिय श्रोताओं! हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के क़ुरआन की प्रतिष्ठा का एक शानदार कारनामा आपकी पसिद्ध लेखनी "इस्लामी उसूल की फ़िलोसफ़ी" है जो आज भी सईद फ़ित्रत और इन्साफ़ पसंदों पर अपना जादू किए हुए है। उसकी प्रतिष्ठा शान के बारे में आप अलैहिस्सलाम तहरीर फ़रमाते हैं :

"जलसा आज़म मज़ाहिब जो लाहौर टाउन हाल में 26- 27- 28 दिसंबर 1896 ई. को होगा इस में इस आजिज़ का एक मज़मून क़ुरआन शरीफ़ के कमालात के बारे में पढ़ा जाएगा। यह वह मज़मून है जो इन्सानी ताक़तों से बरतर और ख़ुदा के निशानों में से एक निशान और ख़ास उसकी सहायता से लिखा गया है इस में क़ुरआन शरीफ़ के वे हक़ायक़ और मआरिफ़ दर्ज हैं जिनसे सूरज की तरह रोशन हो जाएगा कि दर-हक़ीक़त यह ख़ुदा का कलाम और समस्त संसारों के रब की किताब है और जो शख़्स इस मज़मून को शुरू से अंत तक पांचों प्रश्नों के उत्तर में सुनेगा। मैं यक़ीन करता हूँ कि एक नया ईमान उस में पैदा होगा और एक नया नूर उस में चमक उट्ठेगा और ख़ुदा तआला के पाक कलाम की एक संक्षिप्त तफ़सीर उसके हाथ आजाएगी .. मुझे ख़ुदा-ए अलमीन ने इल्हाम से अवगत फ़रमाया है कि यह वह मज़मून है जो सब पर ग़ालिब आएगा और इस में सच्चाई और हिक्मत और मार्फ़त का वह नूर है जो दूसरी कौमें इस शर्त पर कि हाज़िर हों और उसको अव्वल से आख़िर तक सुनें शर्मिंदा हो जाएँगी और हरगिज़ क़ादिर नहीं होंगा कि अपनी किताबों के यह कमाल दिखला सकें क्योंकि ख़ुदा तआला ने इरादा फ़रमाया है कि उस रोज़ उस पाक किताब का जलवा ज़ाहिर हो। मैंने आलिम-ए-कशफ़ में इस के मुताल्लिक़ देखा कि मेरे महल पर ग़ैब से एक हाथ मारा गया। और उसके छूने से इस महल में से एक नूर निकला जो इर्द-गिर्द फैल गया। और मेरे हाथों पर भी इस की रोशनी हुई। तब एक शख़्स जो मेरे पास खड़ा था वह बुलंद आवाज़ से बोला।अल्लाहु-अकबर ख़रबत ख़बीर। اللہ اکبر خربت خیبر

उसकी यह ताबीर है कि इस स्थान से मेरा दिल मुराद है जिस पर अल्लाह का नूर नाज़िल होता है और वह क़ुरआन के नूर का स्रोत हैं और ख़ैबर से मुराद समस्त ख़राब मज़हब हैं जिनमें शिर्क और बातिल की मिलावट है और इन्सान को ख़ुदा की जगह दी गई या ख़ुदा की सिफ़ात को अपने कामिल महल से नीचे गिरा दिया है। अतः मुझे जतलाया गया कि इस मज़मून के ख़ूब फैलने के बाद झूठे मज़हबों का झूठ खुल जाएगा और क़ुरआन की सच्चाई दिन-ब-दिन ज़मीन पर फैलती जाएगी जब तक कि अपना दायरा पूरा करे। फिर मैं इस कशफ़ी हालत से इल्हाम की तरफ़ मुंतक़िल किया गया और मुझे यह इल्हाम हुआ। اِنَّ اللّٰہَ مَعَکَ اِنَّ اللّٰہَ یَقُوْمَ اَیْنَمَا قُمْتَ अर्थात ख़ुदा तेरे साथ है ख़ुदा वहीं खड़ा होता है जहां तू खड़ा हो। यह हिमायत-ए-इलाही के लिए एक इस्तिआरा है।

(तिरयाकुल क़ुलूब, ख़ज़ायन, भाग 15 पृष्ठ 227-226 मजमूआ इश्तिहा-रात, भाग 1 पृष्ठ : 614-615)

प्रिय श्रोताओं! इस्लामी उसूल की फ़िलोसफ़ी का यह मज़मून बिलाशुबा क़ु-रआन-ए-करीम के हक़ायक़-ओ-मआरिफ़, इल्मों इरफ़ान की बे नज़ीर और अछूती तफ़सीर है और हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की क़ुरआन की प्रतिष्ठा के इज़हार की काविशों में एक संग-ए-मील की हैसियत रखती है। हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इलाही सहायता याफताह इस मज़मून ने न सिर्फ मुक़ामी तौर पर बल्कि पूरे भारत और दुनिया भर के बुद्धिमानों में ऐसा ज़ल्ज़ला बरपा किया कि न सिर्फ अज़ीम मुफ़क्केरीन उसकी तारीफ़-ओ-तौसीफ़ में अत्यधिक लिखने लगे बल्कि उस ज़माने के अख़बारात ने भी इस मज़मून की प्रतिष्ठा का इक़रार करते हुए बरमला तौर पर यह प्रकाशित किया कि यह मज़मून सब पर बाला रहा। इसलिए एक अख़बार लिखा :

"मिर्ज़ा साहिब ने समस्त प्रश्नों के उत्तर (जैसा कि उचित था) क़ुरआन शरीफ़

से दिए और समस्त बड़े-बड़े उसूल और इस्लाम के छोटे छोटे भागो को दलायल अक़लिया से और बराहीन-ए-फ़लसफ़ा के साथ मुबर्हन और मुज़य्यन किया।"

(अख़बार चौधवीं सदी रावलपिंडी बमुताबिक़ 1 फ़रवरी 1897 ई. उद्धृत रुहानी ख़ज़ायन, भाग 10 परिचय पुस्तक)

प्रिय श्रोताओं! पादरी इमामुद्दीन ने "ज़ैनुल अकवाल" नाम की किताब लिख कर क़ुरआन-ए-मजीद पर हमले किए हज़रत मसीह मौऊद ने उसके उत्तर में नूरुल हक़ किताब लिखी इस में क़ुरआन-ए-करीम के मआरिफ़-ओ-हक़ायक़ का इन्किशाफ़ फ़रमाया। इस किस्म की एक दो नहीं असंख्य मिसालें आपकी तसानीफ़ में मिलती हैं। आप हर अहल मज़हब को दावत दी कि अपने मज़हब का दावा और दलील अपनी इल्हामी किताब से साबित करें। इसी असल और मयार को आपने मुबाहिसों मुनाज़रोंऔर तहरीर-ओ-तक़रीर में ख़ूब इस्तिमाल फ़र्मा कर क़ुरआन-ए-करीम की प्रतिष्ठा-ओ-शान को दो-बाला किया क्योंकि क़ुरआन-ए-करीम अपनी पाक और मुकम्मल तालीमात की दृष्टि से सब कुतुब समावी में यकता और मुनफरद है।

जमाल-ओ-हुस्न क़ुरआँ नूर जान हर मुसलमाँ है
क़मर है चांद औरों का हमारा चाँद क़ुरआँ है
नज़ीर उसकी नहीं जमती नज़र में फ़िक्र कर देखा
भला क्योंकर न हो यकता कलाम-ए-पाक रहमां है
बिहार-ए-जावेदाँ पैदा है इसकी हर इबारत में
न वह ख़ूबी चमन में है न उससा कोई बुसताँ है

प्रिय श्रोताओं! हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जहां ग़ैर मज़ाहिब के बिलमुक़ाबिल क़ुरआन-ए-करीम की प्रतिष्ठा साबित फ़रमाई वहीं अंदरूनी तौर पर उम्मत मुहम्मदिया में क़ुरआन-ए-करीम की तरफ़ मंसूब होने वाले ग़लत अक़ायद व नज़रियात को दूर फ़र्मा कर क़ुरआन-ए-करीम के तक़द्दुस और प्रतिष्ठा को क़ायम फ़रमाया। मुस्लमानों में नए ग़लत अक़ीदे राह पा गए था कि ख़ुदा तआला की सिफ़त बात करने वाली अब खतम हो गई है। पहले ज़माना में वह बोलता था पर अब बोलता नहीं। दुआ की कबूलियत पर मुस्लमानों का ईमान उठ गया था और वह्यी और इल्हाम के मुनकिर हो गए थे। सर सय्यद अहमद ख़ान जैसे आलिम दुआ की फ़िलोसफ़ी के ही मुनकिर हो गए थे ।

प्रिय श्रोताओं! हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बेअसत का असल मक़सद और आप अलैहिस्सलाम का सब बड़ा मोजिज़ा यही है कि आप जीवित, दुआओ को कबूल करने वाले ख़ुदा को प्रस्तुत किया और आपके वजूद से ज़िंदा ख़ुदा की तजल्ली ज़ाहिर हुई। आप अलैहिस्सलाम ने यही साबित किया कि क़ु-रआन-ए-करीम की सच्ची पैरवी करने से ज़िंदा ख़ुदा मिलता है और ख़ुदा के लज़ीज़ मुकालमा मुख़ातबा का शरफ़ अता होता है। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "क़ुरआन शरीफ़ अपनी रुहानी ख़ासियत और अपनी ज़ाती रोशनी से अपने सच्चे पैरौ को अपनी तरफ़ खींचता है और उसके दिल को मुनव्वर करता है और फिर बड़े-बड़े निशान दिखला कर ख़ुदा से ऐसे ताल्लुक़ात मुस्तहकम बख़श देता है कि वह ऐसी तलवार से भी टूट नहीं सकते जो टुकड़ा टुकड़ा करना चाहती है। वह दिल की आँख खौलता है और गुनाह के गंदे चशमा को बंद करता है और ख़ुदा के लज़ीज़ मुकालमा मुख़ातबा से शरफ़ बख़्शता है और उलूम ग़ैब अता फ़रमाता है और दुआ क़बूल करने पर अपने कलाम से इत्तिला देता है और हर एक जो इस शख़्स से मुक़ाबला करे जो क़ुरआन शरीफ़ का सच्चा अनुयाई है ख़ुदा अपने हैबतनाक निशानों के साथ इस पर ज़ाहिर कर देता है कि वह इस बंदा के साथ है जो उसके कलाम की पैरवी करता है।"

(चशमा-ए-मार्फ़त, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 23 पृष्ठ 305)

तथा फ़रमाया "श्रोताओं को यक़ीन दिलाता हूँ कि वह ख़ुदा जिसके मिलने में इन्सान की निजात और दाइमी ख़ुशहाली है, वह बजुज़ क़ुरआन शरीफ़ की पैरवी के हरगिज़ नहीं मिल सकता और निसन्देह समझो कि जिस तरह यह संभव नहीं कि हम बग़ैर आँखों के देख सकें या बग़ैर कानों के सुन सकें या बग़ैर ज़बान के बोल सकें इसी तरह यह भी मुम्किन नहीं कि बग़ैर क़ुरआन के इस प्यारे महबूब का मुँह देख सकें। मैं जवान था। अब बूढ़ा हुआ परंतु मैंने कोई न पाया जिसने बग़ैर इस पाक चशमा के इस खुली खुली मार्फ़त का पियाला पिया हो।"

(इस्लामी उसूल की फ़िलासफ़ी, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 10 पृष्ठ 442)

क़ुरआँ ख़ुदा नुमा है खुदा का कलाम है
बे उस के मार्फ़त का चमन ना तमाम है
सब जहान छान चुके सारी दुकानें देखें
मए इरफ़ाँ का यही एक ही शीशा निकला
हक़ की तौहीद का मुरझा ही चला था पौधा
नागिहां ग़ैब से यह चशमा-ए-असफ़ी निकला

प्रिय श्रोताओं! मुस्लमानों में क़ुरआन के मुताल्लिक़ एक ग़लत अक़ीदा नासिख़ व मंसूख़ का राह पा गया था। इसलिए अल्लामा मुहम्मद बिन हज़म ने मुस्लमानों के अक़ीदे के बारे में इस प्रकार वर्णन किया है।

क़ुरआन-ए-करीम में मंसूख़ आयात का अर्थ यह है कि एक आयत क़ुरआन में लिखी जा चुकी है परंतु वह काबिल-ए-अमल नहीं है सिर्फ उसकी तिलावत ही करनी चाहिए। इस पर अमल करने का हुक्म नहीं क्योंकि मंसूख़ होने की वजह से इसका हुक्म बातिल हो गया।

(नासिख़ व मंसूख़, पृष्ठ : 146)

हज़रत शाह वली उल्लाह मुहद्दिस देहलवी रज़ियल्लाहु अन्हो ने पाँच आयात, अल्लामा सीयूति ने बीस और कुछ उल्मा ने नासिख़ मंसूख़ आयात की संख्या पाँच सौ तक बताई है। जिससे बाक़ी क़ुरआन का एतबार भी न रहा। हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने निहायत तहदी से इस ग़लत अक़ीदे का खंडन करके क़ुरआन-ए-करीम की प्रतिष्ठा क़ायम फ़रमाई। आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया :

"हम पुख़्ता यक़ीन के साथ इस बात पर ईमान रखते हैं कि क़ुरआन शरीफ़ अंतिम अकाशिय पुस्तक है और एक बिन्दु या नुक़्ता उसकी सीमा और हदूद और अहकाम और आदेशों से ज़्यादा नहीं हो सकता और न कम हो सकता है और अब कोई ऐसी वह्यी या ऐसा इल्हाम अल्लाह की ओर से होना नहीं हो सकता जो अहकाम-ए-फ़ुर्क़ानी की तरमीम या तंसीख़ या किसी एक हुक्म के तबदील या बदलाव कर सकता हो। अगर कोई ऐसा ख़्याल करे तो वह हमारे नज़दीक मोमिनीन की जमाअत से ख़ारिज और अलग और काफ़िर है।"(इज़ाला औहाम, रूहानी ख़ज़ायन, भाग 3 पृष्ठ : 169)

प्रिय श्रोताओं! अहल-ए-हदीस की जानिब से क़ुरआन-ए-करीम पर हदीस की तक़दीम का फ़िक्रा क़ुरआन-ए-करीम के दर्जे में कमी का माध्यम बनता जा रहा था इस लिहाज़ से भी आप अलैहिस्सलाम ने क़ुरआन-ए-करीम की प्रतिष्ठा ज़ाहिर फ़रमाई। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"मुस्लमानों में क़ुरआन की प्रतिष्ठा नहीं रही। शीया हैं वे अइम्मा के कथनों को प्राथमिकता देते हैं और दूसरे फ़रीक़ हदीसों के ज़न्नी सिलसिला को क़ुरआन पर क़ाज़ी बनाते हैं।"

(मल्फ़ूज़ात, भाग 2 पृष्ठ 444)

हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने एक स्वपन का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं :

आज रात मुझे स्वपन में दिखाया गया कि एक दरख़्त बारिदार और निहायत लतीफ़ और ख़ूबसूरत और फलों से लदा हुआ है और कुछ जमात तकल्लुफ़ और ज़ोर से एक बूटी को इस पर चढ़ाना चाहती है जिसकी जड़ नहीं बल्कि चड़हा रखी है वह बोटी अफ़्तेमून की भांति है और जैसे जैसे वह बूटी उस दरख़्त पर चढ़ती है उस के फलों को नुक़्सान पहुंचाती है और इस लतीफ़ दरख़्त में एक कड़वाहट और बदशकली पैदा हो रही है और जिन फलों की इस दरख़्त से तवक़्क़ो की जाती है उनके ज़ाए होने का सख़्त अंदेशा है बल्कि कुछ ज़ाए हो चुके हैं। तब मेरा दिल इस बात को देखकर घबराया और पिघल गया और मैंने एक शख़्स को जो नेक और पाक इन्सान की सूरत पर खड़ा था पूछा कि यह दरख़्त किया है और यह बूटी किया है जिसने ऐसे लतीफ़ दरख़्त को शिकंजा में दबा रखा है तब उसने उत्तर में मुझे यह कहा यह दरख़्त क़ुरआन, ख़ुदा का कलाम है और यह बूटी वह अहादीस और अक़्वाल इत्यादि हैं जो क़ुरआन के मुख़ालिफ़ हैं या मुख़ालिफ़ ठहराई जाती हैं और उनकी कसरत ने इस दरख़्त को दबा लिया है और उसको नुक़्सान पहुंचा रही हैं तब मेरी आँख खुल गई।

(रिव्यू बर मुबाहेसा बटालवी-और-चकडालवी, रुहानी खज़ायन भाग 19 पृष्ठ 212 हाशिया)

बाग़ मुरझाया हुआ था गिर गए थे सब समर
मैं ख़ुदा का फ़ज़ल लाया फिर हुए पैदा समार

प्रिय श्रोताओं! हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद को इल्हाम हुआ था يَا يَحْيٰى خُذِ الْكِتَابَ بِقُوَّةٍ وَالْخَيْرُ كُلُّهٗ فِي الْقُرْاٰنِ और फ़रमाया कि इस में हमको हज़रत यह्या की निसबत दी गई है क्योंकि हज़रत यह्या को यहूद की उन अक़्वाम से मुक़ाबला करना पड़ा था। जो अल्लाह की पुस्तक और तौरेत को छोड़ बैठे थे और हदीसों के बहुत गरवीदा हो रहे थे और हर बात में अहादीस को पेश करते थे। ऐसा ही इस ज़माना में हमारा मुक़ाबला अहल-ए-हदीस के साथ हुआ कि हम क़ुरआन पेश करते और वह हदीस पेश करते हैं।"

(मल्फ़ूज़ात, भाग 2, पृष्ठ 203)

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं "क़ुरआन-ए-करीम प्रत्येक वजह से अहादीस पर मुक़द्दम है और अहादीस की सेहत-ओ-अदम सेहत परखने के लिए वह महक है और मुझको ख़ुदा तआला ने क़ुरआन-ए-करीम की इशाअत के लिए मामूर किया है ता मैं जो ठीक ठीक मंशा क़ुरआन-ए-करीम का है लोगों पर ज़ाहिर करूँ।"

(उल-हक़ मुबाहिसा लुधियाना, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 4 पृष्ठ 30)

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

अब ख़ुदा का इरादा है कि सही मअनी क़ुरआन के ज़ाहिर करे। ख़ुदा ने मुझे इसी लिए मामूर किया है और मैं उसके इलहाम और वही से क़ुरआन शरीफ़ को समझता हूँ।

(मल्फ़ूज़ात, भाग 2, पृष्ठ : 450)

तथा फ़रमाया : मेरी हैसियत एक मामूली मौलवी की हैसियत नहीं है बल्कि मेरी हैसियत सुन्नते अंबिया की सी हैसियत है। मुझे एक समावी आदमी मानो। फिर यह सारे झगड़े और समस्त दुश्मनियाँ जो मुस्लमानों में पड़ी हुई हैं,एक दम में तै हो सकती हैं। जो ख़ुदा की तरफ़ से भेजा है और हक्म बन कर आया है। जो माने क़ुरआन शरीफ़ के वह करेगा वही सही होंगे और जिस हदीस को वह सही क़रार देगा वही हदीस सही होगी।

(मल्फ़ूज़ात, भाग प्रथम, पृष्ठ : 399)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपनी जमाअत को नसीहत करते हुए फ़रमाते हैं :

"तुम्हारे लिए एक ज़रूरी तालीम यह है कि क़ुरआन शरीफ़ को महजूर की तरह न छोड़ दो कि तुम्हारी इसी में ज़िंदगी है जो लोग क़ुरआन को इज़्ज़त देंगे वे आसमान पर इज़्ज़त पाएँगे जो लोग हर एक हदीस और हर एक क़ौल पर क़ुरआन को मुक़द्दम रखेंगे उनको आसमान पर मुक़द्दम रखा जाएगा। समस्त इंसानों के लिए समस्त ज़मीन पर अब कोई किताब नहीं परंतु क़ुरआन।"

(कुश्ती-ए-नूह ,रुहानी ख़ज़ायन, भाग 19 पृष्ठ 15)

नीज़ आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

मैंने क़ुरआन के लफ़्ज़ में ग़ौर किया तब मुझ पर खुला कि इस मुबारक लफ़्ज़ में एक ज़बरदस्त भविष्यवाणी है वह यह है कि यही क़ुरआन अर्थात पढ़ने के लायक़ किताब है और एक ज़माना में तो और भी ज़्यादा यही पढ़ने के लायक़ किताब होगी जबकि और किताबें भी पढ़ने में इसके साथ शरीक की जाएँगी। इस वक़्त इस्लाम की इज़्ज़त बचाने के लिए और झूठों का खंडन करने के लिए यही एक किताब पढ़ने के काबिल होगी और अन्य किताबें क़तअन छोड़ देने के योग्य होंगी और फ़रमाया फुर्क़ान के भी यही अर्थ हैं अर्थात यही एक किताब हक़-ओ--बातिल में फ़र्क़ करने वाली ठहरेगी और कोई हदीस की या और कोई किताब इस हैसियत और पाया की नहीं होगी अब सब किताबें छोड़ दो और रात-दिन किताबुल्लाह ही को पढ़ो।

(मल्फ़ूज़ात, भाग प्रथम, पृष्ठ 386)

प्रिय श्रोताओं! एक अहम मसला जो क़ुरआन-ए-करीम की कसर-ए-शान का मूजिब हो रहा था वह जिहाद का ग़लत नज़रिया था कि ग़ैर मज़ाहिब को जबरदस्ती के माध्यम से इस्लाम में दाख़िल किया जा सकता है और जिहाद से मुराद सिर्फ तलवार से जिहाद है। मुस्लमानों में ख़ूनी महदी का तसव्वुर भी पाया जाताथा आप अलैहिस्सलाम ने क़ुरआन-ए-करीम की दृष्टि से जिहाद की सही तफ़सीर और हक़ीक़त वर्णन फ़रमाई कि असल जिहाद नफ़्स का जिहाद है और क़ुरआन-ए-करीम की तालीमात की इशाअत और उनकी तरवीज को जिहाद--ए-कबीर से ताबीर किया।

इसी तरह आप अलैहिस्सलाम का अक़ीदा हयात-ए-मसीह का क़ुरआन-ए--करीम की 30 आयात से रद्द फ़रमा कर इस्लाम को दुबारा नई ज़िंदगी दी और क़ुरआन की प्रतिष्ठा को दो-बाला किया। आप अलैहिस्सलाम अपने मंजूम कलाम में फ़रमाते हैं :

मारता है उस को फ़ुरक़ाँ सर-ब-सर
इस के मर जाने की देता है ख़बर
वह नहीं बाहर रहा अम्वात से
हो गया साबित यह तीस आयात से

प्रिय श्रोताओं!अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-करीम में ख़ैर-ए-उम्मत को समस्त रुहानी इनामात की बशारत दी है लेकिन कोताह फ़हम मुस्लमानों ने आयत ख़ातमन नबिय्यीन की अनुचित व्याख्या करके हर तरह की नबुव्वत के दरवाज़े को बंद समझ लिया था। आप अलैहिस्सलाम ने आयत ख़ातमन नबि-य्यीन का हक़ीक़ी इर्फ़ान पेश करते हुए फ़रमाया कि ख़ातम के अर्थ मोहर के हैं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को इफ़ाज़ा कमाल के लिए मोहर दी गई है। अब नबुव्वत के इनाम से सिर्फ उसको सरफ़राज़ किया जा सकता है जो मोहर मुहम्मदी अपने साथ रखता हो। दामन मुस्तफ़ा से वाबस्ता हो। आप अलैहिस्स-लाम फ़रमाते हैं :

"क़ुरआन एक हफ़्ता में इन्सान को पाक कर सकता है अगर सूरी या माअनवी आराज़ ना हो क़ुरआन तुमको नबियों की तरह कर सकता है अगर तुम ख़ुद इस से न भागो। सिवाए क़ुरआन किस किताब ने अपनी इबतेदा में ही अपने पढ़ने वालों को यह दुआ सिखलाई और यह उम्मीद दी कि اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ (फ़ाते : 6) अर्थात हमें अपनी इन नेअमतों की राह दिखला जो पहलों को दिखलाई गई। जो नबी और रसूल और सिद्दीक़ और शहीद और सालेह थे अतः अपनी हिम्मतें बुलंद कर लूँ और क़ुरआन की दावत को रद्द मत करो कि वह तुम्हें वह नेअमतें देना चाहता है जो पहलों को दी थीं। '

(कुश्ती-ए-नूह, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 19 पृष्ठ 27)

प्रिय श्रोताओं !अल्लाह तआला ने क़ुरआन की प्रतिष्ठा क़ायम करने के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलामको एक एज़ाज़ी निशान, तफ़सीर-ए-क़ु-रआन का भी अता फ़रमाया। आपकी समस्त कुतुब ही तफ़सीर क़ुरआन का शाहकार हैं जबकि आपने एजाज़ी तौर पर ज़बान क़ुरआन, अरबी में कुछ कुतुब महिज़ तफ़सीर क़ुरआन के लिए तसनीफ़ फ़रमाएं और मुख़ालेफ़ीन को इसके मुक़ाबिल तफ़सीर नवेसी का चैलेंज भी दिया। लेकिन किसी को आपके मुक़ाबला का साहस नहीं हुआ। पीर महर अली शाह गोलड़वी को तफ़सीर नवीसी का चैलेंज देते हुए आप ने एजाज़ुल मसीह के नाम से अरबी में फ़सीह-ओ-बलीग़ सूरः फ़ातिहा की तफ़सीर प्रकाशित फ़रमाई। इस किताब के बारे में आपको इल्हाम हुआ।

مَنْ قَامَ لِلْجَوَابِ وَتَنَمَّرَ
فَسَوْفَ يَرٰى اَنَّهٗ تَنَدَّمَ وَتَذَمَّرَ

अर्थात जो शख़्स ग़ुस्सा से भर कर इस किताब का उत्तर लिखने के लिए तैयार होगा वह अनक़रीब देख लेगा कि वह नादिम हुआ और हसरत के साथ उसका ख़ातमा हुआ। इलहाम-ए-इलाही के ऐन मुताबिक़ पीर महर अली शाह को इस तफ़सीर के बिल्मुक़ाबिल एक लफ़्ज़ भी लिखने की जुरात नहीं हुई आख़ि कार नादिम हो कर हसरत के साथ शिकस्त का मुँह देखना पड़ा। इस किताब की फ़साहत-ओ-बलाग़त का बरमला एतराफ़ अरब देशों के अख़बारात ने भी किया। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं "मैं क़ुरआन शरीफ़ के मोजिज़ा के ज़िल पर अरबी बलाग़त फ़साहत का निशान दिया गया हूँ। कोई नहीं कि जो इस का मुक़ाबला कर सके।

(ज़रूरतुल ईमाम, रुहानी ख़ज़ायन,भाग 13 पृष्ठ 496)

तथा फ़रमाया "मैंने कई मर्तबा कहा है कि मेरे मुख़ालेफ़ भी एक सूरत की तफ़सीर करें और मैं भी तफ़सीर करता हूँ। फिर मुक़ाबला कर लिया जाए, परंतु किसी ने साहस नहीं की। मुहम्मद हुसैन इत्यादि ने तो यह कह दिया कि उनको अरबी का सीग़ा नहीं आता और जब किताबें पेश की गईं तो बूदे और रक़ीक़ उज़्र

कर के टाल दिया कि यह अरबी तो अरबी कचालू है। परंतु यह न हो सका कि एक सफ़ा ही बना कर पेश कर देता और दिखा देता कि अरबी यह है। उद्देश्य यह निशान हैं जो खासतौर पर मेरी सदाक़त के लिए मुझे मिले हैं।"

(मल्फ़ूज़ात, भाग प्रथम, पृष्ठ 183)

प्रिय श्रोताओं ! पिछले दिनों मुफ़स्सिरीन ने क़ुरआन-ए-मजीद में दर्ज नबियों और क़ौमों के वाक़ियात को महिज़ एक क़िस्सा के तौर पर वर्णन करते थे और कुछ आयात की ऐसी तफ़सीर वर्णन करते थे जिससे अंबिया का अपमान होता था। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने क़ुरआन-ए-करीम में मौजूद अंबिया के क़िस्सों को इलमी और फ़लसफ़ा और भविष्यवाणियों का रंग देकर क़ुरआन--ए-करीम की प्रतिष्ठा-ओ-मार्फ़त को ज़ाहिर फ़रमाया और अंबिया की इअस्मत को क़ायम फ़रमाया। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"जिस क़दर क़ुरआन शरीफ़ में क़िस्से हैं वह भी दरहक़ीक़त क़िस्से नहीं बल्कि वह भविष्यवाणियां हैं जो क़िस्सों के रंग में लिखी गई हैं हाँ वह तौरेत में तो ज़रूर सिर्फ क़िस्से पाए जाते हैं परंतु क़ुरआन शरीफ़ ने हर एक क़िस्सा को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए और इस्लाम के लिए एक भविष्यवाणी क़रार दे दिया है और यह क़िस्सों की भविष्यवाणियां भी कमाल सफ़ाई से पूरी हुई हैं।"

(चशमा मार्फ़त, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 23 पृष्ठ : 271)

तथा फ़रमाया : "क़ुरआन शरीफ़ अपनी सारी तालीमों को उलूम की सूरत और फ़लसफ़ा के रंग में पेश करता है अतः याद रखना चाहिए कि क़ुरआन शरीफ़ ने पहली किताबों और नबियों पर एहसान किया है जो उन की तालीमों को जो क़िस्सा के रंग में थीं, इलमी रंग दे दिया है। मैं सच्च सच्च कहता हूँ कि कोई शख़्स उन किस्सों और कहानियों से नजात नहीं पा सकता जब तक वह क़ुरआन शरीफ़ को न पढ़े, इसलिए क़ुरआन शरीफ़ को कसरत से पढ़ो परंतु निरा क़िस्सा समझ कर नहीं बल्कि एक फ़लसफ़ा समझ कर।"

(मल्फ़ूज़ात, भाग 2, पृष्ठ 113)

प्रिय श्रोताओं ! सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने क़ुरआन-ए--करीम में मौजूद एक महान इल्मी मोजिज़ा जो अज़मत-ए-क़ुरआन को दो-बाला करता है ,जस्मानी और रुहानी मुरातिब सत्ता का इन्किशाफ़ करते हुए फ़रमाया :

"जिस क़दर किताबें दुनिया में कुतुब समावी कहलाती हैं या जन हकिमों ने नफ़स और इलाहियात के बारे में तहरीरें की हैं और या जिन लोगों ने सूफ़ियों की तर्ज़ पर मआरिफ़ की बातें लिखी हैं किसी का ज़हन उनमें से इस बात की सबक़त नहीं ले गया कि यह मुक़ाबला जस्मानी और रुहानी वजूद का दिखलाता। अगर कोई शख़्स मेरे इस दावे से मुनकिर हो और इस का गुमान हो कि यह मुक़ाबला रुहानी और जस्मानी किसी और ने भी दिखलाया है। तो इस पर वाजिब है कि इस इल्मी मोजिज़ा की नज़ीर किसी और किताब में से पेश करके दिखलाय और मैंने तो तौरेत और इंजील और हिंदुओं के वेद को भी देखा है। परंतु मैं सच्च सच्च कहता हूँ कि इस किस्म का इलमी मोजिज़ा मैंने बजुज़ क़ुरआन शरीफ़ के किसी किताब में नहीं पाया।

(तफ़सीर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, भाग शुशम)

या इलाही तेरा फ़ुरक़ाँ है कि इक आलम है
जो ज़रूरी था वह सब इस में मुहय्या निकला
किस से इस नूर की मुम्किन हो जहां में तशबी
वह तो हर बात में हर वस्फ़ में यकता निकला

प्रिय श्रोताओं ! आख़िर पर सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्य-दहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के एक इक़्तेबास के साथ अपनी तक़रीर को ख़त्म करता हूँ हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ वर्णन हैं कि :

अतः हर अहमदी की आज ज़िम्मेदारी है कि इस अज़ीम सहीफ़ा इलाही की, इस क़ुरआन-ए-करीम की तिलावत का हक़ अदा करें। अपने आपको भी बचाएं और दुनिया को भी बचाएं जिन लोगों की इस्लाम की तरफ़ तवज्जा पैदा हुई है लेकिन अहमदी नहीं हुए उनमें से बहुतों ने आख़िर हक़ीक़ी इस्लाम और हक़ की तलाश में अहमदियत की गोद में आना है इंशा अल्लाह तआला। इसके लिए हर अहमदी को अपने आपको तैयार करना चाहिए। आज जब इस्लाम की दुश्मन ताक़तें हर किस्म के हथकंडे और ओछे हथकंडे प्रयोग करने पर तुली हुई हैं, बेहूदगी का एक तूफ़ान बरपा किया हुआ है तो हमारा काम पहले से बढ़कर इस इलाही कलाम को पढ़ना है, इस को समझना है, इस पर ग़ौर करना है, फ़िक्र करना, तदब्बुर करना है और अमल करना है और पहले से बढ़कर इस कलाम के उतारने वाले ख़ुदा के आगे झुकना है ताकि उन बरकात के हामिल बने जो इस कलाम में गुप्त हैं। अल्लाह तआला हम सबको उस की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन।"

(ख़ुतबा जुमा 7 मार्च 2008 ई. बहवाला अख़बार बदर 1 मई 2008 ई.)

क़ुरआँ को याद रखना पाक एतेक़ाद रखना फ़िक्र-ए-मुआद रखना पास अपने ज़ाद रखना

अकसीर है प्यारे सिदक़-ओ-सदाद रखना
यह रोज़ कर मुबारक सुबहान नम यरानी

آمین برحمتك یاارحم الرحمین
وآخردعوانا عن الحمد للہ رب العالمین

★ ★ ★

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमअत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-करीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मल्फ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुतबात जुमा और खिताबात, अध्याम्त्पूर्ण संदेश, ख़ुतबा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इलम के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर अमल करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की तालीम-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी तालीम-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इस का सम्मान किया जाए। इस लिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना मुम्किन न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे।

संस्थान

★ ★ ★

जमात अहमदिया का रोशन मुस्तक़बिल हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और ख़ुल्फ़ा-ए-कराम के उपदेशों की रोशनी में

(श्रीमान मुज़फ़्फ़र अहमद नासिर साहिब, नाज़िर इस्लाह व इरशाद मर्कज़िया कादियान)

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ
-اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ- بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِيْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ عَزِيْزٌ

(सूरः अल् मुजादला : 22)

اَلَمْ تَرَ كَيْفَ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ اَصْلُهَا ثَابِتٌ وَّفَرْعُهَا فِي
السَّمَآءِ ○ وَمَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيْثَةٍ كَشَجَرَةٍ خَبِيْثَةِ ِۨاجْتُثَّتْ مِنْ فَوْقِ الْاَرْضِ مَا لَهَا مِنْ
قَرَارٍ

(सूरः इब्राहीम 25 से 26)

अर्थात : अल्लाह ने फ़ैसला कर छोड़ा है कि मैं और मेरे रसूल ग़ालिब आएँगे। अल्लाह निसन्देह ताक़तवर (और) ग़ालिब है

(हे मुख़ातब) क्या तू ने देखा नहीं (कि) अल्लाह ने किस तरह एक कलाम-ए-पाक के विषय में हक़ीक़त-ए-हाल को वर्णन किया है वह एक पाक दरख़्त की तरह होता है जिसकी जड़ (मज़बूती के साथ) क़ायम होती है और उस की (हर एक) शाख़ आसमान की बुलंदी में (पहुंची होती) है वह हर वक़त अपने रब के इज़न से अपना (ताज़ा) फल देता है।

अल्लाह तआला की क़दीम से यह सुन्नत चली आ रही है कि जब कोई अल्लाह का भेजा हुआ दुनिया में अवतरित किया जाता है, अल्लाह तआला का दाइमी वादा उसके नबी और रसूल के हक़ में पूरा होते हुए दुनिया मुशाहिदा करती है कि "मैं और मेरे रसूल ग़ालिब आएंगे।"

उन्नीसवीं सदी के आरंभ में हिन्दुस्तान बल्कि सारी दुनिया में मज़हब-ए-इस्लाम की हालत बहुत ही कसमपुर्सी की थी। मुस्लमान तो थे परंतु केवल नाम के। उनकी ईमानी और अमली कमज़ोरियों को देखकर ईसाइयत और अन्य धर्म हर तरफ़ से इस्लाम पर हमला-आवर हो रहे थे। मुस्लमानों में उत्तर की हिम्मत नहीं थी। इस्लाम का दर्द रखने वालों के दिल बैचेन थे और ख़ुदा तआला के आस्ताना पर सज्दा-रेज़ थे।

इस्लाम की इस कसमपुर्सी की हालत को देखते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहि-स्सलाम का दिल बेक़रार और बेचैन हो उठता है और अपने मौला के हुज़ूर इल्तिजा करते हुए फ़रमाते हैं :

फिर बहारें दीं की दिखला ए मेरे प्यारे क़दीर
कब तलक देखेंगे हम लोगों के बहकाने के दिन

इसी तरह फ़रमाया

देख सकता ही नहीं मैं ज़ोफ़-ए- दीने मुस्तफ़ा
मुझ को कर हे मेरे सुल्ताँ कामयाब-ओ-कामगार!

इसलिए रहमत-ए-इलाही जोश में आई और ख़ुदा तआला ने अपने वादा के अनुसार इस्लाम की हिफ़ाज़त और पुनः जीवित करने की बुनियाद डाली। आप अलै-हिस्सलाम ने ख़ाब में देखा कि लोग एक जीवित करने वाले की तलाश में हैं और एक शख़्स ने आपकी तरफ़ इशारा करते हुए कहा कि هَذَا رَجُلٌ يُحِبُّ رَسُوْلَ اللّٰه कि यही वह शख़्स है जो रसूलुल्लाह से मुहब्बत रखता है। फिर आपको एक कशफ़ में यह नज़ारा भी दिखाया गया कि एक बाग़ लगाया जा रहा है और आपको इसका माली निर्धारित किया गया है : 1882 के आरंभ में अल्लाह तआला ने आपको इस इल्हाम से नवाज़ा कि قُلْ اِنِّيْ اُمِرْتُ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُؤْمِنِيْنَ- यह आपकी मामूरियात और मुज-ज्देदियत का पहला इल्हाम था। इसके बाद अल्लाह-तआला ने आप पर यह भी स्पष्ट फ़रमाया कि उम्मत-ए-मुहम्मदिया में जिस इमाम महदी और मसीह मौऊद के आने का वादा दिया गया था वह वादा आपके वजूद में पूरा हो चुका है और आप ही को रसूले पाक सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की नियाबत में इमाम महदी और मसील-ए--मसीह का मन्सब अता फ़रमाया गया है।

जिस वक़्त हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इज़्न-ए-इलाही से सिलसिला आलिया अहमदिया की बुनियाद रखी उस ज़माना में आरंभ में आप बिल्कुल अकेले थे। कोई दुनियावी सहायक और साथ चलने वाला नहीं था। हाँ ज़मीन-ओ-आसमान का ख़ालिक़, क़ादिर ओ तवाना ख़ुदा, जिसने आप को भेजा था, वो आप साथ था।

फिर उसी अलाम अल्लामुल् ग़यूब ख़ुदा से ख़बर पा कर आप अलैहिस्सलाम ने ऐलान फ़रमाया :

"ख़ुदा तआला ने मुझे बार-बार ख़बर दी है कि वह मुझे बहुत प्रतिष्ठा देगा और मेरी मुहब्बत दिलों में बिठाएगा और मेरे सिलसिला को समस्त ज़मीन में फैलाएगा और सब फ़िर्क़ों पर मेरे फ़िर्क़ा को ग़ालिब करेगा और मेरे फ़िर्क़ा के लोग इस क़दर इल्म और मार्फ़त में कमाल हासिल करेंगे कि अपनी सच्चाई के नूर और अपने दलायल और निशानों के दृष्टि से सब का मुँह-बंद कर देंगे और हर एक क़ौम इस चशमा से पानी पीएगी और यह सिलसिला ज़ोर से बढ़ेगा और फूलेगा यहां तक कि ज़मीन पर मुहीत हो जावेगा ख़ुदा ने मुझे संबोधित कर के फ़रमाया कि मैं तुझे बरकत पर बरकत दूँगा यहां तक कि बादशाह तेरे कपड़ों से बरकत ढूंढें गए।"

(तजल्लियात-ए-इलाही, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 20 पृष्ठ 409)

फिर आपने बड़े जलाल और तहद्दी से इलाही वादों और ख़ुदाई नुसरतों पर कामिल यक़ीन रखते हुए ऐलान फ़रमाया

"देखो वह ज़माना चला आता है बल्कि क़रीब है कि ख़ुदा इस सिलसिला की दुनिया में बड़ी क़बूलियत फैलाएगा और ये सिलसिला मशरिक़ और मग़रिब और शुमाल और जुनूब में फैलेगा और दुनिया में इस्लाम से मुराद यही सिलसिला होगा। ये बातें इन्सान की बातें नहीं यह उस ख़ुदा की वही है जिसके आगे कोई बात अनहोनी नहीं।"

(तोहफ़ा गोल्ड़विया, रुहानी खज़यन भाग 17 पृष्ठ 182)

जमात अहमदिया का शानदार मुस्तक़बिल

तथा आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"मुझे उस ख़ुदाए करीम-ओ-अज़ीज़ की क़सम है जो झूठ का दुश्मन और मुफ़्तरी को नीस्त-ओ-नाबूद करने वाला है कि मैं उस की तरफ़ से हूँ और उस के भेजने से ऐन वक़्त पर आया हूँ और उस के हुक्म से खड़ा हुआ हूँ और वह मेरे हर क़दम में मेरे साथ है और वह मुझे ज़ाए नहीं करेगा और न मेरी जमात को तबाही में डालेगा जब तक वह अपना समस्त काम पूरा न करले जिसका उस ने इरादा फ़रमाया है।"

(अर्बईन हिस्सा दोम, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 17 पृष्ठ 348)

तालिबों तुमको मुबारक हो कि अब नज़दीक हैं
इस मेरे महबूब के चेहरा के दिखलाने के दिन
दीं की नुसरत के लिए इक आसमान पर-शोर है
अब गया वक़्त-ए-ख़िज़ां आए हैं फल लाने के दिन

प्रिय श्रोताओं! अहमदियत का क़ाफ़िला जिसका आरंभ चालीस लोगों से हुआ, आज इसकी संख्या करोड़ों करोड़ तक जा पहुंची है और हर साल लाखों की संख्या में बढ़ रही है। दुनिया का कोई प्रसिद्ध मुल्क नहीं जहां यह वृक्ष अहमदियत न लग चुका हो। पवित्र वृक्ष की तरह उसकी जड़ें समस्त संसार में में ख़ूब मज़बूती से गाड़ी हैं जबकि उस की शाख़ें समस्त संसार में फैल रही हैं। हर क़ौम इस चशमा से पानी पी रही है और रंग-ओ-नसल की तमीज़ से बेनयाज़, अहमदियत का वृक्ष की घन्नी छाओं तले शाना बह शाना ख़िदमत-ए-इस्लाम में हैं।

अल्लाह की सहायता और मदद के निशानों का कोई शुमार नहीं। हक़ तो यह है कि हर नया दिन अहमदियत की तरक़्क़ी का पैग़ाम लेकर तलूअ होता है और अहमदियत के संसार पर सूरज कभी ग़ुरूब नहीं होता। हज़रत मसीह पाक अलैहिस्सलाम ने किस तहद्दी और जलाल के साथ फ़रमाया है ;

"हे समस्त लोगो सुन रखो कि यह उसकी भविष्यवाणी है जिसने ज़मीन-ओ--आसमान बनाया। वह अपनी इस जमात को समस्त मुल्कों में फैला देगा और हुज्जत और बुरहान की दृष्टि से सब पर उनको ग़लबा बख़्शेगा। वे दिन आते हैं बल्कि क़रीब है कि दुनिया में सिर्फ यही एक मज़हब होगा जो इज़्ज़त के साथ याद किया जाएगा। ख़ुदा उस मज़हब और इस सिलसिला में निहायत दर्जा और असीमित बरकत डालेगा और हर एक को जो उसके मादूम करने का फ़िक्र रखता है न मुराद रखेगा और यह ग़लबा हमेशा रहेगा। यहां तक कि क़ियामत आजाएगी .. अभी तीसरी सदी आज के दिन से पूरी नहीं होगी कि ईसा के इंतेज़ार करने वाले क्या मुस्लमान और क्या ईसाई सख़्त नौउम्मीद और बदज़न हो कर इस झूठे अक़ीदा को छोड़ेंगे और दुनिया में एक ही मज़हब होगा और एक ही पेशवा .. मैं तो एक बीज बोने आया हूँ। अतः मेरे हाथ से वह बीज बोया गया और अब वह बढ़ेगा और फूलेगा और कोई नहीं जो उस को रोक सके।"

(तज़किरतुल शहादतेन, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 20 पृष्ठ 66)

ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया का महान वादा

चूँकि अनबया भी इंसान हैं और अपनी तिब्बी उम्र पा कर इस दुनिया से रुख़स्त हो जाते हैं इसलिए उनके मिशन की तकमील के लिए अल्लाह-तआला ख़िलाफ़त का

सिलसिला जारी किया है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि مَا كَانَتْ نُبُوَّةٌ قَطُّ إِلَّا تَبِعَتْهَا خِلَافَةٌ (कंज़ुल उममाल हदीस नंबर 32246) कि कोई भी नबुव्वत ऐसी नहीं गुज़री जिसके बाद ख़िलाफ़त क़ायम न हुई हो। इस जारी सुन्नत के अनुसार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बाद ख़िलाफ़त का सिलसिला शुरू हुआ।

आप अलैहिस्सलाम जमात को ख़ुशख़बरी देते हुए फ़रमाते हैं :

"तुम्हारे लिए दूसरी क़ुदरत का भी देखना ज़रूरी है और इस का आना तुम्हारे लिए बेहतर है क्योंकि वह दायमी है जिसका सिलसिला क़ियामत तक मुनक़ते नहीं होगा। और वह दूसरी क़ुदरत नहीं आ सकती जब तक मैं न जाऊं लेकिन मैं जब जाऊँगा तो फिर ख़ुदा उस दूसरी क़ुदरत को तुम्हारे लिए भेज देगा जो हमेशा तुम्हारे साथ रहेगी जैसा कि ख़ुदा का बराहीन अहमदिया में वादा है और वह वादा मेरी ज़ात की निसबत नहीं है बल्कि तुम्हारी निसबत वादा है जैसा कि ख़ुदा फ़रमाता है कि मैं इस जमात को जो तेरे अधीन हैं क़ियामत तक दूसरों पर ग़लबा दूँगा। अतः ज़रूर है कि तुम पर मेरी जुदाई का दिन आवे ता बाद उसके वह दिन आवे जो दायमी वादा का दिन है। वह हमारा ख़ुदा वादों का सच्चा और वफ़ादार और सादिक़ ख़ुदा है वह सब कुछ तुम्हें दिखाएगा जिसका उसने वादा फ़रमाया है।"

(रिसाला अल् वसीयत, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 20 पृष्ठ : 305)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की वफ़ात के बाद अल्लाह-तआला के फ़ज़ल से क़ुरआन बशारात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणियों के ऐन अनुसार ख़िलाफ़त अहमदिया के महान दौर का आरंभ हुआ जिसके पाँचवे द्योतक सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ आज आलमगीर जमात अहमदिया की क़ियादत फ़र्मा रहे हैं :

ख़िलाफ़त अल्अ मिनहाज-ए-नबुव्वत का ज़माना

प्रिय श्रोताओं! भविष्यवाणियों के अनुसार इस बाबरकत ख़िलाफ़त का ज़माना कम से कम एक हज़ार साल पर मुहीत होगा। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"और फिर सातवाँ हज़ार ख़ुदा और इसके मसीह का है और हर एक ख़ैर-ओ--बरकत और ईमान और सालेह और तक़्वा और तौहीद और ख़ुदा-परस्ती और हर एक किस्म की नेकी और हिदायत का ज़माना है। अब हम सातवें हज़ार के सिर पर हैं। इस के बाद किसी दूसरे मसीह को क़दम रखने की जगह नहीं क्योंकि ज़माने सात ही हैं जो नेकी और बदी में तक़सीम किए गए हैं। इस तक़सीम को समस्त अंबिया ने वर्णन किया है और दुनिया में कोई भविष्यवाणी इस क़ुव्वत और नियमितता की नहीं होगी जैसा कि समस्त नबियों ने आख़िरी मसीह के बारे में की है।'

(लैक्चर लाहौर, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 20 पृष्ठ 186)

नीज़ फ़रमाया : "सूरत अल् असर में दुनिया की तारीख़ मौजूद है जिस पर ख़ुदा तआला ने अपने इल्हाम से मुझको इत्तिला दी है।"

(अल् हकम, भाग 6 पृष्ठ 25 तिथि 17 जुलाई 1902 ई.)

तरकियात की समस्त भविष्यवाणियां ज़माना ख़िलाफ़त से जुड़ी हैं :

ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया के इस अज़ीम दौर में इन समस्त भविष्यवाणियों का पूरा होना मुक़द्दर था जो इस्लाम की तरक़्क़ी और ग़लबा से ताल्लुक़ रखती हैं। जो दुनिया से शिर्क के फ़ना होने और तौहीद के ग़लबा से ताल्लुक़ रखती हैं। जो दुनिया की अमन-ओ-सलामती और बनीनौ इन्सान की ख़ुशहाली से ताल्लुक़ रखती हैं क्योंकि समस्त भविष्यवाणियां इसी ख़िलाफ़त पर आकर ख़त्म हो जाती हैं। यह दुनिया का वह आख़री दौर है जिसके बाद और कोई दौर नहीं। यह वह अंतिम युग है जिसके बाद कोई और ज़माना नहीं । अतः उस ख़िलाफ़त के माध्यम से आरंभ दुनिया की तरह एक-बार फिर आदम की औलाद एक हाथ में जमा हो कर एक ख़ानदान की शक्ल इख़्तेयार करेगी। इस ख़िलाफ़त के माध्यम से इस्लामी ग़ालिब आएगा और समस्त अदयान बातिला मिट जाऐंगे। या बतौर नमूना बाक़ी होंगे।

जमाअत अहमदिया की प्रगति के विषय में ख़ुलफ़ाए किराम की बशारतें इरशाद हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हो

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह प्रथम रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं : "इसलिए इस ज़माना में भी जबकि इस्लाम बहुत कमज़ोर है, ख़ुदा तआला ने अपने एक फ़िरिस्तादे के माध्यम से यह ख़ुशख़बरी पुनः सुनाई है कि उसकी तरफ़ से इस्लाम के वास्ते फ़तह--ओ-नुसरत का वक़्त फिर आ गया है और लोग फ़ौज दर फ़ौज इस्लाम में दाख़िल होंगे और फिर इस्लामियों में वही रूहानियत फूंकी जाएगी। मुबारक हैं वह जो तकब्बुर न करें और ख़ुदा के काम की इज़्ज़त करें ता कि उनके वास्ते भी इज़्ज़त हो।"

(हक़ायकुल फ़ुरकान, भाग 4 पृष्ठ 533)

इरशाद हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं :"निश्चित और यक़ीनी बात है कि सूरज टल सकता है सितारे अपनी जगह छोड़ सकते हैं। ज़मीन अपनी हरकत से रुक सकती है लेकिन मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वस-ल्लम और इस्लाम की फ़तह में अब कोई शख़्स रोक नहीं बन सकता। क़ुरआन की हुकूमत दुबारा क़ायम की जाएगी। फिर दुनिया अपने हाथों के बनाए हुए बुतों या इन्सानों की पूजा को छोड़ कर एक वाहिद की इबादत करने लगेगी और बावजूद इसके कि दुनिया की हालत उस क़ुरआन की तालीम को क़बूल करने के ख़िलाफ़ है इस्लाम की हुकूमत फिर क़ायम कर दी जाएगी इस तरह कि फिर उसकी जड़ों को हिलाना इन्सान के लिए असंभव हो जाएगा।" (दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन, पृष्ठ : 324)

इरशाद हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह फ़रमाते हैं : "एक दिन आएगा कि लोग हैरान होंगे और वे देख लेंगे कि ख़ुदा तआला के क़ायम करदा सिलसिला में कितनी बड़ी ताक़त थी कि बज़ाहिर कमज़ोर नज़र आने वाला माल से वंचित वसायल से वंचित, दुनिया की इज़्ज़तों से महरूम हर तरफ़ से धुत्कारा जाने वाला, ज़लील किया जाने वाला और वह सिलसिला जिसको दुनिया ने अपने पांव के नीचे मसलना चाहा ख़ुदा तआला के फ़ज़ल ने उसे आसमान की बुलंदियों तक पहुंचा है।" (अल्फ़ज़ल 3 दिसंबर 1965 ई.)

फिर आपने दूसरी सदी में इस्लाम के ग़लबा के विषय में फ़रमाया कि "जैसा कि मैंने कई बार पहले भी बताया है मेरे अंदाज़े के अनुसार जमाअत अहमदिया की जो दूसरी सदी है वह ग़लबा इस्लाम की सदी है इस में सारी दुनिया में इस्लाम ग़ालिब आएगा और क्या मुस्लिम और क्या ग़ैर मुस्लिम जमाअत अहमदिया की इन ख़िदमात के क़ायल हो चुके होंगे कि वाक़ई यही जमात अहमदिया इस्लाम की ख़िदमत के लिए क़ायम की गई थी और उसने दुनिया के दिल जीत कर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्ला-हो अलैहि वसल्लम के क़दमों में ला डाले हैं।'

(आरंभिक ख़िताब जलसा सालाना 26 दिसंबर 1978 अज़ अफ़ज़ल 22 फ़रवरी 1979 ई.)

हज़रत ख़लीफ़ातुल मसीह अल् राबे रहमहुल्लाह की बिशारात

हर जगह हर बस्ती, हर गांव में

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का झंडा गाढ़ा जाएगा

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे रहमहुल्लाह तआला फ़रमाते हैं :"वह जो हमें मिटाने की इच्छा रखते हैं, यह उन लोगों की ख़्वाबें हैं जो कभी पूरी नहीं होंगी। वही ख़ाब पूरी होगी जो मेरे हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़ाब थी, जो आपके आशिक़ कामिल हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ख़ाब थी। सारी दुनिया आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का झंडा गाढ़ा जाएगा और दु-श्मन-ए-इस्लाम की सारी ख़्वाबें नाकाम हो जाएँगी, पूरी नहीं होंगी, और न मुराद निकलेंगी और हर जगह हर बस्ती, हर गाँव में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का झंडा गाढ़ा जाएगा। अर्थात वही झंडा जो दर हक़ीक़त हज़रत मुहम्मदमुस्तफ़ा सल्ल-ल्लाहो अलैहि व सल्लम का झंडा है। समस्त इस्लाम के दुश्मनों की हर ख़ाब ना-मुराद हो जाएगी।

(अल्फ़ज़ल 9 जून 1983 ई.)

वक़्त आ रहा है कि बादशाह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

अलैहिस्सलाम के कपड़ों से बरकत ढूंढें

तथा आप रहमहुल्लाह फ़रमाते हैं :

"यह तक़दीर-ए-इलाही है कि अल्लाह ही का इरादा है जिसने फ़ैसला फ़र्मा दिया है कि दुनिया में एक दफ़ा ज़रूर तौहीद की बादशाही होगी और हर झूठा ख़ुदा मिटा दिया जाएगा। अतः इस उद्देश्य के लिए आप उठ खड़े हों और यक़ीन रखें कि अल्लाह तआला अपने फ़ज़ल के साथ आपकी इन कोशिशों को ज़रूर बार-आवर फ़रमाएगा और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का यह इल्हाम भी लाज़िमन पूरा होगा कि "मैं तुझे बरकत पर बरकत दूँगा यहां तक कि बादशाह तेरे कपड़ों से बरकत ढूँडेंगे यह भी 1897 ई. का इल्हाम है। अतः अब वक़्त आ रहा है कि बादशाह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कपड़ों से जो तौहीद के नूर से मुअत्तर थे, उन कपड़ों से बरकत ढूंढें।"

(ख़ुत्बा जुमा 25 जुलाई 1997 अल्फ़ज़ल इंटरनैशनल 12 सितंबर 1997)

आगे का ज़माना हमारे सपुर्द किया जाने वाला है

तथा आप रहमहुल्लाह फ़रमाते हैं :

"हम ऐसे दौर में हैं कि भविष्य का ज़माना हमारे सपुर्द किया जाने वाला हज़रत

मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के विषय में अब समस्त संसार पर जलवा दिखाने वाली है और ख़ुदा ने हम आजिज़ों और निकम्मों को चुन लिया है तो वही ताक़त बख़्शेगा, वही सलाहतें अता करेगा लेकिन वह सलाहियतें अस्मा-ए-बारी तआला पर ग़ौर के नतीजे में हासिल होंगी।

(ख़ुत्बा जुमा 17 मार्च 1995 अल्फ़ज़ल इंटरनैशनल 28 अप्रैल 1995 ई.)

हमारा ईमान है कि जमाअत अहमदिया के माध्यम से दीन
इस्लाम को दुनिया पर ग़ालिब करने की कोशिशें रंग लाएँगी

हुज़ूर रहमहुल्लाह ने मुल्क फिजी की एक मस्जिद का आरंभ करते हुए अपने ख़िताब में फ़रमाया :

"जबकि दरमयानी अरसा में कई दफ़ा हम पर अरसा हयात तंग कर दिया गया। हमारे रास्ते में मुश्किलात के पहाड़ खड़े कर दिए गए। हमें ज़ुलम-ओ-सितम का निशाना बनाया गया और इज़ार सानी में कोई कसर उठा नहीं रखी जाती रही लेकिन बईं-हमा अहमदियत का क़ाफ़िला मुख़ालेफ़त की आंधियों और तूफ़ानों में से ज़िंदा--ओ-सलामत गुज़र कर तरक़्क़ी की नई से नई मंज़िलों से हमकिनार होता रहा। इस लिए यह हमारा यक़ीन और ईमान है कि जमाअत अहमदिया के माध्यम से दीन-ए--इस्लाम को दुनिया पर ग़ालिब करने की कोशिशें रंग लाएँगी और अल्लाह तआला उसके मीठे फल अता फ़रमाएगा।"

(ख़िताब बर अवसर इफ़्तिताह मस्जिद सौदा (फिजी 18 सितंबर 1983 ई., अल्फ़ज़ल 19 अक्तूबर 1983 ई.)

जमाअत अहमदिया को अब दुनिया में
अज़ीम ग़लबे अता होने वाले हैं

एक और अवसर पर आप रहमहुल्लाह अपने ख़ुतबा जुमा में फ़रमाते हैं :

"अतः जमात अहमदिया को चूँकि अब दुनिया में अज़ीम ग़लबे अता होने वाले हैं और जमात अहमदिया के हक़ में पहले के नबियों के वादे पूरे होने के दिन क़रीब आरहे हैं .. इस पहलू से लाज़िम है कि हम अपनी इस्लाह की तरफ़ पहले से बढ़कर मुतवज्जा हों।"

(ख़ुत्बा जुमा 27 जुलाई 1990 ई., अल्फ़ज़ल इंटरनैशनल 23 अक्तूबर 1990 ई.)

अनक़रीब फ़ौज दर फ़ौज अफ़राद
अहमदियत की आग़ोश में आएंगे

आप रहमहुल्लाह ने जलसा सालाना यू.के 1993 ई. के आरंभिक ख़िताब में फ़रमाया :

"आज सारी दुनिया के आसमान से जमाअत अहमदिया पर अफ़ज़ाल नाज़िल हो रहे हैं .. अनक़रीब फ़ौज दर फ़ौज अफ़राद अहमदियत की आग़ोश में आएँगे। इस मज़मून का गहरा ताल्लुक़ बख़शिश से है। अल्लाह के कलाम में जब ऐसी फ़ुतूहात का वर्णन किया गया है तो साथ हुक्म है कि अल्लाह की तस्बीह करो और अल्लाह से बख़शिश माँगो तो जब भी फ़तह का वक़्त आए इस बात को याद रखें। दुनिया-भर से फ़ौजें अपने ताज-ओ-तख़्त आपकी गोद में डालने आएगी । इस अवसर पर फ़तह के नक़्क़ारे नहीं बजाने। ख़ुदा की हमद के नारे लगाने हैं। (ख़ुलासा आरंभिक ख़िताब जलसा सालाना यू.के 30 जुलाई 1993 ई., अल्फ़ज़ल 2 अगस्त 1993 ई.)

दुश्मन की फूंकें
इस रोशन चिराग़ को कभी बुझा नहीं सकेंगी

इसी तरह आप रहमहुल्लाह ने फ़रमाया

"अहमदियत कोई मसीह मौऊद का लगाया हुआ पौधा नहीं, यह ख़ुदा के हाथ का लगाया हुआ पौधा है जिसको अल्लाह ने आपके हाथ से लगवाया है और यह पौधा कभी न काम नहीं हो सकता। यह लाज़िमन बढ़ेगा और लाज़िमन हमेशा तरक़्क़ी करता चला जाएगा और दुश्मन की फूंकें इस रोशन चिराग़ को कभी बुझा नहीं सकेंगी जिसे हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की और क़ुरआन की भविष्यवाणियों के अनुसार इस ज़माने में रोशन किया गया है।"

(ख़ुत्बा जुमा 14 मई 1999 अल्फ़ज़ल इंटरनैशनल 2 जुलाई 1999 ई.)

हज़रत ख़लीफ़ातुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इर्शादात।

कोई नहीं जो इस दौर में अहमदियत की तरक़्क़ी को रोक सके

जलसा यौम-ए-ख़िलाफ़त 27 मई 2008 ई. के अवसर पर अपने ख़िताब में सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

"यह दौर जिसमें ख़िलाफ़त-ए-ख़ामसा के साथ ख़िलाफ़त की नई सदी में हम दाख़िल हो रहे हैं इन शा अल्लाह तआला अहमदियत की तरक़्क़ी और फ़ुतूहात का दौर है। मैं आपको यक़ीन दिलाता हूँ कि अल्लाह तआला की सहायता के ऐसे बाब खुले हैं और खुल रहे हैं कि हर आने वाला दिन जमाअत की फ़ुतूहात के दिन क़रीब दिखा है .. मैं पूर्ण विश्वास से कहता हूँ कि ख़ुदा तआला इस दौर को अपनी बे-इंतिहा सहायता और मदद से नवाज़ता हुआ तरक़्क़ी के मार्गों पर बढ़ाता चला जाएगा। इन शा अल्लाह और कोई नहीं जो इस दौर में अहमदियत की तरक़्क़ी को रोक सके और न ही आइन्दा कभी यह तरक़्क़ी रुकने वाली है। खलिफ़ा का सिलसिला चलता रहेगा और अहमदियत का क़दम आगे से आगे इंशाअल्लाह तआला बढ़ता रहेगा।"

(ख़िताब बर अवसर जलसा यौम-ए-ख़िलाफ़त 27 मई 2008 ई. अल्फ़ज़ल इंटरनैशनल 25 जुलाई 2008 ई.)

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का झंडा पूर्णतः बुलंदी के साथ और पूरी शान-ओ-शौकत के साथ दुनिया में लहराएगा

इसी तरह आप ने फ़रमाया :

"आज दीन को जीवित करने के लिए इस्लाम की खोई हुई शान-ओ-शौकत वापस लाने के लिए, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दिफ़ा में खड़ा होने के लिए, अल्लाह तआला ने जिस अल्लाह के पहलवान को खड़ा किया है इसके पीछे चलने से और उसके दिए हुए बराहीन और दलायल से जो अल्लाह-तआला ने उसे बताए हैं और इस की तालीम पर अमल करने से इस्लाम और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का झंडा पूरी आब-ओ-ताब और पूरी शान-ओ-शौकत के साथ दुनिया में लहराएगा। इन शा अल्लाह । और लहराता चला जाएगा।

(अल्फ़ज़ल इंटरनैशनल 17 मार्च 2006 ई.)

2004 ई. में मग़रिबी अफ़्रीक़ा से वापसी पर लजना ईमाइल्लाह का इस्तक़बालिया तक़रीब से ख़िताब के दौरान आपने फ़रमाया

"इं शा अल्लाह तआला इलाही वादे जो हैं वे ज़रूर पूरे हो कर रहेंगे और एक दिन समस्त दुनिया पर अहमदियत का और इस्लाम का ग़लबा होगा लेकिन ये सब कुछ तभी होगा जब हम ख़िलाफ़त के निज़ाम से जुड़े रहेंगे और ख़िलाफ़त के हर हुक्म पर लब्बैक कहने को अपने ज़ाती कामों पर प्राथमिकता देंगे।

(दौरा-ए-मग़रिबी अफ़्रीक़ा से वापसी पर लजना का इस्तक़बालिया तक़रीब से ख़िताब यक्म मई 2004 अल्फ़ज़ल इंटरनैशनल 30 जुलाई 2004 ई.)

इन शा अल्लाह वह दिन दूर नहीं
जब समस्त मुख़ालेफ़ीन हवा में उड़ जाऐंगे
और मुख़ालेफ़त करने वाले
आपके सामने झुकने पर मजबूर होंगे

जलसा सालाना कादियान 2006 ई. में लंदन से बराह-ए-रास्त ख़िताब में आपने फ़रमाया

"जब अल्लाह की मदद और नुसरत शामिल-ए-हाल हो तो दुश्मन कुछ नहीं बिगाड़ सकता, यह अल्लाह तआला का वाअदा है और अल्लाह अपने वादों के ख़िलाफ़ नहीं किया करता। शहीदों के ख़ून व्यर्थ नहीं जाऐंगे बल्कि ज़रूर रंग लाएँगे। अहमदी का केवल ख़ून ही रंग नहीं लाता बल्कि मैं तो इस यक़ीन पर क़ायम हूँ कि अहमदी को पहुंचने वाली मामूली सी तकलीफ़ को भी अल्लाह तआला बग़ैर नवाज़े नहीं छोड़ता। एक मस्जिद बंद होती है तो अल्लाह तआला दस मसाजिद अता कर देता है, एक जमाअत पर पाबंदी लगाई जाती है तो दस जमाअतें आज़ादी के साथ अपने फ़रायज़ अदा करने वाली मिल जाती हैं। अतः हर तकलीफ़ अल्लाह की रज़ा हासिल करने के लिए बर्दाश्त करें। इन शा अल्लाह वह दिन दूर नहीं जब समस्त मु-ख़ालेफ़ीन हवा में उड़ जाऐंगे और मुख़ालिफ़त करने वाले आपके सामने झुकने पर मजबूर होंगे।"

(इख़तेतामी ख़िताब जल्सा सालाना कादियान 28 दिसंबर 2006 ई., अल्फ़ज़ल इंटरनैशनल 26 जनवरी 2007 ई.)

ख़ुदा के पाक लोगों को ख़ुदा से नुसरत आती है
जब आती है तो फिर आलम को एक दिखाती है
ग़रज़ रुकते नहीं हरगिज़ ख़ुदा के काम बंदों से
भला ख़ालिक़ के आगे ख़लक़ की कुछ पेश जाती है
आख़िरी फ़तह इन शा अल्लाह मसीह मौऊद
अलैहिस्सलाम की जमाअत की है

आप अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

"यह ज़ुलम जो मुख़ालेफ़ीन की तरफ़ से हो रहे हैं ये इमतेहान हैं। सब्र यही है कि साबित-क़दम रहो। यह सख़्तियां और तंगीयाँ तुम पर वारिद की जा रही हैं उनके ख़िलाफ़ किसी भी दुनियावी मदद की बजाय अल्लाह तआला से दुआ माँगो। अल्लाह

तआला और उसके रसूल के हुक्मों पर और जो तालीम इस ज़माने में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने वर्णन फ़रमाई है इस पर अमल करो और बुराईयों से बचोगे। इं शा अल्लाह ,अल्लाह-तआला की मदद आएगी और ज़रूर आएगी और आख़िरी फ़तह इं शा अल्लाह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमात की है। यह अल्लाह तआला का हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से वादा है कि इं शा अल्लाह अहमदियत अर्थात हक़ीक़ी इस्लाम ने ग़लबा पाना है, आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आशिक़ सादिक़ की जमात ने दुनिया पर ग़ालिब आना है।"

(ख़ुत्बा जुमा 23 नवंबर 2007 ई., अल्फ़ज़ल इंटरनैशनल 14 दिसंबर 2007 ई.)

छोटे जज़ीरे हों या बड़े, छोटे मुल्क होंया बड़े

उनकी अक्सरीयत ने इं शा अल्लाह तआला अहमदियत और हक़ीक़ी इस्लाम की आग़ोश में आना ही आना है

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं :

"मारीशस के साथ एक छोटा सा जज़ीरा है, रोड्रिग्स .. वहां जा कर शदीद ख़ाहिश पैदा हुई और दुआ भी हुई कि यह छोटा सा जज़ीरा है, इस पूरे जज़ीरे को जल्द से जल्द अहमदियत की आग़ोश में लाने की कोशिश करनी चाहिए। बहर हाल छोटे जज़ीरे हों या बड़े हों, छोटे मुल्क हों या बड़े मुल्क हों उनकी अक्सरीयत ने इंशाअल्लाह तआला अहमदियत और हक़ीक़ी इस्लाम की आग़ोश में आना ही आना है। अल्लाह तआला हमें अपनी ज़िंदगियों में वे नज़्ज़ारे दिखाए जब हम अहमदियत का ग़लबा देखें। याद रखें कि ख़ालिस हो कर अल्लाह तआला के हुज़ूर की गई दुआएं ही हैं जो रब्वाह के रास्ते भी खुलेंगी और कादियान के रास्ते भी खुलेंगी और मदीना और मक्का के रास्ते भी खुलेंगी। इन शा अल्लाह तआला।" (ख़ुत्बा जुमा 20 जनवरी 2006 ई., अल्फ़ज़ल इंटरनैशनल 10 फ़रवरी 2006 ई.)

आख़िरी फ़तह हमारी है और निसन्देह हमारी ही है
और दुनिया की कोई ताक़त इस फ़तह को रोक नहीं सकती

आप अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं :

"आज भी वही ख़ुदा जमात अहमदिया की हिफ़ाज़त के लिए खड़ा है। आज भी वह अपने बंदे और अपने मसीह की जमाअत की दुआओं को सुनता है। आज भी तुम ऐसे नज़्ज़ारे देखोगे कि जो दुश्मन उन दुआओं की लपेट में आएगा उसके टुकड़े हवा में बिखरते चले जाऐंगे। अगर हुकूमतें खड़ी होंगी तो वे बिखर जाएँगी, अगर तंज़ीमें खड़ी होंगी तो वे पारा पारा हो जाएँगी। यह अल्लाह तआला की सुन्नत है कि कई दफ़ा इलाही जमाअतों को इम्तहानों में से गुज़रना पड़ता है। हर अहमदी का काम है कि दुआएं करते हुए निहायत सब्र-ओ-इस्तक़लाल के साथ इन इम्तहानों से गुज़र जाए। आख़िरी फ़तह हमारी है और निसन्देह हमारी है और दुनिया की कोई ताक़त उस फ़तह को रोक नहीं सकती। यह ख़ुदा की बातें हैं जिनका उसने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से वादा फ़रमाया है यह पूरी होंगी और ज़रूर पूरी होंगी इं शा अल्लाह तआला।"

(ख़ुत्बा जुमा 27 अक्तूबर 2006 ई., अल्फ़ज़ल इंटरनैशनल 17 नवंबर 2006 ई.)

ख़ुदा के पाक बंदे दूसरों पर होते हैं ग़ालिब
मेरी ख़ातिर ख़ुदा से यह अलामत आने वाली है
ख़ुदा ज़ाहिर करेगा एक निशाँ पर रोब व पुर हैबत
दिलों में इस निशाँ से इस्तिक़ामत आने वाली है

प्रिय श्रोताओं! जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपनी जमात की ग़ैरमामूली प्रगति फ़ुतूहात के ताल्लुक़ में महान ख़ुशख़बरी देते हुए फ़रमाया है कि ख़ुदा तआला ने मुझे बार-बार ख़बर दी है कि वह मुझे बहुत प्रतिष्ठा देगा और मेरी मुहब्बत दिलों में बिठाएगा और मेरे सिलसिला को समस्त ज़मीन में फैलाएगा और सब फ़िर्क़ों पर मेरे मेरे फ़िर्क़ा को ग़ालिब करेगा। तथा आप ने फ़रमाया है और यह सिलसिला मशरिक़-ओ-मग़रिब और शुमाल और जुनूब में फैलेगा और दुनिया में इस्लाम से मुराद यही सिलसिला होगा। ये बातें इन्सान की बातें नहीं यह उस ख़ुदा की वह्वी है जिसके आगे कोई बात अन्होनी नहीं।

और ये सारी बशारतें जिनका मर्कज़ी नुक़्ता सहायता-ओ-नुसरत इलाही है बड़ी शान से दिन रात पूरी हो रही हैं और हर साल हम जलसा सालाना UK के अवसर पर हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल् मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ख़िताब में उसकी तफ़सीलात सुनते हैं :

प्रिय श्रोताओं! इन ख़ुशख़बरियों का साल दर साल पूरा होते चले जाना किस तरह जमात अहमदिया मुशाहिदा कर रही है, उसका वर्णन भी यहां ज़रूरी है :

वर्ष 2022-23 ई. में जमात अहमदिया पर नाज़िल होने वाले अल्लाह तआला के बे इंतिहा फ़ज़्लों का एक ख़ाका पेश है

जलसा सालाना यू.के 2023 ई. के अवसर पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

इस अरसा में 1016 मुक़ामात पर पहली बार अहमदियत का पौधा लगा है। इस वर्ष पाकिस्तान के इलावा दुनिया-भर में 320 नई जमातें क़ायम हुई हैं।

इस वर्ष 129 नई मसाजिद तामीर हुई हैं और 56 बनी बनाई मसाजिद अता हुई हैं।

इस वर्ष 124 मिशन हाऊसज़ का इज़ाफ़ा हुआ है।

अब तक जमात अहमदिया की तरफ़ से क़ुरआन-ए-करीम के अनुवाद कुल 76 भाषाओं में प्रकाशित हो चुके हैं।

105 देशों की रिपोर्ट के अनुसार 448 कुतुब-ओ-पम्फ़लेट 47 भाषाओं में प्रकाशित हुए 26 भाषाओं में मुख़्तलिफ़ रसायल-ओ-अख़बारात प्रकाशित हो रहे हैं।

9166 नुमाइशों के माध्यम से 15 लाख 90 हज़ार लोगों तक पैग़ाम-ए-हक़ पहुंचाया गया।

दुनिया के 104 देशों में 620 से ज़ायद रीजनल लाइब्रेरीज़ का क़ियाम हो चुका है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने रिसाला रिव्यू आफ़ रिलीजिंज़ का इजरा फ़रमाया था। पहला अंक 1902 ई. में शाय हुआ । अब इस रिसाला को 121 वर्ष हो चुके हैं। अब यह अंग्रेज़ी, जर्मन और फ़्रैंच ज़बान में शाय हो रहा है। इस वर्ष दो लाख एक हज़ार से ऊपर संख्या में प्रकाशित हुए।

अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से दुनिया के मुख़्तलिफ़ इलाक़ों के लिए एम.टी.ए के आठ चैनल्ज़ चौबीस घंटे के नशरियात पेश कर रहे हैं। इन चैनल्ज़ में इस वक़्त 23 विभिन्न भाषाओं में रवां अनुवाद प्रसारित किए जा रहे हैं। अफ़्रीक़ा के मुख़्तलिफ़ देशों के नैशनल चैनल्ज़ पर ऐम.टी.ए के प्रोग्राम पेश किए जाने का सिलसिला जारी है। ऐम .टी ए के माध्यम से बैअतें भी होती हैं

जमाअत अहमदिया के अपने 25 रेडीयो चैनल्ज़ काम कर रहे हैं । उस के माध्यम से भी बैअत हो रही हैं और अहमदियों में नुमायां तबदीलियां भी हो रही हैं।

इस वर्ष 67 देशों के 2900 अख़बारात-ओ-रसाइल ने 1494 जमाती मज़ामीन और ख़बरें प्रकाशित की हैं।

अफ़्रीका में मज्लिस नुसरत जहां के तहत 13 देशों में 27 हस्पताल और 12 देशों में 616 प्राइमरी-ओ-मिडल स्कूल और 10 देशों में 80 सैकण्डरी स्कूलज़ काम कर रहे हैं।

इमसाल 2,17,168 सईद रूहों को अहमदियत अर्थात हक़ीक़ी इस्लाम में शामिल होने की तौफ़ीक़ मिली। अल्हम्दुलिल्ला

सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं:

"अल्लाह तआला के फ़ज़्लों पर एक सरसरी सी नज़र भी हम डालें तो हमें एक लंबी फ़हरिस्त शुक्रिया वसूल करने के लिए तैयार खड़ी नज़र आती है, या हम से मुतालबा करती है कि हम शुक्रिया अदा करें। कहीं रिपोर्टस सुनकर और पढ़ कर हमें जमात के तहत चलने वाले स्कूलों और हस्पतालों की तरक़्क़ी शुक्रगुज़ारी पर मजबूर करती है। कहीं हमें हस्पतालों से शिफ़ा पाने वाले ग़रीबों के पुर सुकून चेहरे और जमात के लिए दुआइया अलफ़ाज़ शुक्रगुज़ारी की तरफ़ तवज्जा दिलाते हैं ..जब हम कहीं जमाती तरक़्क़ी की रिपोर्ट सुनते हैं तो अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से जमात को अता होने वाले मिशन हाऊसज़ और मसाजिद पर अल्लाह तआला के शुक्रगुज़ार होते हैं। कहीं हम ईमान में तरक़्क़ी के हैरत-अंगेज़ वाक़ियात सुन कर अल्लाह तआला की हमद करते हुए उसके आगे सज्दा-रेज़ होते हैं। कभी हम तकमील-ए-इशाअत दीन के लिए अल्लाह की तरफ़ से मुहय्या करदा निज़ाम और इससे भरपूर फ़ायदा उठाने

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web.www.alislam.org
www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 09 Thursday 14 -21 March 2024 Issue No. 11-12

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

पर अल्लाह तआला का शुक्रगुज़ार होते हैं कि इस ज़माने में उसने जमाअत को कैसी कैसी सहूलतें मुहय्या फ़र्मा दी हैं जिनका तसव्वुर भी आज से बीस तीस साल पहले मुम्किन नहीं था। कभी हम इस बात पर अल्लाह तआला की हमद-ओ-तारीफ़ करते हैं कि अल्लाह तआला हमें हर साल कोई न कोई नया मुल्क अता फ़र्मा रहा है जहां अहमदियत का पौधा लग रहा है और हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इस इल्हाम के पूरा होने को देख रहे हैं और उसके मिस्दाक़ बन रहे कि" कि मैं तेरी तब्लीग़ को ज़मीन के किनारों तक पहुंचाऊंगा' कभी हम लाखों की संख्या में सईद रूहों के अहमदियत क़बूल करने पर सजदा शुक्र बजाला रहे होते हैं।

अतः इस में तो कोई शक नहीं कि आप अलैहिस्सलाम का पैग़ाम दुनिया में पहुंचना है और दुनिया आपको आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आशिक़ सादिक़ और एक बहादुर पहलवान की हैसियत से जानेगी और जान रही है।

ये सब अल्लाह-तआला के हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से किए गए वादों का नतीजा है। अतः हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की प्यारी जमात के लिए बेशुमार ख़ुशख़बरियाँ हैं और इं शा अल्लाह प्रगति और फ़ुतूहात के दरवाज़े हमेशा खुलते चले जाऐंगे। अब हर वे शख़्स जो अपने आपको हज़रत मसीह मौऊद अलैहि-स्सलाम की बैअत में शुमार करता है, उस का फ़र्ज़ है कि इस ईमान को अपने दिलों में बिठा कर इस पर हमेशा क़ायम रहे। यह उन मानने वालों का फ़र्ज़ है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बाद आपके तरीक़ पर चलने वाले निज़ाम ख़िलाफ़त के साथ जुड़ कर इस ईमान के मज़हर बनते हुए उसे दुनिया के कोने कोने में फैलाएं और तौहीद को दुनिया में क़ायम करें। जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि यह अल्लाह तआला की क़दीम से सुन्नत है कि वह दो क़ुदरतें दिखलाता है और हम सब अच्छी तरह जानते हैं कि यह दूसरी क़ुदरत का निज़ाम ख़िलाफ़त है। अतः नि-ज़ाम-ए-ख़िलाफ़त का दीनी तरक़्क़ी के साथ एक अहम ताल्लुक़ है और शरियत-ए--इस्लामिया का यह एक अहम हिस्सा है। देनी तरक़्क़ी बग़ैर ख़िलाफ़त के हो ही नहीं सकती। जमात की वहदत ख़िलाफ़त के बग़ैर क़ायम रह ही नहीं सकती।

अल्लाह तआला हमें हक़ीक़ी शुकरगुज़ार बनाए। हमें पहले से बढ़कर अपने फ़ज़्लों और इनामात का वारिस बनाए और हर आने वाले दिन में हम तरक़्क़ी की नई से नई मनाज़िल तै करते चले जाएँ आमीन।

(पैग़ाम हुज़ूर अनवर, बहवाला अख़बार बदर सालाना नंबर 2022)

कुफ़र की काली-घटा, काफ़ूर होगी एक दिन
अहमदियत ही रहेगी, रब-ए-काबा की क़सम

وآخر دعونا ان الحمد للہ ربّ العالمین

पृष्ठ 2 का शेष

सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सिवाए समस्त अंबिया और ओलिया उनके अधीन होंगे ... क्योंकि ईमाम महदी का अंतरमन हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का अंतरमन होगा।

(शरह फ़सूस अल् हकम मत्बा मुस्तफ़ा अल्बाबी अल् हजली, पृष्ठ 42, 43)

हज़रत शाह वली उल्लाह मुहद्दिस देहलवी रहमहुल्लाह फ़रमाते हैं :

"उम्मते मुहम्मदिया में आने वाले मसीह मौऊद का यह हक़ है कि उस में सय्यदुल मुरसेलीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनवार का प्रदर्शन हो। आम साधारण लोग यह गुमान करते हैं कि जब वह मौऊद दुनिया में आएगा तो उसकी हैसियत केवल एक उम्मती की होगी, ऐसा हरगिज़ नहीं, बल्कि वह तो इस्म-ए-जामा मुहम्मदी की पूरी व्याख्या होगा और उसी का दूसरा नुस्ख़ा होगा। अतः उसके और एक आम उम्मती के मध्य बहुत बड़ा अंतर है।

(अल् ख़ैरुल कसीर अज़ हज़रत शाह वलीउल्ला मुहद्दिस देहलवी पृष्ठ 72, मदीना प्रैस बिजनौर)

समस्त अम्बिया से आप अलैहिस्सलाम का संबंध

हज़रत इमाम बाक़िर अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"जब ईमाम महदी आएगा तो यह ऐलान करेगा कि हे लोगो अगर तुम में से कोई इब्राहीम अलैहिस्सलाम और इस्माईल अलैहिस्सलाम को देखना चाहता है तो सुन ले कि मैं ही इब्राहीम और इस्माईल हूँ। और अगर तुम में से कोई मूसा अलैहिस्सलाम और यशु को देखना चाहता है तो सुन ले कि मैं ही मूसा और यशु हूँ और अगर तुम में से कोई ईसा और शमऊन को देखना चाहता है तो सुन ले कि ईसा और शमऊन मैं ही हूँ। और अगर तुम में से कोई मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमऔर अमीरुल मौमेनीन (अली रज़ियल्लाहु अन्हो) को देखना चाहता है तो सुन ले कि मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और अमीरुल मौमेनीन मैं ही हूँ।

(बहारुल अनवार भाग नंबर 13 पृष्ठ 202)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

आदम से लेकर अख़ीर तक जिस क़दर अंबिया अलैहिस्सलाम ख़ुदा तआला की तरफ़ से दुनिया में आए हैं सब के ख़ास वाक़ियात या विशेष सिफ़ात में से इस विनीत को कुछ हिस्सा दिया गया है और एक भी नबी ऐसा नहीं गुज़रा जिसके ख़वास या वाक़ियात में से इस विनीत को हिस्सा नहीं दिया गया। हर एक नबी की फ़ितरत का नक़्श मेरी फ़ितरत में है।

(बराहीन-ए-अहमदिया भाग 5, पृष्ठ ,134)

इसी मुनासबत से अल्लाह तआला ने आप अलैहिस्सलाम को इल्हाम फ़रमाया جَرِیُ اللّٰہِ فِیْ حُلَلِ الْاَنْبِیَاءِ कि आप अल्लाह तआला के पहलवान है समस्त नबियों के वस्त्र में।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपनी एक फ़ारसी कविता में फ़रमाते हैं :

منم مسیحِ زمان و منم کلیمِ خدا ...*... منم محمدؐ و احمدؐ کہ مجتبیٰ باشد

(ترياق القلوب جلد 15)

आप अलैहिस्सलाम एक उर्दू कविता में फ़रमाते हैं :

मैं कभी आदम कभी मूसा कभी याक़ूब हूँ .. *.. नीज़ इब्राहीम हूँ नसलें हैं मेरी बेशुमार

और आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं ;

इस ज़माना में ख़ुदा ने चाहा कि जिस क़दर नेक और रास्तबाज़ मुक़द्दस नबी गुज़र चुके हैं एक ही शख़्स के वजूद में उनके नमूने ज़ाहिर किए जाएं अतः वह मैं हूँ ।

(बराहीन-ए-अहमदिया हिस्सा पंजुम, पृष्ठ : 135)

अल्लाह तआला हमें सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुक़ाम-ओ-मर्तबा को सही रंग में पहचानने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और हम आप अलैहिस्सलाम के आदेशों और उपदेशों की कामिल इताअत-ओ-फ़रमांबर्दारी करने वाले हों और आप अलैहिस्सलाम के महान मिशन में भरपूर हिस्सा लेकर अल्लाह के हुज़ूर उत्तरदायी हों। आमीन।

(मंसूर अहमद मसरूर)

★ ★ ★

Tahir Ahmad Zaheer
M.Sc. (Chemistry) B.Ed.
DIRECTOR
طالب دعا
Tahir Ahmad Zaheer
Director oxford N.T.T.College
Jaipur (Rajasthan)
TEACHER TRAINING

OXFORD N.T.T. COLLEGE
(Teacher Training)
(A unit of Oxford Group of Education)
Affialiated by A.I.I.C.C.E. New Delhi 110001
0141-2615111- 7357615111
oxfordnttcollege@gmail.com
Add. Fateh Tiba Adarsh Nagar, Jaipur-04
Reg. No. AllCCE-0289/Raj.

اب دیکھتے ہو کیسا رجوع جہاں ہوا — اک مرجع خواص یہی قادیاں ہوا
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE
(ہمارا عزم صاف ستھرا کاروبار) (SINCE 1964)
क़ादियान में घर, फ्लैट्स और बिल्डिंग उचित कीमत पर निर्माण करवाने के लिए सम्पर्क करें,
इसी प्रकार क़ादियान में उचित कीमत पर बने बनाए नए और पुराने घर / फ्लैट्स और ज़मीन
ख़रीदने और Renovation के लिए सम्पर्क करें
(PROP: TAHIR AHMAD ASIF)
contact no. : 87279-41071, 83603-14884, 75298-44681
e mail : hussainconstructionsqadian@gmail.com
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad